www.kangla.in
कङ्ला
साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शोधपरक ई-पत्रिका
वर्ष-04, संयुक्तांक-5-6, जनवरी-जून तथा जुलाई-दिसम्बर 2023
ISSN: 2583-1577

अनुक्रमणिका

संपादकीय: मणिपुर : आत्मान्वेषण की आवश्यकता

: डॉ. ई. विजय लक्ष्मी

मणिपुर में दो समुदायों के बीच भड़की हिंसा को आठवाँ महीना होगया है।सन् 2023 के 3 मई को कुकी बहुल क्षेत्रों में चली रैली के दौरान हिसां भड़की थी। कहा गया कि भीड़ ने मैतै लोगों को भगाया और उनके घरों को जलाना शुरू कर दिया था। प्रतिक्रिया में इम्फाल में रह रहे कुछ कुकी लोगों पर भी आक्रमण हुए। दंगा भड़का और देखते ही देखते यह जंगल में लगी आग की तरह बेकाबू होकर फैलता चला गया। यही दंगा युद्ध जैसा प्रतीत होने लगा और इसने मणिपुर को हर तरह से प्रभावित किया। जब दो देशों के बीच युद्ध होता है, तो दोनों ही पक्षों के लोग अपनी रक्षा और आक्रमण के लिए बंकर बनाते हैं और दोनों देशों के बीच एक बफर जोन भी होता है, यही स्थिति आज मणिपुर की है। भारत का यह छोटा सा राज्य जगह-जगह बने बंकरों से भर गया और बफर जोन बना दिया गया। यह बफर जोन दोनों समुदायों के बीच आयी खाई का परिणाम है और बहुत देर होने से पहले कैसे भी हो पहाड़ी इलाकों और घाटी के बीच की इस दूरी को पाटना बहुत जरूरी है। ऐसा न होने पर भाइचारे और सहअस्तित्व के साथ जीवन यापन संभव न होगा। आज अधिकांश व्यापार ठप्प है। रोज कमाकर खाने वालों की तो हालत और भी बद्तर हो गई है। चीजों की कीमत आसमान छू रही है। अपराध की संख्या बढ़ रही है। समाज-सांस्कृतिक पक्षों के अलावा इस दंगे ने मणिपुर के आर्थिक पक्ष को पूरी तरह ध्वस्त किया है। अभी भी स्थिति यह है कि एक समुदाय के लोग दूसरे समुदाय के क्षेत्रों में प्रवेश करना तो दूर की बात है, उन क्षेत्रों के निकट जाना भी संभव नहीं है । युद्ध में कौन सही है और कौन गलत! किसका फायदा और किसका नुकसान ! मैतै-कुकी ही नहीं वह हर व्यक्ति जो मणिपुर में रह रहा है, प्रभावित है। इस दंगे की चपेट में आए, साठ हजार से भी अधिक लोग इम्फाल के विभिन्न क्षेत्रों में बने राहत शिविरों में शऱण लिए हुए हैं। ये ऐसे शरणार्थी हैं जो अपने ही प्रदेश में अपनी जमीन और अपने घर से वंचित हो गए हैं। इनकी आँखों के सामने ही इनके घरों को नस्तनाबूद कर दिया गया है। ये अपनी जड़ों से उखड़ने का कष्ट सह रहे हैं। इनमें से कुछ लोग सरकार द्वारा निर्मित फेब्रिकेटेड घरों में रहने को विवश हैं। घर की सुख-सुविधाओं से वंचित ये लोग राहत शिविरों में बच्चों के रुदन, लाचार माँओं

और विधवा बहनों की सिसकियों के साथ सहवास कर रहे हैं। बूढ़ी दादी अपने गाँव की ओर मुँह कर नष्ट हो चुके अपने घर की याद में विलाप करती है। जल्द ही इनकी आँखों से निरंतर बह रहे आँसुओं को पोंछने की व्यवस्था करनी है। शरणार्थियों के साथ-साथ हर एक देशवासी को उस दिन का बेसब्री से इंतजार है। कुकी राहत शिविरों की हालात भी कुछ ऐसी ही है।

इस घटना के आठ महीने पूरे हो जाने के बावजूद स्थिति में खास सुधार नहीं आया है। इम्फाल और उसके आस-पास के क्षेत्रों में भले ही ऐसा लगे कि शांति आ गई है, लोग सामान्य जीवन जीने लगे हैं, पर सीमावर्ती इलाकों में आज भी स्थिति सामान्य नहीं हुई है। दुख की बात यह है कि गोलियाँ अब भी चल रही हैं। गोली के शिकार हो रहे लोग अब भी मर रहे हैं। सुरक्षा बलों की निगरानी में खेतों में काम हो रहे हैं,पर इन पर भी आक्रमण हो रहे हैं। आज भी अनिश्चितता और अस्थिरता बरकरार है। ऐसे में पहले की तरह शांति और भाईचारे के साथ सह-अस्तित्व कहाँ तक संभव है? यह एक जटिल प्रश्न है। वर्तमान स्थिति की वास्तविकता देखकर यह असंभव सा प्रतीत होता है। अभी तक युद्ध विराम, प्रेम, सद्भावना और सहअस्तित्व के साथ जीने की बात केवल मैतै की तरफ से ही कही गई है।कुकी समुदाय की ओर से भी ऐसी पहल की जरूरत है। हाल ही में मणिपुर सरकार की ओर से पहले की तरह इम्फाल से चुड़ाचाँदपुर के लिए बस सेवा बहाल की गई, पर मंजिल तक पहुँचने से पहले ही उसे काङपोकपी से वापस लौटा दिया गया।जब तक इस तरह की घटना होती रहेगी लोग सामान्य जीवन नहीं जी पाएंगे।यह समय आत्मान्वेषण का है, समझदारी से काम करने का है। इस माहौल से सबसे ज्यादा क्षति दोनों समुदायों की हुई है। पहले की तरह स्थिति को सामान्य करने के लिए दोनों समुदायों की ओर से सद्भावना आवश्यक है। दोनों समुदायों के नेता, मइरा पाइबी जैसे विभिन्न सामाजिक संगठनों के लोग, मणिपुर युवा वर्ग आदि सभी संगठनों को एकजुट होकर एक स्वर में शांति की स्थापना का ईमानदारी से प्रयास करते जाना है। शांति की बात करनी में पर्यवसित करना चाहिए। मणिपुर की इस जटिल घड़ी में लोगों में सच्चे मन से शांति की चाहत, एक-दूसरे के प्रति प्रेम, विश्वास तथा सदाशयता के साथ क्षमा भावना भी आवश्यक है।अतीत में की गयी गलती स्वीकार कर, दूसरे की गलती माफ कर और अपने समुदायों एवं राष्ट्र के कल्याण के लिए भविष्य के मार्ग में कदम से कदम मिलाकर चलने की संकल्पना करना वर्तमान समय की मांग है । अन्यथा वर्तमान लिखे जा रहे इतिहास पढ़कर आने वाली पीढ़ियाँ सबको सवालों के घेरे में खड़ा करेंगी और तब सुधरने का अवसर भी बीत चुका होगा।

मणिपुर की अकादमिक यात्रा का लेखकीय साक्ष्य

प्रो. यशवंत सिंह
हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय, इंफाल
ई-मेल: dryashwantsingh66@gmail.com
मो.न.: 9612169840

भारतीय वेदांत-दर्शन की चिंतन परम्परा में 'अद्वैतवाद' के प्रणेता आदि शंकराचार्य जी ने भारत देश को एकता के सूत्र में बांधने के उद्देश्य से उसके चार कोनों-पूर्व में जगन्नाथपुरी, पश्चिम में द्वारिकाधीश, उत्तर में बद्रिकाश्रम तथा दक्षिण में रामेश्वरम्, में धार्मिक आस्थापरक चार तीर्थों की स्थापना करके प्रत्येक भारतीय के लिए जीवन में कम-से-कम एक बार इन स्थानों की यात्रा करना अनिवार्य किया। तब से भारतीयों में इन तीर्थस्थानों की यात्रा करने की परम्परा की शुरुआत हुई। इन तीर्थ यात्राओं का मुख्य उद्देश्य पुण्यलाभ के साथ-ही साथ व्यक्ति के जीवन से मुक्ति की कामना भी रही। तीर्थयात्राओं के दौरान व्यक्ति अपनी पारिवारिक-भौगोलिक सीमाओं से मुक्त हुआ, उसका भारत के विभिन्न अंचलों के निवासियों से मिलना-जुलना हुआ, उनकी बोली-भाषा, वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन व जीवन-पद्धति से वह परिचित हुआ। इससे भारत-राष्ट्र की 'अनेकता में एकता' की भावना फलीभूत हुई तथा सांस्कृतिक एकता को संबल प्राप्त होता रहा। राजनीतिक रूप से हम भले-ही अनेक रहे हों लेकिन सांस्कृतिक रूप से हम एक बने रहे।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' स्वभावत: सैलानी व यायावरी प्रवृति के लेखक थे। उन्होंने अपने यूरोपीय यात्रा-संस्मरण 'एक बूँद सहसा उछली'[1] में लिखा है - 'ज्ञान-वृद्धि और अनुभव संचय के लिए देशाटन उपयोगी है ... किन्तु देशाटन कैसे किया जाय इसकी कोई विशेष पद्दति शास्त्रकारों ने नहीं बतायी-तीर्थादन की परम्परा थी लेकिन उसका मुख्य उद्देश्य अनुभव-संचय नहीं बल्कि पुण्य-संचय था और वह भी भवानुभव से मुक्ति के लिए।' घुमक्कड़प्रेमी और गाथाकार राहुल सांकृत्यायन ने

'घुमक्कड़शास्त्र'[2] नामक ग्रंथ का प्रणयन करके इस कमी को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने सम्पूर्ण भारत, तिब्बत, सोवियत रूस, यूरोप, श्रीलंका इत्यादि देशों का भ्रमण करते हुए यात्रा से प्राप्त अनुभवों को इस यात्रा-वृत्तांत में संजोया है, जो घुमक्कड़प्रेमियों के लिए मार्ग-दर्शिका का काम करता है। भारत देश में यात्रा, जो व्यक्ति के जीवन के अंतिम भाग में तीर्थयात्रा के रूप में सम्पन्न होती थी, उसको राहुल जी ने व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन से जोड़ते हुए लिखा -

'सैर कर दुनियाँ की गाफ़िल जिंदगानी फिर कहाँ?

जिंदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ?'

हिंदी-साहित्य की शुरुआत पूर्वोत्तर-भारत के वर्तमान असम-प्रदेश से हुई, जहाँ पर सिद्ध-साधकों ने 'कामाख्याधाम' से प्रचलित तंत्र-मंत्रप्रधान साधना का प्रचार-प्रसार अपने धार्मिक साहित्य के माध्यम से किया। फिर भी पूरे मध्यकालीन हिंदी-साहित्य में पूर्वोत्तर-भारत की उपस्थिति नगण्य रही। असम के भक्तिकालीन महानसंत शंकरदेव जी ने ब्रजावली में बरगीतों की रचना करके इस कमी को दूर करने का प्रयास अवश्य किया। आधुनिककाल में अज्ञेय जी ने सम्भवत: पहलीबार पूर्वोत्तर-भारत को केन्द्र में रखते हुए अनेक कविताएँ, कहानियाँ और यात्रा-वृतांत रचे। उनकी 'पावस प्रात शिलङ्' और 'दूर्वाचल' कविताएँ मेघालय के रमणीय सौंदर्य को उजागर करतीं हैं। अज्ञेय की जयदोल, नीली हंसी, हीली-बोन की बत्तखें, मेजर चौधरी की वापसी' और नगा पर्वत की घटना आदि कहानियाँ पूर्वोत्तर-भारत के समाज को केन्द्र में रखकर रची गयीं हैं। अज्ञेय जी की जीवन-यात्राओं का मुख्य उद्देश्य अनुभव-संचय रहा है। उन्होंने अपने पहले यात्रा-वृतांत - 'अरे यायावर रहेगा याद'[3] में पूर्वोत्तर भारत से सम्बन्धित तीन संस्मरण लिखे हैं। जिनमें से एक असम के सांस्कृतिक केन्द्र 'माझुली-द्वीप' की यात्रा पर है, जिसके प्राकृतिक सौंदर्य पर अज्ञेय का कवि-मन मोहित हो जाता है। साथ ही, वहाँ के निवासियों के रीतिरिवाज, वहाँ की प्रकृति, जंगली जानवर सब मनको आकर्षित करने वाले हैं। लेखक ने असम के निवासियों की मानसिकता और उनके स्वभाव के बारे में लिखा है - 'असमिया लोग खूब हँसते हैं, बाधाओं पर और भी अधिक हँसते हैं। वह तो केवलकाम न करने की एक युक्ति है और काम न करना पड़े तो क्यों न हँसा जाये?'

पूर्वोत्तर-भारत पर केन्द्रित यात्रा-वृतांत अथवा यात्रा-कथा-लेखन की दृष्टि से सांवरमल सांगानेरिया का महत्तपूर्ण स्थान है। पूर्वोत्तर भारत के अंतर्गत असम प्रदेश के गुवाहाटी शहर में तीन अक्टूबर, 1945 ई. को मारवाड़ी परिवार में जन्में सांगानेरिया जी के पूर्वज राजस्थान के सीकर जिले के लक्ष्मणपुर नामक गाँव से व्यापार के उद्‌देश्य से असम आये थे। उन्होंने गुवाहाटी के कामर्स कॉलेज से 'बी. कॉम' तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा से 'कोविद' की उपाधि प्राप्त की। सन् 2012 ई. में जे.जे.टी.विश्वविद्‌यालय द्‌वारा मानद 'डी.लिट्' की उपाधि प्राप्त डॉ. सांगानेरिया हिंदी सहित असमिया, बाँग्ला और अंग्रेजी भाषाओं के भी जानकार हैं। अब तक उनके पाँच यात्रा-वृतांत/कथाएँ - (१) थोड़ी यात्रा थोड़े कागज (1999 ई.), (२) अरूणोदय की धरती पर (2010 ई.), (३) ब्रहमपुत्र के किनारे किनारे (2015 ई.), (४) फेनी के इसपार (2016 ई.) तथा (५) मेघों के देस में (2020 ई.) प्रकाशित हो चुके हैं। उनका पहला यात्रावृतांत - 'थोड़ी यात्रा थोड़े कागज'[4] भारत-यात्रा का वृतांत है, जिसकी शुरूआत गुवाहाटी शहर से होती है। लेखक की मान्यता है कि 'यात्रा केवल भौगोलिक रेखा पर चलना मात्र ही तो नहीं होती बल्कि इसमें इतिहास के पड़ाव भी होते हैं।' यात्रा के दौरान आये इन्हीं ऐतिहासिक पड़ावों को जानना-समझना इनके यात्रा-लेखन का मुख्य उद्देश्य है।'

घुमक्कड़ी लेखक के जीवन में कैसे समाई? इसकी खोजबीन करता लेखक अपने बालपन की स्मृतियों में खो जाता है। स्मृतियों पर छायी धुँध में लेखक को सर्वप्रथम सन् 1950 ई. में असम में आया विनाशकारी भूकम्प याद आता है, जब पाँच-सात दिनों तक धरती रह-रहकर डोलती रही थी। गुवाहाटी के फैंसी बाजार में असम की पारम्परिक शैली में लकड़ी से बने उनके दो-मंजिले घर से ब्रह्मपुत्र नद मुश्किल से पाँच-सात मिनिट की पैदल दूरी पर ही प्रवाहमान है। घरवालों से छुपकर बचपन के हमजोलियों-संग ब्रह्मपुत्र या फिर 'दीघली पोखरी' में नहाने जाना और जल-तरंगों से अठखेलियाँ करना उस समय बहुत ही भला लगता था। प्रकृति के वैभव से इस तरह चुपके-चुपके लेखक का परिचय होने लगा, वह इसकी ओर आकर्षित होता गया। जो आगे चलकर लेखक की घुमक्कड़ी का आधार बनी। 'दीघली पोखरी' के बारे में यहाँ पर एक किंबदंती प्रचलित है कि 'महाभारतकाल में दुर्योधन की बारात की अगवानी के लिए यहाँ के राजा भगदत्त द्‌वारा इसे खुदवाया गया था।' विदित हो कि यहाँ के राजा भगदत्त की कन्या भानुमति का विवाह हस्तिनापुर के युवराज दुर्योधन के साथ हुआ

था। महाभारत के युद्ध में राजा भगदत्त ने अपने जमाता दुर्योधन की तरफ से लड़ते हुए कुरुक्षेत्र में वीरगति प्राप्त की थी।

गुवाहाटी शहर की अधिष्ठात्री देवी 'कामाख्या' हैं, जहाँ पर माता सती का स्त्री-जननांग गिरा था। नीलाचल पर्वत पर स्थित कामाख्या मंदिर तक जाने का प्राचीन पैदल-पथ है। इसे असुर नरकासुर ने एक रात्रि में बनाया था। नरकासुर मातेश्वरी कामाख्या के रूप पर मोहित हो गया था। अत: देवी ने एक रात्रि में मंदिर तक पथ बनाकर पूर्ण करने की शर्त रखी। कुक्कुट द्वारा सूर्य उदय से पूर्व ही बाग देने से नरकासुर का प्रयास अधूरा रह गया। अब यह पथ, सड़क-मार्ग बन जाने से वीरान-सा हो गया है। देवी कामख्या के भैरव उमानंद हैं, जो ब्रह्मपुत्र नद के एक टापू पर विराजमान हैं। पुराणकथा में ऐसा भी वर्णित है कि यहीं पर भगवान महादेव ने अपने तीसरे नेत्र को खोलकर कामदेव को भस्मीभूत किया था। असुर नरकासुर ने अपनी माता 'भूमि' के नाम पर भौमा-वंश स्थापित किया। अत्याचारी नरकासुर का भगवान श्रीकृष्ण ने लोककल्याण हेतु वध करके, उसके बेटे भगदत्त को प्राग्जोतिषपुर (असम का प्राचीन नाम) का राजा बनाया था। पांडव भीम पुत्र घटोत्कच की ससुराल और उनके पुत्र वीर बर्बरीक की ननिहाल प्राग्जोतिषपुर ही थी। यहाँ के दैत्य मुर की वीरागंना पुत्री मौर्वी का पाणिग्रहण भीमपुत्र घटोत्कच से श्रीकृष्ण ने ही करवाया था। इन्हीं दोनों की संतान बर्बरीक 'खाटू के श्याम' नाम से विख्यात हैं, जिनकी कथा 'महाभारत' में वर्णित है। महाभारत युद्ध में राजा भगदत्त की वीरगति के बाद भौमा-वंश के राजाओं ने यहाँ पर उन्नीस पीढ़ियों तक राज किया था।

'अरुणोदय की धरती पर'[5] लेखक का दूसरा यात्रावृतान्त है, जो पूर्वोत्तर भारत के अरुणाचल प्रदेश की यात्रा-कथा को अभिव्यक्त करता है। हिमालय पर्वत के इसी प्रांगण में भारतमूमि पर सूरज की पहली किरण का प्रवेश होता है। यहीं पर प्राचीन समय में विदर्भ और चेदि राज्यों के स्थित होने की मान्यता मिलती है। यह केवल लोकविश्वास नहीं बल्कि इस बात के पुरातात्तिवक अवशेष भी यहाँ प्राचीन भीष्मक नगर में मिलते हैं। श्रीकृष्ण यहीं से रूक्मी और शिशुपाल को हराकर राजकुमारी रुक्मिणी का हरण करके द्वारका ले गये थे। पुराणकथाओं में वर्णित है कि किरात-वंशीय भीष्मक कुण्डिलपुर का राजा था, जिसकी राजधानी भीष्मक नगर थी। भीष्मक के रुक्मी आदि

पाँच पुत्र और एक कन्या रुक्मिणी थी। भीष्मक नगर से दस-बारह किमी. की दूरी पर कुण्डिलनगर जाने के रास्ते पर स्थित ताम्रेश्वरी देवी का मंदिर है; जिसे राजा भीष्मक ने अपनी पुत्री रूक्मिणी की देवी-पूजा के लिए बनवाया था तथा यहीं से श्रीकृष्ण रूक्मिणी का हरण करके ले गये थे। आज भी यहाँ के निवासी इदू मिश्मी अपना सम्बन्ध रूक्मिणी से मानते हैं। रूक्मिणी-हरण के समय भ्राता रूक्मी ने श्रीकृष्ण से युद्ध किया था और पराजित हुआ था। तब श्रीकृष्ण ने रूक्मिणी के कहने पर अपने भावी साले रूक्मी को जीवनदान तो दे दिया किन्तु सजा के रूप में उसके बालकाटकर उसे अध-मुँडा बना दिया। इसी पौराणिक घटना के स्मृति स्वरूप इदू मिश्मी जनजाति के लोग अपने बाल उसी तरीके से काटते हैं। लेखक के अनुसार - 'हाँ, इस प्राचीन परम्परा पर आधुनिकता का रंग जरुर चढ़ा है, जो स्वाभाविक भी है।'

लेखक अपनी यात्रा के दौरान जब परशुरामकुण्ड पहुँचता है तो उसे पता चलता है कि वहाँ पर कोई कुण्ड या सरोवर नहीं बल्कि वह तो लोहित नदी है। जिसमें आगे चलकर किबांग नदी जहाँ पर मिलती है वहाँ इसका ब्रह्मपुत्र नद नाम से रुपांतरण हो जाता है। इसी नाम के कारण ब्रह्मपुत्र को असमिया में लुइत, संस्कृत में लौहित्य और हिंदी में लोहित कहा जाता है। इसी जलधारा में परशुराम के हाथ से चिपका परशु छूटा था। उनकी पितृभक्ति भी बड़ी विकट थी, तभी तो अपने पिता ऋषि जमदग्नि के आदेश पर उन्होंने अपनी माता रेणुका का सिर परशु से काट डाला था। लेकिन मातृ-हत्या के पाप से वह परशु उनके हाथ में चिपक गया था। पुत्र की पितृभक्ति से प्रसन्न होकर पिता ने उनसे वर माँगने को कहा तो परशुराम ने अपनी माता को पुनर्जीवित कर देने की प्रार्थना की। इससे उनकी माता को तो पुनर्जीवन मिल गया, फिर पिता जमदग्नि के निर्देशानुसार ही परशुराम सह्याद्री (कोंकण) से चलकर इस ब्रह्मकुण्ड में आये, जहाँ पर लोहित-जल में स्नान करने पर उनके हाथ से चिपका हुआ परशु छूटा, उन्हें मातृहत्या के दोष से मुक्ति मिली।

लेखक अपने यात्रा-अनुभवों को व्यक्त करते हुए लिखता है - पर्वतों-वनों-नदियों से हरा-भरा, तिब्बत (चीन) की सीमा से लगा हुआ यह प्रदेश मिश्मी, आदी, निशी, आपातानी, तागिन आदि विभिन्न जनजातियों की बहुरंगी संस्कृतियों का संगम है। इनके पारम्परिक पहनावे और त्योहारों पर होने वाले नृत्यों को देखना किसी के लिए भी

कौतुक है। यहाँ के सेला दर्रे, तवांग, मायोदिया की बर्फीली वादियाँ किसी को भी रिझा सकतीं हैं। यहाँ के निवासी प्रारम्भ से प्रकृति-पूजक रहे हैं, जो चाँद, सूरज, धरती, जल को ईश्वर मानकर अपने विधि-विधान से पूजा करते हैं। यहाँ म्यांमार की सीमावर्ती खामति, सिम्फो, फकियाल आदि जनजातियाँ जहाँ हीनयान बौद्ध-धर्म की अनुयायी हैं। वहीं तिब्बत (चीन) की सीमावर्ती मोन्पा, शेरतुकपेन, मेम्बा, मेयोर आदि जनजातियाँ महायानी बौद्ध-धर्म अनुयायी हैं। यहाँ के तवांग स्थित बौद्ध-गोन्पा और उसमें विराजित छब्बीस फुट ऊँची भगवान बुद्ध की स्वर्णजड़ित मूर्ति के दर्शनकर अभिभूत हुए बिना रहा नहीं जाता। यहाँ की मेंगा शिव गुफा और हाल ही में जमीन के नीचे से निकले पच्चीसफुटऊँचे विशाल शिवलिंग को देखकर प्राचीन वैभव का अनुमान लगाया जा सकता है। सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध के समय चीनी सेना तवांग तक आयी थी लेकिन फिर वापस हो गयी थी। फिर भी चीन की गिद्ध दृष्टि इस सीमावर्ती प्रदेश पर हमेशा रहती है, जिसका प्रतिकार यहाँ के निवासी अपनी प्रखर राष्ट्रभक्ति के द्वारा करते हैं।

बहुचर्चित 'ब्रह्मपुत्र के किनारे किनारे'[6] सांवरमल सांगानेरिया का तीसरा यात्रा-वृतांत है। इस यात्रा में लेखक का मनोगत है कि ब्रह्मपुत्र और असम दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं। ब्रह्मपुत्र नद के बिना असम की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती। ब्रह्मपुत्र ने केवल असम का भूगोल ही नहीं रचा बल्कि असम के इतिहास को भी अपनी आँखों के आगे-से गुजरते देखा है। इसकी घाटी में ही कामरूप, हैडम्ब, शोणितपुर, कौण्डिल्य, अहोम आदि कितने-ही राज्य पनपे और बनते-संवरते रहे। ब्रह्मपुत्र के देखते-ही-देखते सुदूर पूर्वी पटकाई दर्रा पारकर ब्रह्मदेश के अहोमों ने इसकी घाटी में प्रवेश करके लगभग छह-सौ वर्षों तक यहाँ शासन किया। ब्रह्मपुत्र घाटी में पनपी सभ्यता ने ही विदेश से आये अहोमों को अपने रंग में रंगकर यहाँ की मिट्टी से संस्कारित किया। इसी के किनारे जन्में लाचित बरफुकन ने मुगल आक्रमणकारियों को मुँहतोड़ जबाब देकर उन्हें असम की सीमा से बाहर खदेड़ा था। इसके किनारों ने वर्मीज आक्रमणकारियों को खदेड़ने के बहाने घुस आये ब्रिटिशों के नृशंस अत्याचार देखे हैं। 15 अगस्त, 1947 ई को देश को मिली स्वतंत्रता के नाम पर अपने शरीर को दो देशों की सीमाओं में बटने का दर्द भी ब्रह्मपुत्र ने सहा है। यही तो है जो देश के इस भूखण्ड के प्रति बरती गई उपेक्षा को विभाजन के समय से देखता आया है।

ब्रह्मपुत्र-घाटी की तासीर ही थी कि श्रीमंत शंकरदेव, माधवदेव, दामोदरदेव जैसे अनेक महान संत यहाँ पर हुए। असम के श्रीमंत शंकरदेव (जन्म 1449 ई.) द्वारा प्रचारित निराकारी पंथ 'भागवती वैष्णव धर्म' के एक मात्र आराध्य 'परम पुरुष भगवान श्रीकृष्ण' हैं। उनके द्वारा चलाया हुआ वैष्णव मत 'एक शरण धर्म' यहाँ की लोकभाषा में 'महापुरुषिया धर्म' के नाम से विख्यात है। उन्होंने असम में नव-वैष्णवोत्थान का नेतृत्तव किया, जिसमें ज्ञान और ध्यान के बदले भक्तिमार्ग को ही एकमात्र साधन-मार्ग बनाया गया। इस मत को माननेवाले एक ऊँचे सुसज्जित आसन पर असमिया श्रीमद् भागवत को देवतुल्य स्थापित कर उसके सामने भागवत-पाठ और सामूहिक रूप से हरि-कीर्तन करते हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि उनके समकालीन पंजाब के गुरु नानकदेव ने भी इन्हीं की तरह मूर्ति-पूजा का निषेध करते हुए निराकार सिखपंथ चलाया था, जिसमें 'गुरु ग्रंथ साहब' को सर्वोपरि आसन मिला हुआ है। विदित हो कि गुरु नानकदेव श्रीमंत शंकरदेव के जन्म से बीस वर्ष बाद सन् 1469 ई. में जन्में थे तथा दोनों महापुरुषों का मिलन असम के 'घुबड़ी' नामक स्थान पर हुआ था। यहाँ पर प्रसिद्ध गुरूद्वारा 'दमदमासाहिब' स्थित है, जहाँ गुरू नानकदेव और गुरु तेगबहादुर स्वयं पधारे थे।

ब्रह्मपुत्र नद के बीचोंबीच स्थित माझुली द्वीप में शंकरदेव जी को माधवदेव जैसे सुयोग्य शिष्य की प्राप्ति हुई, जो पहले कट्टर शाक्त-धर्मी कायस्थ थे। एकबार उन्होंने देवी जी को बकरे की बलि देने की मनौती की और अपने बहनोई गयापाणि को इसकी व्यवस्था करने को कहा। गयापाणि शंकरदेव की शरण लेकर वैष्णव बन गये थे, अत: उन्होंने बलि-प्रथा का विरोध किया। इस पर दोनों में बहस छिड़ गयी, जिसपर दुखी होकर गयापाणि ने कहा - 'तुम मुझसे बढ़-चढ़कर वाद-विवाद करने के बदले शंकरदेव से करो तो तुम्हारी बोलती बंद हो जायेगी।' माधवदेव भी शास्त्र-पुराणों के ज्ञाता थे, वे आवेश में आकर शंकरदेव से बहस करने माझुली चल पड़े। लेकिन शंकरदेव के समक्ष पहुँचकर उनकी सौम्य-मूर्ति देखकर वे अभिभूत हो गये और उन्हें प्रणाम किया। दोनों में काफी देर तक शास्त्रार्थ चला, अन्ततः गुरु को अपने भावी शिष्य की प्राप्ति हो गयी।

श्रीमंत शंकरदेव लोकधर्मी धर्मगुरु होने के साथ ही, बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा के धनी भी थे। उन्होंने ब्रजभाषा और असमिया के साथ मैथिली का समावेश करते हुए

'ब्रजावली' को प्रचलित किया। ब्रजावली में रचे हुए उनके बहुत-से पद 'बरगीत' के नाम से प्रसिद्ध हुए, जिसमें उनके सुयोग्य शिष्य माधवदेव रचित गीतों का भी समावेश है। उन्होंने 'अंकीया नाटकर गीत' तथा 'भटिमा' (भाटों-चारणों द्वारा गाये जाने वाले गीत) भी लिखे। असम में 'अंकीया' नाट्य विधा को प्रचलित किया तथा इसके लिए पत्नी प्रसाद, रुक्मिणी हरण, कालियदमन, केलि गोपाल, पारिजात हरण, रामविजय आदि छह एकसत्रीय नाटकों की रचना ब्रजावली में की। उनके द्वारा रचित तीन प्रबंधकाव्य- हरिश्चंद्र उपाख्यान, रुक्मिणी हरण और उरेषा (उड़ीसा) प्राप्त होते हैं तथा समूह गीतकाव्य विधा के अंतर्गत 'कीर्तन घोषा' नामक सर्वश्रेष्ठ कृति को उन्होंने सृजित किया। गरुड़ पुराण पर आधारित तत्त्व-दर्शन सम्बन्धी काव्य - 'भक्ति प्रदीप' तथा श्रीमद्भागवत पुराण के संक्षिप्त-सार-रूप को, एक दिन में लिखकर 'गुणमाला' के रूप में प्रस्तुत करना भी उनके कृतित्व में शुमार है।

ब्रह्मपुत्र के किनारों पर बसंत का आगमन 'बिहू गीतों' के साथ होता है। यहाँ पर निवास करने वाली बोड़ो, खासी, जयंतिया, गारो आदि जनजातियाँ अपनी-अपनी रंग-बिरंगी पोशाकों अपनी मान्यताओं, अपने रीति रिवाजों, आस्थाओं, अपनी बोलि-भाषाओं और लोकनृत्यों से इस घाटी को अनुगुंजित करती रहती हैं। इस अवसर पर लेखक भावविभोर होकर मानो कह उठता है - 'ऋतुराज बसंत का लावण्य असमवासियों के चेहरों पर मानों चुहचुहा रहा है। नवपल्लवों की हरीतिमा गहरा गयी है। असमिया-बांग्ला नूतनवर्ष प्रारम्भ होने में एक दिन-ही रह गया है। ... इसके साथ ही मेरा मन-भी हरहराया कि कितने ही वर्षों बाद मुझे रंङाली बिहू (रंगाली बिहू) पर असम में रहने का अवसर मिला है। इस समय प्रकृतिने नूतन परिधान धारण किया है तो फिर असमिया लोग बिनानवीन कपड़े पहने कैसे रह सकते हैं? यहाँ की ग्रामीण स्त्रियाँ घर के करघों पर महीने-भर पहले से ही बिहू पर बिहूवान के रूप में उपहार देने के लिए फुलाम गोमोछा (फूलदार गमछा), मेखला चादर आदि वस्त्र बुनने लगती हैं। बिहू पर आपसी आदान-प्रदान करने के वस्त्रों को बिहूवान कहा जाता है, जिसमें अधिकतर फुलाम गोमोछा ही दिये जाते हैं। सफेद सूत के गमछों पर लाल धागे से कलात्मक रूप में फूल तथा चौड़ी पाड़ (बार्डर) बुनी जाती है। ये गमछे असमिया अस्मिता के प्रतीक हैं, जिन्हें भेंट स्वरूप अर्पित करके किसी प्रिय या आदरणीय अतिथि का सत्कार भी किया जाता है। पर्व-त्योहारों पर फुलाम गोमोछा का उत्तरीय गले में डालने का प्रचलन है। साथ ही,

देव-देवियों के सिंहासन को सजाने के गमछों पर भगवान के नाम और चित्र भी बुने जाते हैं।

बिहू-उत्सव में असम के आदिम निवासी बोड़ो-कछारियों के नीति-नियमों के अनुसार-वनाच्छादित खुले स्थान पर आबाल-बृद्ध, युवक-युवतियों का नर्तन होता है। गाँवों की अलग-अलग बिहू-टोलियाँ होती हैं, जिनमें खासी, जयन्तिया, चिम्फो, देउरी, मणिपुरी, लुशाई, भूटिया, अबोर, कुकी, नगा, मराण, त्रिपुरी, मिरि (मिशिंग), लालुंग, कार्बी, डफला, नरा, टाई, बोड़ो, कछारी, हाजोंग राभा आदि अविभाजित असम की सभी पर्वतीय एवं मैदानी जनजातियाँ अपने-अपने विशिष्ट लोकनृत्यों, लोकवाद्यों और लोकगीतों के साथ ब्रह्मपुत्र की गाटी के मैदानी इलाकों में होने वाले बिहू-कार्यक्रमों में सम्मिलित होतीं हैं। रंगाली-बिहू को यदि रंगों का त्योहार कहें तो कोई अतिसयोक्ति न होगी। होली में लगे रंगों को तो हम साबुन-पानी से धोकर उतारते हैं, किन्तु बिहू के रंग तो शाश्वत हैं। असमिया नारियों के तनपर सजे हुए रंग-बिरंगे परिधानों को देखकर तो यही लगता है कि इन्होंने मूँगा, लाल, मोरपंखी, धवल, गुलाबी, नीला, हरा, हल्दिया अदि भाँति-भाँति के रंगों को ओढ़ रखा है। इस अवसर पर गाँवों-शहरों में बच्चों तथा किशोर-किशोरियों की टोलियाँ अपने कद के अनुरूप धोती और मेखला पहने ढोल और बाँस का टोका बजाते हुए घर-घर जाकर नाचते-गाते हैं। गृहस्थजन और दुकानदार आदि रूपयों-पैसों के रूप में इन्हें बिहू की त्योहारी देते हैं।

सात-दिनोंतक मनाया जानेवाला यह बिहू-उत्सव अपने-आपमें अनेक विशेषताएँ लिए हुए हैं। आदिमकाल से मानव का सम्बंध कृषि-कार्यों से रहा है, उसका आनंद-विषाद भी इन्हीं-से जुड़ा है। हल-बैल के बिना कृषि सम्भव नहीं थी, इससे यहाँ पर एक कहावत प्रचलित हुई - 'जार नाई गोरू सि सबातो के खोरू' अर्थात् जिसके पास गोधन नहीं वह सबसे क्षुद्र प्राणी है। इसीलिए बिहू-उत्सव का प्रारम्भ गोरू-बिहू से होता है। असमिया भाषा में गाय-बैल को गोरू कहा जाता है। चैत्र-संक्रान्ति के प्रभाव काल में कृषि की मूलाधार गायों को समीप के नदी-तालाब में ले-जाकर पिसी हुई उरद, हल्दी और तेल आदि से मलकर नहलाया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। केले के पत्ते पर उनको विविध खाद्यान्न खिलाये जाते हैं और उनके लिए निरोगी रहने की कामना की जाती है। बिहू के अंतिम साँतवें दिन 'कौड़ी-खेलना' का प्रचलन है जिसका

सम्बंध प्रजनन-शक्ति से जोड़ा जाता है। इस खेल को साधारणत: बूढ़े-बूढ़ियाँ खेलते हैं। इसी दिन कहीं हरिकीर्तन तो कहीं मैथेली-मेला लगता है, जिसका सम्बंध प्राचीनकाल में होनेवाली इंद्र-पूजा से जोड़ते हैं। इस तरह गोरू-बिहू, गोसाई-बिहू आदि नामों से सात-दिन-तक बिहू-उत्सव मनाया जाता है।

ब्रह्मपुत्र नद असम प्रदेश के लिए जहाँ वरदान है, तो वहीं उसके कुपित हो जाने पर बाढ़-सैलाब के रूप में उसका विकराल तांड़व भी देखने को मिलता है, जो असम के निवासियों का सर्वस्य हरण कर लेता है। इस नद के उत्तरीय पर माझुली, उमानंद जैसे द्वीपों के संग अनेक चापरियाँ भी बेल-बूटियों की तरह टंकी हैं। इसके दलदली किनारे पर स्थित कांजीरंगा राष्ट्रीय अभयारण्य में एकसींगी गैड़ों ने अपने रमण-स्थल बना रखे हैं, जो विविध वन्यजीवों के साथ पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। यहाँ के बागानों में चाय की पत्ती खूब उपजती है, जिसके लिए शिवसागर व डिब्रूगढ़ के चाय-बागान देश-विदेश में विख्यात हैं। कहते है कि यहाँ पर निवास करने वाली सिंग्फों जनजाति पहले बीमारी को दूर करने के लिए इन पत्तियों को उबालकर पीती थी। बाद में लोकनायक मनीराम दीवान ने इन पत्तियों का परिचय अंग्रेजों को करवाया, जिससे यहाँ पर चाय का उत्पादन शुरू हुआ। अन्तत: ब्रह्मपुत्र की घाटी तो ऐसी शस्य-श्यामला है कि जो भी यहाँ आता है, वह यहीं का होकर रह जाता है।

'फेनी के इस पार'[7] लेखक का चौथा यात्रा-वृतांत है जो पूर्वोत्तर भारत के त्रिपुरा-प्रदेश की यात्रा-कथा है। त्रिपुरा भारत के भौगोलिक मानचित्र पर एक बिन्दु जैसा, बांग्लादेश के अंदर घुसा-हुआ दिखायी देता है। यह प्रदेश अपने भू-भाग का 84 प्रतिशत बांग्लादेश से घिरा हुआ है, शेष 16 प्रतिशत भू-भाग की सीमा भारत से जुड़ी हुई है। देश विभाजन से पहले यह प्रदेश रेलमार्ग से असम के गुवाहाटी, तिनसुकिया, डिब्रूगढ़ आदि और बंगाल के चटगाँव, ढाका, कोलकाता आदि शहरों से जुड़ा हुआ था। कसबा, अखौरा, फेनी आदि त्रिपुरा के निकटवर्ती रेलवे-स्टेशन हुआ करते थे। लेकिन देशविभाजन के बाद त्रिपुरा का यह रेलपथ और वे सारे रेलवे-स्टेशन पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में चले गये। वर्तमान में इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि असम के गुवाहाटी शहर से भी यह बहुत दूर लगता है और यहाँ तक पहुचना बहुत-ही श्रमसाध्य या फिर वायुमार्ग से मंहगा है। वैसे ही पूरा पूर्वोत्तर-भारत, भारत की जनता

से एक मानसिक दूरी पर है। फिर त्रिपुरा तो पूर्वोत्तर के लोगों के लिए भी पास होकर दूर ही है।

भूतपूर्व राजवंशीय त्रिपुरा प्रदेश अपने इतिहास के विभिन्न आयामों को समेटे और यहाँ की भिन्न-भिन्न जनजातीय संस्कृतियों को अपने में समाहित किये हुए है। यह एक ऐतिहासिक सच है कि यहाँ की जनजातियों का पुराने समय से बंगाली हिंदुओं के साथ मेलजोल रहा है। यहाँ की त्रिपुरी, जमातिया, रियाङ्, नोयतिया, कलइ, रूपिनी, मुड़ासिंग, हालम और उचर जनजातियों में आचार-विचार और परम्पराओं की थोड़ी-बहुत भिन्नता रहते हुए भी इन्हें कोक्बोरोक भाषा ने एक डोर में बांध रखा है। लेखक का आत्मकथन है कि 'जब मैं त्रिपुरा पहुँचा तो इसका एक-एक पृष्ठ मेरी आँखों के सामने फड़फड़ाने लगा। यहाँ पर बांग्ला भाषा-संस्कृति का ज्यादा प्रभाव है। एक तरह से देखा जाय तो इसे दूसरा बंगाल ही कहा जा सकता है।' जो यहाँ की जीवन-पद्धति में साफ झलकता है।

पौराणिक कथानुसार चंद्रवंशी राजा पुरुरवा के वंशज नहुष के पुत्र ययाति का बुढ़ापा स्वीकार करने से जब उनके चार पुत्रों ने मनाकर दिया, तब पाँचवें पुत्र पुरू ने पिता का बुढ़ाया स्वीकार किया। फलत: ययाति ने उन चारों पुत्रों को अपने राज्य से निष्काषित कर दिया। जिससे उनके निष्काषित पुत्र द्रुह्यु ने दक्षिण-पूर्व दिशा में गंगा सागर (बंगाल की खाड़ी) के तट पर स्थित कपिलाश्रम क्षेत्र में आकर अपना प्रथक राज्य स्थापित किया। उन्हीं के वंशज प्रतर्दन ने वहाँ से बढ़ते हुए ब्रह्मपुत्र और कपिली नदी क्षेत्र से आगे त्रिगर्त (वर्तमान त्रिपुरा) तक अपने राज्य का विस्तार किया। इन्हीं के वंशज चित्रायुध, युठिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में सम्मिलित होने इंद्रप्रस्थ गये थे, जिनके महाप्रतापी पौत्र त्रिपुर के नाम पर त्रिगर्त का नाम त्रिपुरा पड़ा। प्राचीन त्रिपुरा राज्य के मूल-निवासी किरातवंशी ही थे। बांग्लादेश के वर्तमान सिलहट, कुमिल्ला, नोआखली और चटगाँव आदि स्थान इस राज्य के अंतर्गत सम्मिलित थे।

भारतवर्ष की इक्यावन शक्तिपीठों में से एक 'त्रिपुरेश्वरी - पीठ' यहीं पर है। पूर्वोत्तर भारत का एकमात्र जलमहल - 'नीरमहल', विशालकाय श्वेत - 'उज्जयंतप्रासाद' और 'पुष्पवंत-प्रासाद' भी यहीं है। यहाँ जम्पुई पहाड़ की वादियों में मिजो लोगों को देखकर एक नया अनुभव होता है। 'उनाकोटी' में बिखरा हुआ प्रस्तरशिल्प नवआंगतुकों

के मन को लुभाता है। चारों ओर से छूतीबांग्लादेश की सीमाओं पर जाकर देश के हुए कृत्रिम बंटवारे का दुख मन को झिंझोड़ता है, सालता है। त्रिपुरा के दक्षिणी छोर पर बांग्लादेश की सीमा पर फेनी नदी के किनारे 'सबरूम' बसा है, फेनी नदी यहाँ की अंतरराष्ट्रीय सीमा है। फेनी नदी के इस पार खड़े होकर ऐसा महसूस होता है कि उस पार के बीस-पच्चीस किलोमीटर का बंगोप सागर तट मानो हमें अपनी ओर आने का मौन आमंत्रण दे रहा है। यहाँ की त्रिपुरी, जमातिया, चकमा, रियाङ् आदि जनजातियों में काफी पढ़े-लिखेलोग हैं, जिनमें कई उच्चस्थ सरकारी पदों पर आसीन हैं। यहाँ पर निवास करने वालीं जनजातियों की बहुरंगी लोकसंस्कृति किसी-भी पर्यटक का मन मोह लेती है।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस राज्य की सातबार यात्राएँ कीं तथा यहाँ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर अपनी कालजयी रचनाएँ 'राजर्षि' (उपन्यास) व 'विसर्जन' (नाटक) लिखकर त्रिपुरा को विश्व-साहित्य में अमर बना दिया। त्रिपुरा राजवंश के महाराजा राधाकिशोर माणिक्य ने 'शांतिनिकेतन' की स्थापना में अहम् भूमिका निभाई तथा त्रिपुरा राजघराने की चार पीढ़ियों से गुरुदेव का आत्मिक सम्बंध रहा। यहीं की सौंधी मिट्टी में सचिनदेव बर्मन जैसे महान संगीतकार का जन्म हुआ, जिन्होंने हिंदी फिल्मी संगीत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। यह भी सच है कि इस प्रदेश ने पिछले कईवर्षों तक आतंकवाद का दंश सहा है। जिसमें हजारों बेगुनाह-निरोह लोग उस आतंकवाद की भेंट चढ़ गये। साथ ही, इस प्रदेश की प्रगति में भी आतंकवाद कई वर्षों तक रुकावट बना रहा। त्रिपुरा के लोगों के मन में, जीवन में, आतंकवादी दौर के वे दहशत-भरे दिन एक बुरे सपने की तरह आज भी मौजूद हैं।

'मेघों के देस में'[8] लेखक का पाँचवाँ व अब तक अन्तिम यात्रा-वृतान्त है, जिसमें उन्होंने पूर्वोत्तर भारत के मेघालय प्रदेश की यात्रा-कथा को वर्णित किया है। 'मेघों का आलय' अर्थात् मेघालय पूर्वोत्तर भारत का प्राक्रतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध एक बेहद-ही खूबसूरत और नयनाभिराम प्रदेश है, जहाँ पर मेघ हर कदम पर पाँव-चूमते हैं। यह प्रदेश अनेक ज्ञात, अज्ञात या अल्पज्ञात जनजातियों, यथा-खासी, जयंतिया और गारो का निवास-स्थान है, जो अपने विशिष्ट रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, रंग-रूप के साथ ही भाषा, जीवन शैलीऔर धार्मिक विश्वासों के कारण अलग पहचान रखता है।

पुराने जमाने से मेघालय में बसने वाली जनजातियों का दक्षिण में पूर्वी बंगाल (आज का बांग्लादेश) और उत्तर में असम से व्यापारिक सम्बन्ध रहा है। ब्रिटिशों के आधिपत्य में आए असम और पहले से उनके अधीनस्थ बंगाल के मध्य खासी-पहाड़ एक सुदृढ़ दीवार की भाँति खड़ा था। अत: दोनों ब्रिटिश शासित प्रांतों को जोड़ने के लिए अंग्रेज अधिकारी डेविट स्काट ने छल-कपट का सहारा लेकर और निरीह खासियों का खून-बहाकर सन् 1833 ई. में एक रास्ता बनाया। स्वतंत्रता प्राप्ति के 22 वर्षों बाद 'असम पुनर्गठन मेघालय एकट 1969' के माध्यम से 24 दिसम्बर, 1969 को असम से अलग होकर मेघालय प्रदेश बना। जबकि 21 जनवरी, 1972 ई. को इसे पूर्णराज्य का दर्जा प्राप्त हुआ, जिसमें असम के गारो, जयंतिया और खासी जिले सम्मिलित किये गये। इस प्रदेश की राजधानी शिलांग तक गुवाहाटी से सड़क-मार्ग द्वारा पहुँचना बहुत-ही आसान है, जबकि अभी हाल-ही में यह प्रदेश वायु-मार्ग से भी जुड़ गया है।

मेघालय में निवास करने वाली खासी-जनजाति के लोगों की मान्यता है कि शल्लोङ् देव ने अपनी पुत्री'का-पाह्-संतीऊ' को स्वर्ग से धरती पर भेजा, जिसकी संतानें ही खासी जनजाति के लोग हैं। इन्हें खासी अपनी आदिमाता मानते हैं, इससे इनमें एक कहावत प्रचलित हुई - ''लौंगएङ् ना का किंथेइ'अर्थात् स्त्री से ही इनकी जाति बनी है। तभी तो खासी-जयंतिया जनजातियों का समाज मातृसत्तात्मक है, जहाँ पर स्त्री का ही वर्चस्व होता है। पुरुष की विवाह-पूर्व कमाई पर मातृ-परिवार और विवाहेतर आय पर पत्नी का हक होता है। पति अपनी माँ-बहन को चाहे भले कोई राय दे, परन्तु अपनी पत्नी व बच्चों को नहीं दे सकता। सम्पत्ति और घर की स्वामिनी पत्नी-ही होती है। विवाहोपरांत पति ससुराल में रहता है, एक-दो बच्चे हो जानेपर ही वह चाहे तो अलग रह सकता है, लेकिन उसके बच्चों का वंश माता के नाम से ही चलता है। माता की मृत्यु के बाद उसकी उत्तराधिकारी सबसे छोटी बेटी होती है, जो अन्य बहनों को संकट आने पर अपनी सम्पत्ति का कुछ हिस्सा दे सकती है। खासियों में व्यवसाय आदि बाहरी काम स्त्री के जिम्मे होते हैं, जबकि घर का कामकाज पुरुष के जिम्मे होता है। पुत्र होने पर घर के कामकाज में वह पिता की सहायता करता है, जबकि पुत्रियाँ अपनी माँ के साथ रहकर दुनियादारी और व्यापार करना सीखतीं हैं। खासी-पहाड़ की दक्षिणी ढलान पर स्थित चेरापूंजी विश्व में सर्वाधिक वर्षा के लिए विख्यात रहा है, जहाँ पर वर्ष

में 500 से 700 इंच वृष्टि होती है। किन्तु वर्तमान में चेरापूंजी के पश्चिम में स्थित मावसीराम इसका स्थान ले रहा है।

शिलांग से जयंतिया पहाड़ की ओर जाते हुए रास्ते में बहुतसी जगहों पर चपटे शिला-फलकों को मैदान में खड़े देखा जा सकता है, जिन्हें 'मावबन्ना' अर्थात् स्मृति-स्तंभ कहा जाता है। जयंतिया जनजाति के लोग अपने पूर्वजों अथवा किसी विशेष घटना की स्मृति में स्तंभों को जमीन पर खड़ा गाड़ते हैं। इन गाड़े हुए पत्थर के स्तभों के प्रति उनके मनमें बड़ी श्रद्धा होती है। यहाँ के नार्तियांग में बाग-बगीचे की जगह पत्थरों का बगीचा देखा जा सकता है, जिसे लोग 'मावबन्ना-पार्क' अर्थात् स्मृति-उपवन कहते हैं। जयंतिया-जनजाति में देवी-पूजा की प्राचीन परम्परा रही है। नार्तियांग में बने 'जयंतेश्वरी-देवी के मंदिर को देश के इक्यावन शक्तिपीठों में स्थान प्राप्त है। इस शक्तिपीठ का निर्माण जयंतिपुर के राजा यशमलिक ने करवाया था, जहाँ आज भी दुर्गापूजा होती है। विदित हो कि जयंतेश्वरी देवी का मूल मंदिर नार्तियांग से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित जयंतियापुर (आज के बांग्लादेश) में है, जिसका यह प्रतिरूप है। देश-विभाजन के समय जयंतिया राज्य का कुछ भाग भी पूर्वी पाकिस्तान में चला गया था, जिसके कारण यह शक्तिपीठ विस्थापित हुई थी। प्राचीन जयंतिया राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी नार्तियांग थी, यहाँ पर निवास के समय पूजा-अर्चना की सुविधा हेतु राजा ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। जयंतिया जनजाति की इष्टदेवी जयंतेश्वरी-देवी हैं, जिसके नाम पर यहाँ की जनजाति जयंतिया कहलाई।

मेघालय के खासी-जयंतिया पहाड़ों से गारों-पहाड़ तक पहुँचने के लिए काफी घुमाव-फिराव लिए हुए ऊबड़-खाबड़ रास्ता है। सागरतल से 2135 फुट की ऊँचाई पर बसा 'तुरा' गारों पहाड़ का सबसे बड़ा शहर है। जहाँ तक पहुँचने के लिए घनघोर जंगलों से गुजरना पड़ता है। यहाँ से आगे मानकाचार कसबा एकदम पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) की सीमा से लगा हुआ है, जहाँ पर दो-देशों की अंतरराष्ट्रीय सीमा कुछ घरों को छूकर या बीच में से निकली हुई है। यहाँ पर प्रकृति-प्रेमी राभा-जनजाति के लोगों का निवास है। मानकाचार में एक देवी-मंदिर भी है, जिसे स्थानीय लोग कामाख्या-देवी मंदिर मानते हैं। राभा-जनजाति को पर्वतों के आसपास, नदियों के किनारे गाँव बसा कर रहना पसंद है। ऐसा भी जन-प्रवाद है कि गारो-पहाड़ के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र की सोमेश्वरी

नदी की घाटी में 'चे-बोंगे' और 'बोंगे-काटे' नामक दो बहनें थीं। इनमें-से एक बहन गारो जनजाति के लड़के से विवाह करके गारो बन गई और दूसरी बहन अपने-ही सम्बन्धी भाई से शादी करके, समाज से प्रताड़ित होकर गारों-पहाड़ की उत्तर दिशा में चली गई। इस दूसरी बहन की संतति आगे चलकर रंदानि राभा के नाम से जाने गये। राभा जनजाति के लोग प्राचीन समय से अनेक देव-देवियों के साथ 'रिछिदेउ-या-चारपाकक' अर्थात् महादेव शिव को मुख्य देवता मानते आये हैं। रिछि देवता के द्वारा राभा लोगों को स्वर्गराज्य से धरती पर लाने के कारण इन्हें 'राबा' कहा गया और ऐसी मान्यता है कि यही राबा शब्द समय के साथ उच्चारण से परिवर्तित होकर राभा बन गया।

इस तरह सांवरमल सांगानेरिया जीने अपने यात्रा-साहित्य लेखन में मणिपुर-प्रदेश को छोड़कर समूचे पूर्वोत्तर-भारत की झलक दिलखाने का भागीरथी प्रयास किया है। एक मारवाड़ी परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने लक्ष्मी जी का संधान करने की बजाय सरस्वती-पुत्र होना श्रेयस्कर समझा तथा अपनी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक दृष्टि से पूर्वोत्तर-भारत को जानने-समझने का सराहनीय कार्य किया। अन्ततः वे अपनी पूर्वोत्तर-भारत की यात्रा-कथाओं का समापन इस कथन से करते हैं - 'मेघालय ही नहीं, पूरे पूर्वोत्तर-भारत में देखने-समझने के लिए बहुत कुछ है, परन्तु सब कुछ देख पाना संभव नहीं। फिर-भी जितना देखा-जाना वही भी मेरी स्मृतियों में संजोए रखने के लिए कम नहीं।' अगर हम विद्यानिवास मिश्र जी के शब्दों में कहें तो जीवन-यात्रा कभी पूरी नहीं होती, बल्कि वह पूरी होने की चाह में ही अधूरी रह जाती है और जीवन अपनी देहरी पर पुनः दस्तक देने लगता है, एक नये जीवन की चाह में, एक नयी जीवन-यात्रा की शुरूआत के लिए।

<u>संदर्भ-सूची</u>

1. एक बूँद सहसा उछली, सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण-2008 ई.।
2. घुमक्कड़शास्त्र, राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, नई दिल्ली, संस्करण-2013 ई.।
3. अरे यायावर रहेगा याद, अज्ञेय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2015 ई.।
4. थोड़ी यात्रा थोड़े कागज, सांवरमल सांगानेरिया, हेरिटेज फाउण्डेशन, पल्टन बाजार, गुवाहाटी, प्रथम संस्करण-1999 ई.।

5. अरुणोदय की धरती पर, सांवरमल सांगानेरिया, हेरिटेज फाउण्डेशन, गुवाहाटी, प्रथम संस्करण-2010 ई.।
6. ब्रह्मपुत्र के किनारे किनारे, सांवरमल सांगानेरिया भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, पहला संस्करण-2015 ई.।
7. फेनी के इस पार, सांवरमल सांगानेरिया, बोधि प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण-अप्रैल, 2016 ई.।
8. मेघों के देस में, सांवरमल सांगानेरिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2020 ई.

आदिवासी महिला कथा लेखन का विकास और चिंतन

शैलेश यादव
शोधार्थी0डी 0पीएच -
हिंदी विभाग,
मणिपुर विश्वविद्यालय,
कांचीपुर, इंफाल795003 -
ई-मेल-shailesh1859@gmail.com

कथा साहित्यk का प्रार्दुर्भाव भले ही युरोप में हुआ हो लेकिन हिंदी साहित्य् मे इसका पूर्ण विकास देखा जा सकता है। हिंदी कथा एक आधुनिक गद्य विधा है। विश्वद की हर भाषा में सभ्यसता, संस्कृति, रहन-सहन इतिहास एवं पृथ्वी के विभिन्नर रहस्यों् को लेकर अनेकों कथाएं लिखी गई हैं व लिखी जाती रहेंगी। इन प्रचलित कथाओं से किसी भी समाज या समुदाय की आस्थाै, विश्वा्स और मूल्यों का पता चलता है, जिससे सीख एवं सुझाव दोनों प्राप्तक होते हैं।

"आदिवासी साहित्यह कहने मात्र से ही उन समस्तम आदिवासी समुदायों से संबंधित साहित्य का बोध होता है जो अपने आप में एक विशाल, व्याहपक एवं विस्तृदत है। इस समुदाय में कई जातियाँ हैं जो देश के विभिन्न प्रान्तो् में बहु संख्याव में हैं।" आदिवासी समुदाय की संस्कृिति अधिकतर मौखिक ही है, जिसमें कथा, गीत-संगीत एवं नृत्य शामिल हैं। इसी बारे में कमलेश्वहर जी कहते हैं कि "भारत के पास बहुत पुष्टि एवं व्या।पक लोक संस्कृ ति की परंपरा है। लोक संस्कृ ति के विकास का मूल स्रोत ही आदिम समाज की बहुआयामी कल्परना, कल्पनाशीलता और उनकी रचनाशीलता से जुड़ा हुआ है। आदिवासियों के पास मन और बुद्धि की मानवीय प्रयोगशाला रही है, जिसमें आदिम कलाओं, उत्कीिर्ण पाषाण चित्रों, प्रकृति के साथ तन्म य उल्लाैसपूर्ण लास और नृत्यच, स्वहरों का समायोजन और मौखिक-वाचिक परंपरा का लोक साहित्या प्रारंभ से ही मौजूद है।" आदिवासी हमेशा से प्रकृति के नजदीक रहतें हैं, इसे भी वे परिवार का एक सदस्य के रूप में मानते हैं। इसलिए आदिवासियों के साहित्य में प्रकृति की पूरी छाप है। यह उनकी कविता, कहानियों तथा उपन्याहिसों में स्प्ष्टर नजर आता है

आदिवासी साहित्यो पर आज बहुत लोग लिख-पढ़ रहें हैं। आदिवासी साहित्यय के अपेक्षाकृत कम विकसित होने का कारण है, इनके अलग-अलग समुदायों का होना, इन्हींो अलग-अलग समुदायों में अलग-अलग भाषा का प्रयोग होता है, जिससे भारत का एक विशाल जनसमूह अनभिज्ञ है। आदिवासी समाज पर लिखने वाले आज बहुत हैं जिसमें आदिवासी और गैर आदिवासी दोनों हैं लेकिन यह दुर्भाग्यख ही कहा जा सकता है कि आदिवासी महिला साहित्य कार कम हुई हैं, उसमें भी कथा साहित्यक तो बहुत ही कम। इधर कुछ महिलाओं ने आदिवासी कथा साहित्यर में अपनी कलम से एक स्त्रीा के दु:ख-दर्द एवं आदिवासियत की उपस्थिति दर्ज की है, वह भी बहुत ही प्रभावकारी ढंग से। आदिवासियों के रीति-रिवाज की अपनी अलग विशेषता है, जो अन्यक समाज की तुलना में बेहतर है। चाहे वह टोटम हो या फिर धन संग्रह संबंधी बात हो। फिर इन्हेंा तथाकथित सभ्य समाज द्वारा असभ्यव क्यों कहा जाता है? बालात्कासर हो या प्राकृतिक दोहन मानवता का सारा उल्लंेघन तो दीकू समाज ही करता है फिर कहाँ से सभ्यत हुआ? आदिवासी, लोक साहित्या के सुनहरे रंग को अपने शब्दोज के माध्यफम से साहित्यं जगत के समक्ष रखने में तत्पोर हैं। "यह अलग बात है कि भारत बाकी हिन्दू या अन्य धर्मी आबादी अपनी कूपमण्डूंकता के कारण खुद को श्रेष्ठह समझकर इन्हेंि अनदेखा कर रही है और इन्हेंआ जंगली या असभ्यप कह कर अपमानित करती है।" इसका उत्तर आदिवासी महिलाओं ने अपने लेखन में कथा के माध्यम से व्यक्त किया है साथ ही वे अपनी समस्या ओं को सामने रख पाने मे सक्षम हो पायीं है। जब तक कोई समस्या को उजागर नहीं किया जाता तब तक एक अकेला शोषण की समस्या से जूझता रहता है लेकिन जैसे ही वह अपनी बात को बाकी समाज के सामने लाता है तो वह समस्याक केवल व्यलक्तिगत या उस समाज की ही नहीं, सभी की समस्याा बन जाती है, सभी लोग उस संघर्ष में साथ हो जाते हैं। इसी ताकत को पहचानते हुए रमणिका जी कहती हैं कि "अभिव्य क्ति की ताकत अगर मनुष्यक को पशु से भिन्नम बनाती है, तो साहित्यर उसे दिशा देता है और अहसास दिलाता है कि वह मनुष्यय अकेला नहीं बल्कि एक समाज का अंग है और प्रतिबद्ध साहित्यत समाज को गतिशील बनाता है- जड़ नहीं।" आदिवासी समाज में आदिवासी महिलाओं की पूर्ण स्वजतंत्रता कहाँ तक है इस बात को आदिवासी महिलाएं ही सही रूप में व्यलक्त कर सकती हैं। इसका विभिन्नक स्वसरूप हमें उपन्याेसों

और कहानियों में देखने को मिल जाता है। आदिवासी महिला कथाकारों ने महिलाओं के साथ-साथ आदिवासियत को भी उकेरने का प्रयास किया है। गैर-आदिवासी रचनाकारों ने भी इनके दु:ख पीड़ा को व्यसक्तन करने का प्रयास किया है लेकिन वे आदिवासियत व स्त्रीि समस्याेओं के मर्म तक पहुँचने में नाकाम रहें हैं। रोज केरकेट्टा के शब्दोंव में कहें तो 'गैर आदिवासियों द्वारा रचित आदिवासी विषयक साहित्यं में शिल्प है परन्तुव आदिवासी आत्माय नहीं। उसमें सर्जक अपनी दृष्टि से अच्छा ई-बुराई का कलात्मटक विवरण रखता है लेकिन आदिवासियों का सच उससे अलग है।' आदिवासी महिला लेखन को और भी समृद्धि की आवश्यकता है जिससे आदिवासी महिलाओं की समस्यान व आदिवासी शोषण एवं संघर्ष साहित्यज का मेरुदण्डय बन सके। आदिवासी महिला समाज अपेक्षाकृत दीकू समाज से स्व तंत्र है लेकिन इस समाज में भी महिलाओं के प्रति अलग-अलग समुदाय में अधिकारों की असमानता है। इस असमानता को अभी तक उपलब्धर कथा साहित्यल में उकरने का प्रयास किया गया है। फिर भी अभी भी बहुत कुछ कहने के लिए कथा साहित्यय को इंतजार है। " इसलिए जरूरी है कि आदिवासी स्त्रीु कथा लेखिकाओं के अवदान को तो

रेखांकित किया ही जाए। उनके समुचित मुल्यांिकन भारतीय साहित्यर को समृद्ध किया जाए। क्योंखकि आदिवासी स्त्री लेखको की रचनाएं न सिर्फ भारतीय समाज के अदेखे बहुभाषाई और बहु सांस्कृयतिक संसार को दर्ज करती हैं बल्कि पूर्वाग्रहों और गैर बराबरी से मुक्त् एक स्वकस्थर लोक तांत्रिक समाज की पुनर्रचना के लिए उत्प्रेसरित करती हैं।"

आदिवासी कथा तो वाचिक परंपरा में ही विकसित है फिर भी महिला कथा लेखन की शुरूआत लगभग आधी सदी पहले हो चुकी है। "एलिस एक्काल हिंदी की पहली आदिवासी स्त्रीक कथाकार हैं। उन्होंीने पचास के दशक में हिंदी मे लेखन आरंभ किया था और 1947 से शुरू हुई साप्ता।हिक 'आदिवासी' की वह नियमित लेखिका थी।" क्योंरकि न तो एलिस जी के द्वारा और न ही उनके परिवार द्वारा कोई कहानी संग्रहीत की गई, इसलिए उनके कहानी संग्रह का कोई उल्ले ख नहीं मिलता है। विभिन्नक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों को संकलित करके वंदना टेटे जी ने 'एलिस एक्काै की कहानियाँ' नामक शीर्षक से संपादित किया है। एलिस जी का

पूरा नाम एलिस ख्रिस्तायानी पूर्ति है। "कहानी लिखना और विश्वस साहित्यै का अनुवाद करना इनकी प्रकृति थी।" इस संग्रह में पहली कहानी 'वनकन्यान' में बताया गया है कि प्रकृति प्रदत्त् सभी जीव-जन्तुग व पेड़-पौधे हानिकारक नहीं होते हैं बल्कि जो ऐसा समझते हैं वो बहुत बड़ी भूल करते हैं। दूसरी कहानी 'दुर्गी के बच्चेे और एल्माह की कल्पेनाएं' है। इसके केन्द्र में दो निम्ने समझी जाने वाली दलित एवं आदिवासी स्त्रियों की कहानी है। दोनों दु:ख-सुख में एक दूसरे के साथ खड़ी रहती हैं। यह कहानी समूहिक अनुभूति की कहानी है। यह कहानी 1962 में प्रकाशित हुई थी। वंदना टेटे के अनुसार "प्रकाशन के लिहाज से प्रेमचंद के बाद दलित विषय पर लिखी गई यह हिंदी की पहली दलित कहानी भी है।" इनकी अगली कहानी है 'सलगी जुगनी और अंबा गाछ' यह एक बच्चे की निश्छनल प्रेम की कहानी है। विकास की आँधी मे आदिवासी समुदाय वंचना का शिकार हो रहें हैं। यह कहानी आदिवासी अस्मिता की ओर संकेत कर रही है। इस संग्रह में संकलित 'कोयल की लाड़ली सुमरी' कहानी में एलिस एक्कास जी तथाकथित सभ्य या बाहरी व्यलक्ति को शोषक, बालात्का'री के रूप में चित्रित करती हैं। अपने को सभ्यस कहने वाले लोग ही अपनी वासना का शिकार आदिवासी महिलाओं को बना रहें हैं। इस कहानी के माध्यिम से बताया गया है कि गैर आदिवासी समाज, आदिवासी स्त्रियो के उघड़े शरीर को मनोरंजन की दृष्टि से ही देखते हैं और उनका शारीरिक शोषण करते हैं। एलिस एक्काघ जी की अगली दो कहानियाँ 'पंद्रह अगस्तऔ, विलचो और रामू' एवं 'धरती लहरायेगी, झालो नाचेगी गायेगी'है। इसमें लेखिका का आदिवासी जीवन के सामाजिक ढ़ांचा के प्रति आशान्वित दृष्टिकोण दिखाई देता है।

महिला आदिवासी कथा साहित्य की स्तं भ के रूप में जानी जाने वाली रोज केरकेट्टा के दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। रोज जी के कहानी संग्रह का नाम 'पगहा जोरि-जोरि रे घाटो' (2011) और 'विरुवार गमछा तथा अन्यन कहानियाँ' (2016) हैं। इनके पहले कहानी

संग्रह 'पगहा जोरि-जोरि रे घाटो' के शीर्षक का अर्थ होता है 'कतार में लौटती हुई चिडिया'। यह कहानी संग्रह हिंदी भाषा में ही लिखित व हिंदी पाठकों में बहुचर्चित भी है। इसमें 16 कहानियाँ संग्रहीत हैं। इस पुस्तखक से 'भँवर' कहानी विशेष रूप से प्रसिद्ध

कहानियों मे से एक है, जिसमें आदिवासी महिलाओं को संपत्ति का अधिकार न देने की प्रथा के विरोध की कथा है। इस कहानी में विधवा महिला के पास कोई बेटा नहीं है जबकि केवल बेटियाँ हैं। उसका अपनी जमीन पर आदिवासी समाज के नियमों के अनुसार भी और कानूनानुसार भी हक है लेकिन पुरूषवादी सत्तास होने के कारण विधवा स्त्री व उसकी बेटी पर अंधेरी रात में हमला कर माँ और एक बेटी को हमलावर रात भर नोचते हैं और जाते समय उसके टुकड़े-टुकड़े करके जाते हैं। छोटी बेटी इन हमलावरों से बचने में सफल होकर भी अपने हक के लिए गवाहों के अभाव में पाँच साल के बाद हाईकोर्ट के चक्कंर में अनुत्तकरित सवालों के भँवर में घूमती रहती है। आदिवासी समाज में भी स्त्रीक-पुरुष समानता के दंभ की सच्चाँई अलग ही है। रोज जी ने इस कहानी में इस सच्चाेई को निडर रूप से उजागर किया है। इनकी ही 'गंध' कहानी में स्त्री , प्रतिरोध की चेतना से जागृत है। इस कहानी में नायिका छेड़खानी पर बदतमीज यात्री पर हाथ उठाती है। इसी तरह 'घाना लोहार का' कहानी में स्त्रीं अपने अधिकारों के लिए हमलावर जगत सिंघ का सिर और चंदरू का हाथ काट देती है। दूसरी तरफ लेखिका आदिवासी समुदाय के गुण को उजागर करते हुए 'विरुवार गमछा' कहानी में आदिवासी हथकरघे द्वारा बना गमछा को दूसरे प्रदेश गुजरात में आदिवासी पहचान का कारण बनाता हैं। इनकी भाषा की सहजता के कारण आदिवासी प्रतिरोध भी सहज और शान्तण प्रतात होता है। "रोज केरकेट्टा की कथा शैली सहज है। वे किसी वाद के बोझ तले दबकर नहीं आदिवासी जीवन के सच को आधार बनाकर लिखती हैं।"

फ्रांसिस्कार कुजूर के लेखन की भाषा कुड़ुख है। कुड़ुख एवं हिंदी में इनके एक-एक कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। इनकी हिंदी कहानी संग्रह का नाम 'मूसल' है। इनकी कहानी 'मूसल' आदिवासी समाज में संस्कृकति और आधुनिकता के द्वंद्व को उभारती है। दूसरी कहानी 'आधी रात को' दो अपाहिज लोगों की कहानी है। नायिका लंगड़ी है तो नायक नपुंसक। लंगड़ेपन के कारण पिता के घर में प्याजर नहीं मिला लेकिन नपुंसक पति के घर खूब प्या़र मिलता है तथा वे एक दूसरे की अपाहिजता को स्वीयकार भी कर लेते हैं।

आदिवासी लेखिका कोमल जी की कविता, कहानी तथा लघु कथा विभिन्नह पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इनकी चर्चित कहानी 'साहूकार की मछली' और 'पहचान है। 'साहूकार की मछली' कहानी में मछली के संबंध में साहूकार से लड़ाई दिखाई गई है। दूसरी कहानी पहचान में आदिवासियत की पहचान को बड़ी बारीकी और भद्दे अंदाज मे मुखिया और नायिका के माध्यिम से दिखाया गया है। यह एक लघु कथा है।

मेघालय राज्य की खासी आदिवासी समुदाय में विजोया सावियान जी का जन्मई हुआ। इनकी भाषा खासी और अंग्रेजी है लेकिन अनुवाद के माध्यहम से हिंदी साहित्यं में भी चर्चित हैं। इनका हिंदी में अनूदित उपन्यावस 'धुंध में खोए हुए लोग' है। हिंदी में अनूदित कहानी 'सौतेला बाप', 'लंगड़ापन' (खासी) और 'बरसात की एक रात' आदि है। 'बरसात की

एक रात' कहानी में मेघालय की युवाशक्ति के मन में उग्रवाद के पनपने की पीड़ा को एक माँ और बेटे के मनोविज्ञान से जाड़कर व्य क्तव किया गया है। इनके उपन्यामस 'धुंध में खोए हुए लोग' मे सीमित नौकरियों के कारण आपसी संघर्ष यानी की घुसपैठ (अन्यै प्रदेश के लोगों का) और मूल निवासी के हिस्सेर की सुविधाओं को लेकर पनपती वैमनसता और असुरक्षाबोध का चित्रांकन किया गया है। इसी उपन्या स में लेखिका ने मातृसत्ताब में सौतेले पिता के कारण बच्चो के मन पर पड़ रहे असर को उकेरा है। लड़का खुद को फालतू की वस्तु समझने लगता हैं तथा कभी-कभी मातृसत्तास के इसी प्रभाव के कारण वे अनपढ़ भी रह जाते हैं। इनकी कहानी 'सौतेला बाप' और 'लंगड़ापन' खासी जनजाति पर ही आधारित हैं। 'सौतेला बाप' की नायिका लेबिआंगमॉन अपने स्कूल के समय से ही बेरिस नेईलौगस से प्रेम करती थी, लेकिन जाति अलग होने के कारण दोनों की शादी नहीं हो पायी। नायिका बेरिस के बच्चेक की माँ भी बन जाती है। नायिका की शादी टोकिन बेरिन से हो जाती है। सौतेला होने के बाद भी टोकिन बच्चे वैंनवॉक को बहुत प्याकर करता है। आगे कहानी में दोनों मिलकर नायिका की शादी फिर बेरिस से करवा देते हैं। पहले पति को छोड़कर अपने प्रेमी को पति बनाना मेघालय में मातृसत्ता‍ा के कारण संभव हो पाया है। वहाँ स्त्रीर-शक्ति मातृसत्ताल के कारण जीवित है।'लंगड़ापन' कहानी में एक बहादुर औरत

कोंगतिशि की है जो क्षेत्रीय दंगो में नायक की बहन को जान पर खेल कर बचाती है। जब नायक उसके अन्येिशि ष्टि के लिए जाता है तो नायक का लंगड़ापन ठीक हो जाता है इससे नायक की दृष्टि में बहादुर महिला का स्था न और ऊँचा हो जाता है। यह आधुनिक एवं प्रतीकात्माक कहानी है। इनका लेखन स्ीथा शक्ति को पहचान दिलाता है। खासी जनजाति की एक और लेखिका एस्थहर सीएम हैं। इनकी कहानी का नाम 'पानी में संस्महरण : उमखराह नदी के जीवन का एक अध्यामय' है। इस कहानी की नायिका बेम एक घर में नौकरानी का काम करती है तथा उसकी माँ भी नौकरानी है, उसे भी एक पति की तलाश है। बेम कसाई के लड़के के साथ प्रेम - वश होकर भाग जाती है। आठ साल बाद कसाई पति पाँच बच्चों की माँ बनाकर, उनके पालन पोषण का जिम्माह बेम पर छोड़कर खुद शराब और बिमारी के कारण मर जाता है। बेम किसी तरह भूख और गरीबी से लड़ते हुए बच्चोंऔ को पालती है। उसकी माँ अपने से बहुत छोटा पति लाती है। माँ को अपनी बेटी से ही खतरा है कि कहीं उसके पति को अपना न बना ले, इसलिए उसे घर में नहीं रहने देना चाहती थी। बेम एक चाय की दुकान पर काम करते हुए बिना बताए ही कहीं चली जाती है। इस मातृसत्ताब के समाज में यह स्वततंत्रता है कि वे अपने लिए पति को किसी भी उम्र चुन कर ला सकती हैं।

अरुणांचल प्रदेश के न्यी शी आदिवासी समुदाय में जन्मीा जोराम यालाम नाबाम के हिंदी कहानी संग्रह का नाम 'साक्षी है पीपल' (2012) है। इसमें नौ लम्बीय कहानियाँ संकलित हैं। इसमें भी यासों और दिलासा चर्चित कहानी है। नबाम जी का हाल ही में 'जंगली फूल' (2019) नामक एक उपन्यामस भी प्रकाशित हुआ है। यह उपन्या स अरुणांचल प्रदेश की जनजातियों पर केन्द्रित है। न्यीउशी समुदाय में पुरुष को बहुपत्नीा रखने का आजादी है। इनकी कहानियों में समाज की कई सशक्त स्त्री पात्रों के माध्यहम से स्त्री -पुरुष के बीच मित्रता के संबंध को आदर्श घोषित किया गया है। लेखिका ने प्रगतिशील मानवतावादी दृष्टि से जनजातियों में भी नवजागरण लाने का प्रयास किया है। वीर भारत तलवार के शब्दों में "प्रेम की महिमा का गुणगान करने वाले इस उपन्याास में कई शक्तिशाली स्त्रीा चरित्र हैं जिनकी नैसर्गिकता से प्रभावित हुए बिना हम नहीं रह सकते हैं। स्त्रीं-पुरुष के बीच मित्रता के संबंध को आदर्श घोषित करने वाली यह साहसिक कृति अपनी खूबसूरत और चमत्का रिक भाषा के कारण बेहद पठनीय बन गई है।" इसी तरह इनकी कहानी 'यासो' भी

बहुपत्नीच प्रथा पर केन्द्रित है। इसमें बहुपत्नीै प्रथा की बारीकियों के बारे में बताया गया है, जो पति खेत में जितना अच्छा। काम कर सकता है, उसे उतना ही पत्नीय रखने की सामाजिक मान्येता है। सब पत्नियाँ पहली पत्नीस के आदेशानुसार चलती हैं, पहली पत्नी ही अपने पति के लिए अन्यज पत्नियों का चुनाव भी करती है। वहाँ लड़का-लड़की का ब्यामह माँ-बाप की मर्जी से ही होता है, इसलिए अधिकतर लड़कियाँ उस पति को छोड़कर भाग जाती हैं। इसके बाद पिता के उम्र वाले पुरुष की दूसरी, तीसरी पत्नी बनना पड़ता है। नाबाम जी इस प्रथा को कहानी में तोड़ने को प्रयास करती हैं। यासो का भी ब्याह में दब्बू व शर्मीउला पति मिला था लेकिन यासो को बलशाली पति चाहिए था जो उसे सुरक्षा दे सके। इसलिए यासो भागकर तमिन के खेत में मेहनत के लिए जाती है जहाँ तमिन की पहली पत्नीए उसकी मेहनत को देखकर तमिन से शादी करा देती है, उस तमिन की दो पत्नियाँ और भागकर आई थी। लेकिन यासो इस प्रथा से अपनी बेटी कोदुःख नहीं भुगतने देगी । यासो चाहती है कि बेटी दूसरी शादी न कर सुखद जीवन बिताए। 'दिलासा' कहानी सात घायल मजदूरों की कहानी है जिनका अस्पुताल पहुँचना बहुत जरूरी है पर आटो ड्राइवर के सनकीपन के कारण समय लगता है। इस कहानी में ड्राइवर के सनकीपन के कारण की कथा भी समाहित है।

नगपुरिया भाषी कथाकार सरिता सिंह बड़ाईक की कहानी है 'दावेदार'। यह चिक बड़ाईक आदिवासी समूह की कहानी है। यह कहानी गाँव के आदिवासी किसान समाज में व्या।प्त विकृतियों को दर्शाती है। दीकू संस्कृकति आदिवासी पर हावी हो रही है। पिता के मरने पर कैसे उसके बेटे उसकी संपत्ति के दावेदार बनने के लिए झूठा दिखावा करते हैं। बढ़-चढ़ कर रोते हैं और पिता की सेवा का झूठा दंभ भर रहें हैं, पिता के जीते हुए सभी लोगों ने उन्हें अनदेखा कर दिया था। यहाँ तक कि इन्हींा लोगों के कारण वे मर भी जाते हैं। इस कहानी के माध्यरम से लेखिका आदिवासी मूल्यों के अवमूल्यान को बचाने की अवश्यइकता पर बल देती हैं। इस कहानी की शैली सुगठित तथा नगपुरिया भाषा के शब्दे अधिक मिलतें है, जो आदिवासियों के धरातल से जोड़ने के लिए आवश्य क भी हैं। नगपुरी भाषा की एक और लेखिका हैं मंजु ज्योकत्सोना। इनके कहानी संग्रह का नाम है 'जग गबू जमीन'। इस संग्रह की चर्चित कहानी है 'प्रायश्चिोत' जिसमें एक पति अपने पत्नी पर किए गए जुल्मोंम का प्रायश्चित

करता है। ऐसा प्रायश्चित केवल आदिवासी समाज ही कर सकता है, तथाकथित सभ्यय समाज नहीं। नायक रिक्शा। चालक है, वह नगाड़ा बजाने व नाचने में माहिर है। पूरा परिवार नाचता और गाता है और एक ही कमरे में गुजारा करता है लेकिन उसकी दुल्हनन जो आती है वह बदसूरत व बेसुरी दोनों है, पर घर के कामों को अच्छीे तरीके से करती है। वह खुद कमाकर घर के लिए पैसे लाती है। सास और पास-पड़ोस यहाँ तक कि पति भी उसे बॉझ कहता है, जो कि सच भी था, तो वह सहन नहीं कर पाती है पति से मार खाने के बाद अपने मायके जाकर आत्मकहत्याा कर लेती है। उसके बाद नायक शराब के नशे में धुत होकर शाराब बेचने वाली को ही दुल्ह न बनाकर घर लाता है, जिसके पेट में दूसरे का बच्चाो है लेकिन पति अपने अपराध बोध का प्रायश्चित करना चाहता था।

गोंड आदिवासी समुदाय से सुशीला धुर्वे जी महाराष्ट्रच की निवासी हैं। इनकी चर्चित कहानी 'गाय चोर दीकू' है। इस कहानी में दिखाया गया है कि दीकू (बाहरी लोगो) की वजह से आदिवासी समाज का ताना-बाना छिन्नन-भिन्ना हो रहा है, इन आदिवासियों का पशु चुराकर दीकू उन्हींज को फिर बेचते हैं। यही नहीं दीकूओं द्वारा योजनाबद्ध तरीके से जंगलो से लकड़ी चोरी, बाजारों से पशुओं की चोरी और गाँव-घरों से स्त्रियों की चोरी लगातार कर रहें हैं। आदिवासी समाज की पुरखा परंपरा, अस्तित्वघ और संस्कृ‍ति पर खतरा नजर आ रहा है। इस खतरे से यह कहानी भलीभाँति अवगत कराती है। गोंडी समाज पर महाराष्ट्र की ही लेखिका जीवन उषा किरण अन्नातम ने अपनी कहानी 'भूख' में यह प्रश्नन उठाया है कि एक तरफ एक वर्ग विशेष के लिए खाने की प्लेतटे सजाई जा रही हैं, वहीं दूसरी तरफ अधिकांश लोग भूख मिटाने के लिए क्योंी तरस रहे हैं? वे सब भूख से मर रहे हैं। रोंगटे खड़े कर देने वाली ऐसी ही सच्चीे घटना का चित्रण इस कहानी में किया गया है। यह कहानी बाढ़ में फंसे लोगों की मार्मिक राजनीतिक कहानी है। महारष्ट्री की ही गोंडी भाषी कथाकार वसुधा मंडावी ने स्त्री सशिक्तकरण की कहानी 'इरुक' है। इरुक नायिका के माध्यडम से स्त्री अपने अपमान का बदला स्वनयं लेती है, किसी पर निर्भर नहीं होती है। "यह कहानी अपने शिल्पभ और भाषा के लिहाज से महत्वतपूर्ण बन पड़ी है। यह एक बेमिसाल आदिवासी कहानी है, जो न सिर्फ अपने कटेंट के लिहाज से खूबसूरत है बल्कि शिल्पस के लिहाज से भी चकित करती है।"

तेमसुला आओ मूलत: अंग्रेजी भाषा की लेखिका हैं। लेकिन हिंदी अनूदित चर्चित कहानी 'तीन औरतें' में ऐसी तीन औरतों का वर्णन है जिनके साथ कोई न कोई घटना जुड़ी है। लियोन्तुऔला की शादी हो चुकी थी लेकिन एक दिन मेरेनसाशी उसका बलात्का‍ोर करता है, इस बात से लियोन्तुटला को अपराधबोध होता है कि उसने बलात्कासर का विरोध उतनी शिद्दत से क्यों‍े नहीं किया जितना करना चाहिए था। फिर बाद में वह मेरेनसाशी की बेटी को जन्मर देती है, नाम है मेदेम्ला‍ा। वह बड़ी होकर मेरेनसाशी के बेटे से ही प्रेम करने लगती है। जब लियोन्तुला को पता चलता है तो पिता से बात करके यह शादी नहीं होने देती। मेदेम्लार बिना शादी के ही बच्चीक को गोद लेकर रहने लगती है। वह बच्चीह मार्था कक्षा आठ में ही अपौंक से शारीरिक संबंध बनाकर उसी से शादी कर लेती है।

जम्मू के लेह निवासी संरिंग छोरोल की कहानी 'अखरोट का दरख्त्', एक बच्चीप के प्रकृति प्रेम की अतिमार्मिक और दिल को छू लेने वाली रचना है। इस कहानी के माध्य म से प्रकृति के मासूमियत और कोमलता को यह आधुनिक सभ्या समाज निर्ममता से रौंद रहा है। यह कहानी इससे सावधान और बचाने की आवश्यलकता पर बल देती है। संताली भाषा की कहानी 'सच्चा‍ी सुख' प्रीती मुर्मू की कहानी गाँव के बाहर शहरों में जा बसे आदिवासियों और गाँव में रहने वासे आदिवासियों के सोच के अंतर का विस्तृँत वर्णन है। शहरी आदिवासियों के जीवन शैली में मूल्यों का ह्रास हो गया है। दमयंती सिंकू की कहानी 'सीने के अजूबे प्रेमी', एक अपाहिज युवती की कहानी है। यह आदिवासी समुदाय पर केंद्रित है। इसमें रोज तंग करने वाले दो युवक के सामने जब लड़की शादी की शर्त रखती है तो वे भाग खड़े होते हैं। यह कहानी मनचलों के प्रेम और छल-कपट को उजागर करती है।

आदिवासियों में भ्रूण हत्याल की परंपरा नहीं थी लेकिन अब धीरे-धीरे फैल रही है इसी को दर्शाते हुए कुड़ुख भाषी शांति खलको की कहानी 'मेरे बाप की शादी' है। नायिका अपने बाप की दूसरी शादी को लेकर चिंतित है क्यों‍ंकि उसके बाप ने पहली पत्नी को भ्रूण हत्या कराते समय जानबूझकर मार डाला था।

इसके अलावा विभिन्नत पत्र-पत्रिकाओं में कुछ लेखिकाओं की कहानियाँ और उपन्या्स समय-समय पर प्रकाशित होते रहें हैं।अन्य कहानियों में ममांग देई कृत 'देवों की

वर्षाभूमि', ज्योपति लकड़ा कृत 'कोराइन डूबा', मीरा रामनिवास कृत 'अंतिम टारगेट', शोभा लिंबू यल्मों कृत 'कारोबार' और 'नम्चुन दाज्युर', येसे दरसे थोंगसी कृत 'आईना' आदि हैं। आदिवासियत को आधार बनाकर वंदना टेटे द्वारा प्रकाशित कहानी संग्रह 'लोकप्रिय आदिवासी कहानियाँ' है। इन लेखिकाओं के अलावॉ हिंदी कथा साहित्यक में अदिवासी समाज के चिंतनधारा को आगे बढ़ाने के लिए वासवी कीड़ो, दयामनी वार्लो, बिटिया मुर्मू, ग्रेस कुजूर, सावित्री बड़ाईक, सुषमा माथुर, अल्मा ग्रेस बारला, वारीपदा, दीपा मिंज, मिलनरानी जमातिया, कुसुम माधुरी टोप्पोम, डॉ0 मेरी हॉसदा, सुशीला सामद, थसो क्रापी (कार्वी लेखिका) तथा शान्ति सवैया आदि आदिवासी लेखिकाएं प्रयासरत हैं।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि आदिवासी साहित्य में आदिवासी महिलाओं का योगदान कम ही सही पर महत्वपूर्ण है। आगे महिला कथाकारों में लोग अपना योगदान दे रहें हैं। आदिवासी महिला कथाकारों ने आदिवासी की प्रकृति प्रेम, उनके जीवन मूल्य, आदिवासी परंपरा को प्रगतिशील बनाने और उनके शोषण के विरुद्ध पुरजोर रूप से आवाज उठाई है। इसके साथ ही आदिवासी समाज में महिलाओं की धरातलीय स्थिति से अवगत कराया है, उनके दैहिक और मानसिक एवं आधिकारिक शोषण के प्रतिरोध स्वरूप अपनी आवाज मुखर की है, इनके न्याय के पक्ष में खड़ी हैं। "पारिवारिक और सामाजिक जीवन की नित नूतन समस्याएं और प्रकृति से साहचर्य की प्राचीन परंपरा आदिवासी साहित्य का ठोस आधार है, जिस पर आदिवासियों का प्राचीन तथा समकालीन साहित्य टिका हुआ है और अब यह आदिवासी साहित्य हिंदी के माध्यम से देश और दुनिया मे छा जाने की हैसियत बनाने में जुटा है।"

संदर्भ ग्रंथ

भारत का आदिवासी स्वर, रमणिका गुप्ता, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2018, पृष्ठ- 188

[1]पूर्वोक्त, पृष्ठ- 27

[1]पूर्वोत्तर का आदिवासी सृजन का स्वर, सं. रमणिका गुप्ता,अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2018, पृष्ठ सं. 10

[1]आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी, सं. रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 2008, पृष्ठ- 06

[1]एलिस एक्का की कहानियाँ, सं. वंदना टेटे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण- 2015, पृष्ठ- 22

[1]पूर्वोक्त, पृष्ठ- 09

[1]आदिवासी साहित्य के लिए आदिवासी साहित्य जानना जरूरी है, www.prabhatkhabar.com/news/ranchi/story/619540.htm, 03 जुलाई 2017

[1]एलिस एक्का की कहानियाँ, सं. वंदना टेटे, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण- 2015, पृष्ठ- 28

[1]आदिवासी चिंतन की भूमिका, गंगासहाय मीणा, अनन्य प्रकाशन,दिल्ली, पुनर्मुद्रण- 2019, पृष्ठ- 73

[1]जंगली फूल, जोराम यालाम नाबाम, अनुज्ञा बुक्स पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण- 2019, आवरण पृष्ठ

[1]आदिवासी कहानी संचयन, सं. रमणिका गुप्ता, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2019, पृष्ठ- 22

असम में सत्रीय और बरदोवा थान का महत्व

देबीदेबांगना
शोधार्थी, हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय

महापुरुष शंकरदेव ने असम में प्रसार हेतु-प्रचार'धर्म-नाम'सत्रों की स्थापना की थी । सत्र वह पवित्र जगह है, जहाँ वैष्णव सम्प्रदाय के लोग नामकीर्तन के जरिए - भगवान की उपासना करते हैं एवं वैष्णव संस्कृति का प्रचार करते हैं। आज भी ध्वजवाहक के रूप में असम में सुंदर एवं सुचारू रूप से सत्र और असमीया संस्कृति के सत्रीयासंस्कृति का प्रचलन है। सब मिलकर शंकरदेव तथा अन्य वैष्णव गुरुओं के द्वारा प्रचलित विभिन्न रीतिरिवाजों को लेकर सत्र और सत्रीया संस्कृति को आगे बड़ा - करदेव की जन्मभूमि बरदोवा का रहे हैं। हम इस लेख के माध्याम से असम तथा शं थोड़ा बहुत इतिहास एवं एक सत्र में होनेवाले विभिन्न रीतिरिवाजों पर प्रकाश डालने - का प्रयास करेंगे। इस लेख में सर्वप्रथम वटद्रवा के इतिहास और दंतकथाओं का उल्लेख बारे में उल्लेख किया गया है एवं तदनंतर सत्र और थान में प्रचलित विभिन्न प्रसंगों के किया गया है और समापन में वटद्रवा थान और विभिन्न सत्रों में प्रचलित उत्सवों के बारे में सम्यक परिचय देने का प्रयास किया गया है।

वटद्रवा नामे ग्राम

शष्य मत्स्ये अनुपम

लोहित्य जले अनुकूल

रदोवा का ही पुराना नाम वटद्रवा है। जिसके सौंन्दर्य का वर्णन उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से हुआ है। इन पंक्तियों का अर्थ है वटद्रवा नाम का जो गावँ है, वह अनाज और मत्स्य से भरपूर है। वह लोहित अर्थात ब्रह्मपुत्र के जल से अनुकूल है। इसी बरदोवा की असमीया संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह असम के अन्यतम तीर्थ स्थान के रूप में भी माना जाता है। वटद्रवा नाम के पीछे जो कहानी है वह कुछ इस प्रकार हैजब धरती में जल का अभाव हुआ तब शंकर देव ने सभी को भगवान का - में मग्न (कृष्ण) को हरिनाम (वैष्णव) नाम लेने अर्थात प्रार्थना करने को कहा। भक्तों

को धरती (नभ से बहने वाली गंगा) बल से आकाश गंगादेखकर रात को शंकरदेव योग तक बहाकर ले आये।इसके कारण भारी तूफान आया। सुबह लोगों ने देखा जिस वट वृक्ष के नीचे पिछले दिन तक पानी नहीं था,अगले दिन वहाँ पानी भरा हुआ था। जो सौने पूछा हजार साल पुराना वृक्ष था वह एक ही रात में गायब हो गया तब भक्तों-वह वृक्ष कहाँ गया? शंकर देव का उत्तर था कि यह सब भगवान की लीला है, यहाँ आकाश गंगा का आगमन हुआ और वह वट वृक्ष के ऊपर से हुआ जिसके कारण वह वृक्ष द्रवमान हुआ । इसीसे आज से इस जगह को वटद्रवा नाम से पुकारना और (डूब) जलाशय बना उसे आकाशीगंगा नाम से जिस जगह पर धनुष के आकार लेकर वह ।"जाना जाएगा[1] यह कथा कथा गुरु चरि"त में उल्लेखित है। "

वैष्णव संस्कृति एवं ब्रजबुली भाषा की शुरुआत यहीं से मानी जातीहै। महापुरुष शंकरदेव की जन्मभूमि देवभूमि बरदोवा अर्थात वटद्रवा है। आलिपुखुरी के तट पर प्रख्यात बार भूञाँ परिवार में शंकरदेव का आविर्भाव हुआ। उनकी जन्म तिथि बहुत ही विवादास्पद है। सन् के आश्विन महीने की शुक्ल दशमी तिथि को उनकी जन्म तिथि के .ई 1449 तक वे बरदोवा में ही रहे और 1516 से लेकर सन् 1449 रूप में माना जाता है। सन् वे वहाँ से हमेशा के लिए असम की परवर्ती समय में विभिन्न राजनैतिक कारणों से वर्ष की आयु तक उन्होने बरदोवा से ही अपने विभिन्न 67 दूसरी जगहों पर चले गये। साहित्यिक कार्य, यात्रा, तथा सत्रीया संस्कृति की सृष्टि एवं विकास का कार्य किया। लगभग 19 व ने अपनीवर्ष की उम्र में महेंद्र कंदली के विद्यालय जाने वाले शंकरदे 12 में सम्पू 1468 वर्ष की उम्र में अर्थात सन्र्ण नाट्य कला सिखकर अपना पहला नाट की रचना की "चिह्नयात्रा", जिसके जरिए न केवल साधारण अनपढ़ लोगों का मनोरंजन किया, बल्कि उनको भगवान और भागवत के महत्व को भी समझाने की कोशिश की। परवर्ती समय में अर्थात सन् में दौल उत्सव परम्परा का भी आरम्भ किया। .ई 1470

सत्र और थान में अंतर होता है। सत्र में सत्राधिकार रहते है एवं थान में महापुरुष के अमूल्य सम्पद रहते हैं, जिनसे महापुरुष का प्रत्यक्ष सम्बंध होता है। थान में सत्र तो होता है, परंतु सत्रों में थान नहीं होता। बरदोवा थान में भी दो सत्र हैं नलोवा सत्र - और शॉ (बरफाल)लगुरि सत्र । इन दोनों सत्रों द्वारा ही बरदोवा थान की (सरुफाल) नीति और परम्परा आज भी सुंदर रूप से चल रही है। समाज कल्याण हेतु -रीति महापुरुष शंकरदेव का इस धरती पर आगमन हुआ। भागवत को नींव मानकर उन्होनें

एक शरण धर्म का आरम्भ किया, जिसके चलते असम में सत्र संस्कृति का आरम्भ हुआ। उन्होंने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी को एक साथ जोड़कर 'बर असम' बनाने का सपना देखा था, जिसके चलते वे सत्रीया रीतिनीति में चौदह प्रसंग लाये। यह - रिवाजों को -भग एक ही हैं । हम जब सत्रों के रीतिनियम असम के सभी सत्रों में लग जानने के लिए बरदोवा गए वहाँ संचालन समिति में रहने वाले विभिन्न व्यक्तियों से इस विषय पर वार्तालाप किया । वहाँ उपस्थित विज्ञजन में से अन्यतम गजेन राजखोआ महोदय के साथ वार्तालाप के दौरान नामघर और सत्रों में प्रचलित चौदह प्रसंग प्रणाली परम्परा के बारे में हमें ज्ञात हुआ एवं असमीया भाषा में लिखित उनकी एक किताब" ,बरदोवा आलिपुखुरीर संक्षिप्त परिचय" से इसके बारे में जानकारी उपलब्ध हुई। बरदोवा के कीर्तनघर में भी परम्परागत रूप से यह चल रहा है। यह कुछ इस प्रकार है-

1. ताल कुबुआ प्रसंग (ताल बजाने वाले प्रसंग)
2. मंजीरा नाम
3. आई (महिला) के सुबह नाम-प्रसंग
4. भक्तों के डेरपरीया प्रसंग
5. पाठ प्रसंग
6. आबेलिर(शाम) शून्य पाठ
7. वियली प्रसंग
8. पाठ प्रसंग
9. आबेलिर (शाम) आई के नाम प्रसंग
10. ताल कुबुआ (बजाना) प्रसंग
11. गुणमाला भटिमा प्रसंग
12. खोल(एक वाद्य) प्रसंग
13. गोधुलि नाम प्रसंग
14. पाठ-प्रसंग

भाद्रपद महीनें में इन चौदह प्रसंगों के अलावा और चार खोल प्रसंग किए जाते हैं, जिसके कारण इस महीने में अठारह प्रसंग किए जाते हैं। इन प्रसंगों के नियम शंकरदेव

ने बरदोवा से ही पहली बार आरम्भ किए था, जो वर्तमान समय में असम के बाकी सत्रों एवं नामघरों में भी चल रहे हैं।

बरदोवा के भ्रमण के साथसाथ हमने सत्र परम्परा के बारे में और अधिक विस्तृत रूप - में जानने के लिए नगाँव में स्थित'दिचियाल सत्र' के डेका सत्राधिकार श्रीमान हेमकांत महंत जी से भी वार्तालाप के दौरान सत्रीया परम्परा के अन्य नियमों से भी परिचित हुए। विस्तृत रूप से सत्र परम्परा में विभिन्न रीतिरिवाज है-, परंतु विभिन्न आध्यात्मिक कारणों से इसके बारे में विस्तृत रूप से लिख पाना सम्भव नहीं है। फिर भी वर्तालाप के जरिए हमें ज्ञात होने वाले कुछ रीतिरीवाज नीचे उल्लेखित हैं।-

सत्रीया परम्परा का पहला नियम ही नाम, देव,गुरु, भकत है। (भक्त) सत्रीया परम्परा में चार संहति है-

- ब्रह्म संहति
- निका संहति
- पुरुष संहति
- काल संहति

इन चारों संहति का पहला नियम ही नाम,देव गुरु,भक्त से ही शुरू होता है। परंतु बाकी सभी के नियम अलगरुष संहति के अंतर्गत है। सत्रीया अलग है। बरदोवा थान पु- परम्परा में सबसे पहलेप्रसंग प्रणाली आते हैजिसमें बैठने के लिए बहुत सारे नियमों , -का पालन किया जाता है। जैसे

- सुबह स्नान कार्य के बाद जब सभी भकत(भक्त) धोती-चेलेंग और गामोछा लेकर अपने चारों रिपु (काम,क्रोध,लोभ,मोह) का वर्जन करके नाम प्रसंग के लिए बैठते है।
- भगवान के नाम पर **शराइ** उत्सर्ग किया जाता है। जो भक्त अपने आप को प्रकृति के रूप में कल्पना करके चेलेंग से उरणि(घुंघत) लेकर सजाते हैं।
- **शराइ** 'नौ' भक्त के नाम पर उत्सर्ग किया जाता है।
- **शराइ** में वैकुण्ठविष्णु भगवान की आराधना करके आवाहन किया जाता है।
- **शराइ** को रखने के लिए उसके नीचे कलपात(केले के पत्ते) देने का नियम है।

- प्रसाद लक्ष्मी की वस्तु है। जिसके कारण सबसे पहले **शराइ** में चाउल(चावल) रखा जाता है, उसके बाद माह-बुट और बाकी फल आदि देते हैं।
- स्तोककृष्ण,देवप्रस्थ,सुवल,सुदाम,ऋषभ,विशाल,विरूथप,वसुदाम,भद्रसेन,अर्जुन, श्रीदाम और दाम इन द्वादश गोपाल (भकत) चारों और बैठकर नाम-प्रसंग करते हैं।
- नाम-प्रसंग करते समय ताल(एक विशेष बाद्य) बीच में रखा जाता है जिसे 'एक्का' कहा जाता है।
- जब नाम-प्रसंग के अंत में प्रसाद लोगों को दिया जाता है तब देउरी अपने मुहँ को गमोछा से बांधकर प्रसाद देते हैं ताकि किसी भी प्रकार की अपवित्र चीजे प्रसाद में न गिरे। यह वर्तमान समय में देखा जाए तो वैज्ञानिक एवं अच्छा नियम भी है।

इन नियमों के बहुत से अध्यात्मिक कारण है। और इनके गूढ़ तत्व को अगर जानने की कोशिश करेंगे तो बहुत हद तक वैज्ञानिक भी है।

एक सत्र का परिचालन करने में विभिन्न पद के लोग होते हैं जिनके द्वारा एक सत्र का सुंदर रूप से परिचलन होता है। सत्र के मूल सत्राधिकार है उनके बाद मालाधारी,गायन,बायन,सूत्रधार, मुक्तियार,मेधि,पाचँनि और मुखियाल आते हैं। इन सबके नेतृत्व में एक सत्र परिचालित होता है।

नाम प्रसंग में बैठने के-अन्य नियमों के अंदर और एक नियम हैशंकरदेव उत्तर दिशा - की ओर बैठते है, माधवदेव दक्षिण दिशा की ओर, पश्चिम दिशा की ओर पुरुषोत्तम बैठते है एवं चतुर्भुज पूव दिशा की ओर। इसके अलवा यह भी प्रचलित है कि शंकरदेव दिन में नामप्रसंग करते है और माधव देव रात में जिसके क-ारण प्रसंग के समय बैठने के भी नियम अलग अलग है।-

न सबके अलावा सत्र के लिए अपने बच्चे दान देने वाले नियम भी प्रचलित है। वर्तमान समय पर बरदोवा सत्र में यह प्रथा बंद है परंतु बहुत सालों तक यह प्रथा प्रचलित थी। असम के विभिन्न सत्रों में यह प्रथा अब भी प्रचलित है। दान देने वाले नवालिकों को सत्रीया परम्परा से शिक्षा प्रदान की जाती है। सत्रीया शिक्षा पद्धति में मूलतः सांस्कृतिक और धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाती है। परवर्ती समय पर इन्हीं बालकों में से

सत्राधिकार और सत्र परिचालन के अन्य पद के लोग परीक्षा के माध्यम से नियुक्त किया जाता है। ऐसे सत्रों को उदासीन सत्र भी कहा जाता है।

सत्र का अन्य एक नियम हैवस्त्र प्रदान करने का नियम। सत्र के सबसे उत्तम -माला -। इसे प्रदान करने वस्त्र प्रदान किया जाता है-भक्त को उनके आग्रह के हिसाव से माला मोह-के दौरान वे भक्त सांसारिक माया को छोड़कर यह मालावस्त्र धारण करते हैं । -वस्त्र प्रदान किया जाता है।-उनके गुरू के द्वारा ही उन्हें यह माला

सत्र परम्परा के अंतर्गत शरण लेने के नियम भी आते हैं। जो शंकरदेव के दिनों से ही चली आ रही थी।

चारि नाम

चारि कथा

चारि वस्तु

जीव को स्वर्ग प्राप्ति हेतु शरण लिया जाता है। शरण के एक साल बाद भजन लिया जाता है। गुरु को भगवान का स्थान देकर सत्रों तथा थानों में शरण लेने की परम्परा है। गुरु के शरण और उनका आशीष प्राप्त करते हैं। जिसके चलते 'गुरुकर'अथवा 'गुरु भोजनी'की परम्परा भी है। सामन्य प्रयोजन की सामान जैसे वंती(दीया), गामोछा, धोती, चावल, तेल, गोवाआदि गुरु को भेट रूप में साल में एक बार दिया (पान-तम्बोल)दंद-जाता है। वर्तमान में भी सत्रों में यह परम्परा है। सत्राधिकार को तथा लोग अपने गुरु । सबसे पहले माधवदेव ने शंकरको गुरु कर देते हैंदेव को गुरुकर दिया था। इसमें अन्य चीजों के अलावा एक मूल्य भी दिया जाता है जिसकी राशि है सिर्फ दौ रूपया। यह राशि माधव देव के समय से चली आ रही है।

सत्र के उत्सव सत्र में विभिन्न उत्सवों का पालन किया जाता है। होली अथवा फाल्गु -व की परम्परा भी सत्र परम्पउत्सरा के अंदर ही आतीहै। जिसके कारण बड़े आद्मबर के साथ इसको फाल्गुन के महिनें में असम में तथा बरदोवा एवं असम के सभी सत्रों में इसे मनाया जाता है। इसके साथ(बरगीत)मात-गीत (सत्रीया नृत्य) साथ नाच-, नाम-प्रसंग, खोलबादन, भाउना इत्यादि सत्रीया परम्परा के अंतर्गत ही आते है। श्रीमंत शंकरदेव ने एक जैसी नीतिसत्र परम्परा "नामघर" नियम ही सभी सत्रों के लिए बनाए।-

के सबसे महत्वपूर्ण अंग है। सत्र परम्परा में सबसे पहले सत्र आते हैं, उसके बाद नामघर, गोसाई घर और अंत में आते है थापना इन सबके अलगमहत्व है अलग-परंतु यह सभी भगवान भक्ति का प्रतीक है। वर्तमान समय पर नामघरों के द्वारा ही सत्र की परम्पराओं को आगे बढ़ाया गया है।गोसाई घर और थापना लोगों के घरों में रहते हैं। नामघर समाज के सभी लोगों के लिए होता है। यह एक सामाजिक संस्था है।

फाल्गु उत्सव के साथथ वर्तमान समय में बरदोवा तसा-था अन्य सत्रों एवं नामघरों में पालनाम, अम्बुवाची, भाद्र महीनें में गुरू किर्त्तन, माधवदेव की तिथि, शंकरदेव की तिथि, श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी,आदि का पालन किया जाता है। रास उत्सव एवं भाउना परम्परा की सृष्टि भी श्रीमन्त शंकरदेव का महत्वपूर्ण अवदान है। भाउना परम्परा साधारण लोगों को मनोरंजन देने के साथसाथ भागवत और शास्त्र के महत्व को भी -लोगों तक पहुचाती हैं। भाउना की शुरुआत सुत्रधार करते हैं।

'बरगीत' की सृष्टि असम तथा भारतवर्ष के लिए शंकरदेव के द्वारा दिया गया महत्वपूर्ण अवदान है। सत्रों में भी सुबह के प्रसंग करते समय भक्त बरगीत से ही शुरू करते है-

तेजरे कमलापति

परभाते निंद

तेरि चांद मुखपेखू

अ' उथरेगोविंद ....

अर्थात यशोदा माता भगवान कृष्ण को जगाती है और कहती है कि है कृष्ण सुबह की " ।"के लिए सब व्याकुल है नींद का त्याग करो। तुम्हारे चांद जैसे मुहँ को देखने

इसी प्रकार प्रत्येक समय और परिस्थिति के अनुसार सत्रीया परम्परा का अलगअलग --रूप प्रचलित है। शंकर देव बलिविधान तथा यज्ञ का समर्थन नहीं करते थे। वे हत्या हिंसा के विरोधी थे। मंदिरों में चलने वाले वलि विधान को मानने से उन्होनें इन्कार या एवं इसके उपरांत लोगोकिं को वैष्णव धर्म के महत्व को समझाया। किस प्रकार भगवान की प्राप्ति केवल भागवत के पाठ और नामकिर्त्तन के माध्यम से हो सकती है -कीर्तन के माध्यम से भगवान की -उसको उन्होने साधारण लोगों तक पहुचाया। श्रवण

की कोशिश की प्राप्ति के महत्व को लोगों तक पहुचाने, जिसमें ब्राह्मणों के साथ उनके विवाद भी हुए। परंतु अंत में जीत शंकरदेव की ही हुई।

श्रीमंत शंकरदेव का पास के कचारी लोगों -वर्ष की उम्र में भूंईआ परिवार और आस 67 ,में विवाद हुआ। कचारी लोगों ने शंकरदेव को वैष्णव धर्म के प्रचार में बाधा पहुँचाई सके चलते शंकरदेव हमेशाजि के लिए बरदोवा छोड़कर चले गये और असम के अन्य स्थानों में सत्र और नामघरों की स्थापना करके नामकीर्तन करने लगे। परंतु असम - प्रसार होनेवाले वैष्णव धर्म-तथा भारतवर्ष में वर्तमान में प्रचार, सत्र परम्परा की शुरुआत वटद्रवा से ही हुई जो धीरेधीरे असम-, भारतवर्ष और परवर्ती समय में विश्वभर में छा गया। नामघर की प्रतिष्ठा, भाउना, बरगीत,भटिमा, नामकिर्त्तन तथा ब्रजबोली - भाषा जैसे विभिन्न चीजों का दान शंकरदेव द्वारा ही असमवासियों को मिला। सात र्तन करते हैं। जहाँ की-वैकुंठ की शक्ति के समान बरदोवा थान है। जहाँ सभी लोग भजन गुरुजन अर्थात शंकरदेव का जन्म हुआ थावह अत्यंत पवित्र भूमि मानी गई है। इसी , के बारे में नीचे की पंक्ति में बताया गया है।

सप्त वैकुंठर शक्ति बरदोवा थान।

तथाते रहिला सवे करिया किर्त्तन॥

यौत आसि गुरुजना भोइला अवतार।

अन्य भूमि कोनसम होइव बरदोवा र॥

अर्थात सात वैकुंठ की शक्ति बरदोवा थान में है। जहाँ सभी नामकीर्तन करते हैं। यहीं - शंकरदेव के अवतार आज भी है। अन्य किसी भी भूमि की तरह यह भूमि आम नहीं है।

<u>संदर्भग्रंथ</u>

1. बरदोवा आलिपुखुरीर संक्षिप्त परिचय - गजेनराजखोवा ,प्रकाशनवर्ष - प्रथमप्रकाशन - जनवारी , 1997
2. बरदोवात बचरतो आरु आइसकलर दिहानाम ,गाजेनराजखोवा , प्रकाशनवर्ष - प्रथमप्रकाशन -2001
3. बरदोवा रशिल्पवस्तु-डॉ.नरेन कलिता

साक्षात्कार

1. डेका सत्राधिकार हेमकांत महंत ,दिचियालसत्र , नगाँव
2. गजेन राजखोवा ,बरदोवा , नगावँ

पाद टिप्पणी-

1. नाम धर्म - भगवान की पूजा एवं प्रार्थना
2. सत्र - उपासना स्थान
3. बरदोआ - असम के नगांव जिले में स्थित श्रीमंत शंकर देव का जन्मस्थान
4. वटद्रवा - बरदोआ का ही अन्य एक नाम
5. लोहित - ब्रह्मपुत्र नदी
6. हरिनाम - भगवान का नाम
7. सत्राधिकार - सत्रों में रहने वाले मूल व्यक्ति
8. कचारी - यह एक असम के जनजाति है।

कबीर : एक विलक्षण व्यक्तित्व

स्मिता साह
शोधार्थी हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय
8486439830
smitasah15@gmail.com

भारतीय संत परम्परा या भक्ति आन्दोलन में एक विलक्षण व्यक्तित्व धारण किए हुए जिस संत का उदय हुआ , वह कबीरदास है । विलक्षण इस अर्थ में कि शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो जो मानवहित में हो, और जो उनके काव्य में न हो । मानव हितकारी और मानवता के घनघोर पक्षधर है कबीर। कबीरदास मनुष्य के विकारों को दूर करने वाले थे । समुच्य संत साहित्य में मानवता का बीज देखा जा सकता है । इनके मानवता के निकट होने का एक कारण और यह बताया जा सकता है, कि संत समाज के अधिकांश कवि उस समाज से आते हैं , जो एक तरह से समाज के निचले तबके के अंतर्गत आते हैं। कोई नाई है, कोई जुलाहा है, कोई चमार है , कोई जाट, तो कोई खत्री । इन सभी संतो ने कहीं न कहीं अपने आस - पास मानवीय मूल्यों का ह्रास होते हुए देखा था , इसलिए वे उसके निकट जान पड़ते हैं । संत साहित्य पर रामविलास शर्मा लिखते हैं-

“ संत साहित्य का सामाजिक आधार क्या है ? इसका सामाजिक आधार जुलाहों , कारीगरों, किसानों और व्यापारियों का भौतिक जीवन है । संत साहित्य भारतीय संस्कृति की आकस्मिक धारा नहीं है । यह देश की विशेष सामाजिक परिस्थितियों में उत्पन्न हुई थी । इसलिए यह एक भाषा या एक प्रदेश तक सीमित नहीं रही । उसका प्रसार श्रीनगर से कन्या कुमारी तक , गुजरात से बंगाल तक हुआ था । यह इस देश का सबसे विराट सांस्कृतिक आन्दोलन था जिसकी जड़े दूर - दूर गांवो तक पहुंची थी । ” ' देखा जाय तो समुच्य संत साहित्य में कबीर का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है ।

भारतीय वाङमय में सर्वाधिक पढ़े और कोट किए जाने वाले कबीर हैं । कबीरदास की दृष्टि पर किसी प्रकार का संदेह करना निहायत ही अपनी मूर्खता सिद्ध करने जैसी है ।

मानवता की आधारशिला रखने वाले कबीर पहले संत है। जिस वर्गहीन और शोषण मुक्त समाज की कल्पना कार्ल मार्क्स आदि विद्‌वानों ने आधुनिक काल में की । उसके प्रबल पक्षकार के रूप कबीरदास मध्यकाल में ही दिखाई देते हैं। कबीर के समय में या ठीक उसके पहले विश्व के कई देशों में ' रेनेसा' आ रहा था । जिसकी मूल विशेषता मानवता को ऊपर उठाना था । किन्तु ऐसा कहना कि कबीर पर उसी जागरण का प्रभाव है जो पश्चिम के देशों में उदय हो रहा था सर्वथा भूल होगी । भारतीय समाज और पश्चिमी समाज में आज भी भिन्नता है और कल भी थी । यहाँ भिन्नता को दर्शाना मेरा लक्ष्य नहीं है । किन्तु धर्म की आड़ में हर जगह शोषण और दमन होता रहा है । अगर यह नहीं होता तो नवजागण में धर्म - कर्म और मानवता की कल्पना शायद नहीं हई होती । यहाँ पर यह मान लेना भी गलत होगा कि धर्म को धारण करने वाले सभी लोग वैसे होते हैं । धर्म वही होता जो सबको सन्मार्ग पर ले जाए । कबीर सबके उत्थान से उत्थान मानते हैं । उनकी बातें मनुष्य को जोड़ने की ओर संकेत करती है । मनुष्य को तोड़ने वाले व्यक्ति को कबीर साहब जगह - जगह फटकारते नजर आते हैं । कबीर धर्म , संप्रदाय , समाज के ठेकेदार को इसलिए फटकारते हैं , ताकि मनुष्य में मनुष्यता बची रहे । मानवता को बनाए रखने के लिए कबीर लिखते हैं :

“कबीर आप ठगाइये , और न ठग्या कोई ।

आप ठग्या सुख उपजै , और ठग्या दु:ख होत ॥“

कितने आसान शब्दों में कितनी बड़ी बात कबीर कह देते हैं । यह विलक्षण व्यक्तित्व धारण करने वाला ही कर सकता है । कबीर खुद को ठगवाने की बात करते हैं । वे कहते हैं खुद ठगे जाने पर सुख मिलता और दूसरों को ठग देने पर दु:ख । यह कितनी बड़ी उदारता है । वास्तव में खुद के साथ कुछ हो जाने पर उतना बुरा नहीं लगता जितना किसी दूसरे के साथ होने से बुरा लगता है । यह बात सभी को हमेशा याद रखनी चाहिए । यही भाव मानव की मानवता को बचाए रखने में सक्षम है । अगर हम देखे तो भारतीय नवजागरण के वे सारे मूल तत्व जैसे मानवतावाद , सामंतवाद

विरोध , धार्मिक सत्ता का विरोध , समाज सुधार , समानता , वाह्यडंबरों का विरोध , जाति प्रथा का विरोध , नवीन संस्कृति , नवीन जीवन शैली आदि सभी कबीर और अन्य संतों के साहित्य में विद्‍यमान है । भाषा के क्षेत्र में संस्कृत , अपभ्रंश को छोड़कर लोक भाषा को स्थान दिया । इस तरह से देखे तो कबीर आदि संत कवि विलक्षण प्रतिभा के धनी थे ।

बौद्ध , नाथ , सिद्ध एवं संत साहित्य, अपने समय और समाज में फैले आचार - विचार की जो विषमता थी उससे ही वे उदय हुए माना जा सकता है । बौद्ध , नाथ एवं सिद्धों ने जिस प्रकार जाति , धर्म एवं समाज में फैली कुरीतियों का विरोध किया, ठीक ऐसा ही कबीरदास भी करते हैं । जिस तरह रूढ़िवादिता और धर्म का विरोध सहजयानी करते थे । वैसा ही कबीर के काव्य में भी देखा जा सकता है ।इस कारण एक तरफ वे लोग हैं, जो कबीर के काव्य में नाथ , बौद्ध , सिद्ध आदि संप्रदाय का होने का तर्क देते हैं , तो दूसरी तरफ वे लोग है जो इसे नकारते हैं और यह नहीं मानते हैं कि कबीर पर सीधा सीधा प्रभाव नाथ , बौद्ध , सिद्ध आदि संप्रदाय का है । कबीरदास अपनी तरह से अपने समय - समाज को देखते होंगे और अन्य संप्रदाय के विद्‍वान अपनी तरह से । कबीर का संबंध सीधे लोक से था । वह लोक जिसमें वे खुद रहते थे । अपने रोजमर्रा के सुख - दुःख को उसी समाज में रहने वाले लोगों के साथ व्यतीत करते थे इसलिए कबीर , कबीर है ।

भारतीय समाज में कर्म की प्रधानता हमेशा से रही है । भारतीय धर्म ग्रंथ में सर्वाधिक लोकप्रिय श्रीमद् भगवत् गीता में भी कर्म को प्रमुख स्थान दिया गया है । कबीरदास भी कर्म के समर्थक है । उनका सम्पूर्ण जीवन इसी कर्म के इर्द - गिर्द दिखाई देता है। कबीर खुद जुलाहे समुदाय से आते हैं और वे जीवन पर्यन्त जुलाहे के काम में अपने आप को संलिप्त पाते हैं । उन्होंने कभी अपने कर्म को छोड़ कोई और कर्म अपनाने की चेष्टा नहीं की । चूँकि उस समाज का काम ही यही था और इसी पर उनकी आजीविका निर्भर थी । इसलिए वे भी अपने भाई - बंधु के साथ ही रहना उचित समझते थे । कबीरदास ने कभी भी किसी दूसरे व्यक्ति को ये नहीं कहाँ कि भाई तुम ज्ञान ध्यान में लगो । वे हमेशा यही कहते आये कि अपना कर्म करते रहो इसी में सब हैं। कबीरदास के कर्म के बारे में बलदेव वंशी लिखते हैं

" कबीर साहब अपने युग में इन सब बाहरी सामाजिक मूढ़ताओं को मूर्खताओं को देखा था और इनका प्रतीकार किया था। उन्होंने कर्म और श्रम की महत्ता को स्थापित किया था अपने जीवन में , अपने आदर्शों को ढाल कर दिखाया भी। किन्तु सोये हुए को जगाया जा सकता है , जागे हुए को कोई क्या जगाए। यानि जो जान बूझकर आंखे बंद किए सोने का बहाना करे उसे कैसे जगाया जा सकता है।"

कबीर का कर्म कितना महत्वपूर्ण है । बलदेव जी ने सही लिखा है कि जान बूझकर सोने वालों को कभी नहीं जगाया जा सकता। कबीर साहब के काव्य में मानव चेतना को जगाने से संबन्धित अनेक दोहे देखने को मिल जाते हैं । उनके सम्पूर्ण काव्य में अनेक पद ऐसे मिल जाएंगे जो मनुष्य को कर्म करते जाने की प्रेरणा देते है।

काम मिलावे राम कूं जे कोई जाँनै राखि ।
कबीर बिचार क्या करै , जे सुखदेव बोलै साखि ॥

कबीरदास के काव्य सम्पूर्ण मानव के लिए हित की बात करता है । वे प्रेत्येक मनुष्य में मनुष्यता को देखते थे । उनके लिए मनुष्य का मनुष्य रहना ही सही था । भक्ति की उपासना के लिए उन्होंने प्रेम को प्राथमिकता दी है । उनके काव्य में मानवता का रेखांकन लगभग हर जगह मिल जाता है । आदर्श उनके यहाँ सिर्फ दिखावा नहीं है। उनके अनेक पद जाति - पात , छुआ - छूत , धर्म संप्रदाय का खण्डन करता है । उन्होंने सम्पूर्ण मनुष्य के लिए सर्वथा साधारण मार्ग प्रशस्त किया है ।

प्रेम बिना जो भक्ति है , सो निज दम्भ विचार । उदर - भरन के कारने , जनम गंवायो सर ॥5

संदर्भ ग्रंथ

1 परम्परा का मूल्यांकन , रामविलास शर्मा , राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली , 1981 , पृ स . 45-46

2 कबीर ग्रंथावली , रामकिशोर शर्मा , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , 2006 , पृ . सं . 298

3 कबीर की चिंता , बलदेव वंशी , वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली , 2008 पृ . सं . 53

4 अकथ कहानी प्रेम की कबीर की कविता और उनका समय , पुरुषोत्तम अग्रवाल , राजकमल प्रकाशन , 2016 , पृ . सं . 371

5 कबीर जीवन और दर्शन , उर्वशी सूरत , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , 1980 , पृ . सं . 150

हिजम इरावत की कविताओं में युग चेतना
(विशेष संदर्भ- ' माँ की आराधना ')

शिप्रा कुमारी
शोधार्थी, हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय

हिजम इरावत मणिपुरी भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं। उनका जन्म 30 सितम्बर सन् 1896 को हुआ था। मणिपुरी भाषा के मूल कवि हिजम इरावत की रचनाओं को सिद्धनाथ ने ' माँ की आराधना ' नाम से अनुवाद किया है जिसमे हिजम इरावत ने अलग - अलग दृष्टिकोणों से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। हिजम इरावत का प्रथम काव्य संग्रह ' इमागी पूजा" है। 1987 में प्रकाशित इस काव्य संग्रह की कविताओं को इरावत ने सन् 1942-43 में जेल में रह कर लिखा था । वे मणिपुरी समाज के जननेता हैं। इन्होंने मणिपुर के सामाजिक , ऐतिहासिक , सांस्कृतिक , राजनैतिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए अनेक संघर्ष किए थे । इनके द्वारा रचित काव्य इन्हीं संघर्षो का प्रतिफलन है। इन पर गांधी जी के विचारों का प्रभाव भी दिखाई पड़ा था जिसके कारण ये ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध कर सके ।इरावत ने महात्मा गांधी से मिलने पर स्वाधीनता व स्वदेशी की भावना को और मजबूत बनाया। डॉ ० देवराज का कहना है कि

“ शिक्षा के प्रसार , सामाजिक - धार्मिक रूढ़ियों के विरोध तथा निर्धन लोगों के दुःख दर्द को समझ कर उसे दूर करने के प्रयास के बिना कोई भी स्वाधीनता अधूरी ही है । "

हिजम इरावत को अपने मातृभूमिं से अटूट लगाव था । उन्होने जब महिला सम्मेलनी मंच से आवेशित होकर भाषण दिया, तो उनको राजद्रोही जो उस समय का देश द्रोह माना जाता था, कहा गया । देश द्रोही घोषित कर इरावत को जेल भेज दिया गया । जेल में रहकर उन्होंने अपनी मातृभूमि को याद करके बड़ी ही हृदय स्पर्शी मर्मांतक कविताएँ लिखीं। माँ की आराधना नामक कविता की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है

"चिपटा कर प्यार से
अपनी गोद में
सम्मुख कर दिया अमृत
उस अमृत से शिशु का
नहीं भरा मन , नहीं भरा उस स्वार से ! "

कवि इन पंक्तियों में अपने देश से दूर जेल में रहकर अपनी जन्म भूमि माँ धरती के प्रेम को याद कर रहे हैं और कह रहे हैं कि मेरा मन उस अमृत रूपी स्वाद से नहीं भरा जिसे तुमने अपने प्रेम रूपी गोद मे मेरे सामने रख दिया था ।

हिजम इरावत को इम्फ़ाल सेंट्रल जेल से वर्तमान बाँग्लादेश के सिलहट नामक जेल में भेजा गया। वहाँ उनके बैरक में किसी अपराधी को भेजे जाने पर वे उसे अतिथि के समान स्वागत करते औऱ प्रसन्न भाव से उसकी सेवा करते था । जेल से मिले भोजन में से उसको भी भोजन कराते थे । अतिथि के आने की ख़ुशी का वर्णन ' रमेश ' नामक कविता में इस प्रकार करते हैं

“अचानक आ पहुँचा एक अतिथि
श्री हट्ट जेल की मेरी बैरक में ।
था रात का समय ,
था मैं एकाकी
खुशियों से भर
की सेवा अतिथि की खूब ।

हिजम इरावत ने मणिपुरी समाज की उन्नति के लिए तमाम ऐसी युक्तियाँ अपनाई होगी जिससे मणिपुरी समाज का विकास हो सके। लेकिन अँग्रेज सरकार अपनी सत्ता कायम करने के लिए हिजम इरावत के किसी भी कार्य का समर्थन न कर बल्कि उन्हें अरोपित ठहराकर जेल में बंद कर दिया। वर्तमान समय से यदि तुलना की जाए तो स्थितियाँ कुछ आज भी वैसी ही दिखाई पड़ती है । उनमें थोड़ा परिवर्तन हुआ है

लेकिन आज भी भ्रष्टाचार की नीति खत्म नहीं हुई है। इरावत को अपने देश , राष्ट्र व राज्य की प्रकृति से अत्यंत लगाव था । हिजम इरावत को अपने देश व राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिए राजनीति अथवा कूटनीति का सहारा जरूर लेना पड़ा होगा । अंग्रेजों ने मणिपुर के महाराजाओं को अपने हाथों की कठपुतली बना लिया और मणिपुर राज्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया । हिजम इरावत के ' ये ही है ' कविता में अंग्रेज सरकार द्वारा किए गए निकृष्ट कार्यों का उल्लेख इस प्रकार है

" ये ही है प्राक प्राक जलाने वाला
मार डाला , मार डाला कहा जाता जिसके लिए
न खाते चैन
न सोते चैन
बेहाल तड़पते लोग । ”

इस कविता में इरावत ने अंग्रेज़ सरकार की बर्बरता का वर्णन किया है । अंग्रेज़ सरकार की बर्बर सत्ता ने मणिपुरी जनता का सोना खाना हराम कर कर रखा था । भूखे लोग तड़प रहे थे । जिसे देख कर हिजम इरावत के संवेदनशील हृदय को आघात पहुँचा । इरावत ने अंग्रेज़ द्वारा किए जा रहे सामंतवादी षड्यंत्रों को पहचान लिया और प्रण किया कि मणिपुरी समाज को इन षडयंत्रकारियों से मुक्त कराना है, जिससे मणिपुरी जनता स्वतंत्र हो सके । इरावत के लिए मणिपुर की एक-एक वस्तु रत्न के समान था जिसे बचाने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया। अंग्रेज़ो द्वारा मणिपुर की भूमि पर अपना वर्चस्व स्थापित करना कठिन नहीं रह गया था।विकास के नाम पर जो भी कार्य हो रहे थे वे भी आम जनता के लिए किसी काम के सिद्ध नहीं हो रहे थे। ' विकास ' कविता में कवि ने शिक्षाके नाम पर रचे गए षडयंत्रों का उल्लेख इस प्रकार करते हैं

“ विकास क्या यहीं है
जो है चर्चित लोगों में ? यह कैसी विद्या है
आधुनिकतम जगत की ।
बंधे पैर लोग करते पीड़ा मुक्त लोगों का

कैसे पकड़ पाएँगे

स्पर्श किया पृथ्वी का खम्बा ने पहले नहीं रोकने वाला कोई "

इस कविता में कवि ने विकास के नाम पर आधुनिक ' शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों का उल्लेख किया है जिसे अंग्रेजों ने विकास का चोला पहनाना चाहा पर विकास की कोई ठोस व्यवस्था नहीं की गई। कवि ऐसी शिक्षा व्यवस्था से खुश नहीं था । जिसने शिक्षा के नाम पर व्यक्ति को किसी के नीचे दब कर रहना पड़ता है । और नीचे दबे पैरों से ही मुक्त घूम रहे लोगों का पीछा करते हैं । जिनको पकड़ पाना मुश्किल था। हिजम इरावत के कविता संग्रह को हिन्दी भाषा में सिद्धनाथ जी द्वारा अनुवाद किया गया है जिसमे विविध विषयों पर लिखी गई कविताएं शामिल है । इरावत किसान एवं श्रमिकों पर भी कविता लिखते हैं । किस प्रकार श्रमिक कड़ी धूप में कार्य करता है और सेठ साहूकार गाड़ियों में बैठ कर मौज करते हैं । इसी यथार्थवादी दृष्टिकोण का चित्रण इरावत ने ' वे ही हैं ' कविता में किया हैं

" ऊँचे पर्वत के

लाल माटी वाले रास्ते के किनारे कुछ लोग तोड़ रहे पत्थर हथौड़े सेड़े ठक ठक

गर्मी की कड़ी धूप में ।

पास में पेट भरे मोटर

जा रहे ऐंठते हुए लगातार ।

दूर , दे रहा पहरा एक इंजन ।

कुछ लोग देख कर चले गए ।

उनके कुत्तों ने भी एक झलक देखी "

इस प्रकार इरावत ने श्रमिकों के अथक परिश्रम पर दु:ख प्रकट किया है। ईश्वर ने किसी को तो गाड़ी बंगला दे दिया । लेकिन किसी से इतनी मेहनत करवाया कि वह दो वक्त की रोटी के लिए पूरा दिन कड़ी धूप में परिश्रम करता रहता है ताकि उसका और उसके परिवार का पेट भर सके । हिजम इरावत की ' वे ही हैं ' कविता सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की वह तोड़ती पत्थर की याद दिला जाती है। भिन्नता सिर्फ इतनी है कि निराला की कविता में कड़ी धूप में सड़क के किनारे हथौड़े से पत्थर फोड़ रही

मजदूर के रूप में स्त्री है । लेकिन इरावत की कविता में पर्वत के किनारे सड़क पर कड़ी धूप में हथौड़े से श्रमिक पत्थर फोड़ रहे हैं । हिजम इरावत को जेल से छूटने के बाद मणिपुर में प्रवेश नहीं मिला, तो वे कछार के किसानों से जा मिले और कछार किसान आंदोलन प्रिय नेता बन गए और किसानों के लिए उन्होने ' अधिक अन्न उपजाओ ' आंदोलन भी चलाया । हिजम इरावत ने किसानों के संघर्षशील जीवन का यथार्थ का चित्रण अपनी कविताओ में किया है। संघर्ष के चलते उसकी जिंदगी भी छीन ली गई। मणिपुर के किसानों की दशा भी कुछ अच्छी नहीं थी । जब किसान के पास धान पैदा होता था तो धान की कुटाई करने वाले बड़े व्यापारी उस धान को बाहर निर्यात कर देते थे । जिसके कारण यहाँ के स्थानीय लोगों को चावल नहीं मिलता था। इसलिए मणिपुरी जनता आक्रोशित होकर उनके बंद दुकानों को खोलने के लिए कहा और चावल को बेचने की मांग करने लगी । डॉ देवराज ने ' माँ की आराधना ' नामक कविता संकलन के ' इरावत : अनथक यात्रा का उत्कर्ष ' में कहते हैं कि “ रात को लाइश्रम कबोकलै देवी , लाइश्रम पीशक देवी , अमुबी अरिबम , चाओबीतोन , येवोम खोइम आदि महिलाओं ने व्यापारियों के यहाँ धान लेकर आ रही चार गाड़ियाँ पकड़ ली । ” 9 इस प्रकार देवराज जी के कथनों से यह साबित हो जाता है कि मणिपुरी समाज भी सामंतवादी समाज व्यवस्था का गुलाम था । अनेक राजनेताओं ने सामंतवादी समाज व्यवस्था को खत्म करने का प्रयास किया जिससे अब तक सावंतवादी , शोषणवादी समाज व्यवस्था बदलाव तो आया है लेकिन पूरी तरह से खत्म नहीं हुई है। हिजम इरावत ने ' एक स्वप्न ' कविता में जापान जिसे देश का शत्रु राष्ट्र माना जाता था उसने सुभाष चंद्र बोस को सम्पूर्ण सहयोग दिया । और ब्रिटेन जिसे मित्र राष्ट्र कहा जाता था वह छली एवं विश्वासघाती निकला । इरावत ने इस कविता में युद्ध का यथार्थ वर्णन इस प्रकार किया है

चलकर निधि के उस पार से पूर्वी भारत वर्मा के रास्ते
लगता , पहुँच गए स्वर्ण- देश मणिपुर ।
बमों तोपों के गोलों से
आदमी टुकड़े टुकड़े हवा में ।
हवा द्वारा लाई गई खून की बूंदें

मेघ बन बरस रही धरती पर । ”

इस प्रकार कवि ने स्वर्ण देश मणिपुर की प्रकृति पर हो रहे भीषण नर संहार का वर्णन किया है जहाँ बमों और तोपों के गोले लेकर बर्मा के रास्ते जापानी सिपाही स्वर्ण भूमि मणिपुर पहुँच चुके हैं । भीषण युद्ध में मणिपुर की भूमि पर आदमी के शरीर के टुकड़े एवं रक्त की कणिकायें बादल बनकर बरस रही हैं ।

मणिपुर धर्म व संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है । यहाँ की स्थानीय स्त्रियाँ के वात्सल्य को कवि ने बड़े ही मार्मिक रूप में चित्रित किया है । जिससे मणिपुरी स्थानीय मैंते नारी का अपने संतान के प्रति प्रेम का पता चलता है । हिजम इरावत के शब्दों में

“ संतान- वत्सला मेते नारी !
सुख - दुख , पाप - पुण्य में मनुष्य बनाओ संतानों को
मत बैठाओं यों ही अपनी गोद में । ”

इस प्रकार इरावत ने मणिपुरी मैतें स्त्रियों को संबोधित कर यह कविता लिखी हैं । कवि का कहना है कि पुत्र स्नेही मणिपुरी मैतै स्त्रियाँ अपने बच्चों को सुख-दख या पाप - पुण्य में मनुष्य जैसे शिक्षित करो उन्हें सिर्फ अपनी रक्षा के लिए अपने प्रेम रूपी गोद में मत बैठाओ। इस प्रकार इरावत ने अपनी कविताओं के माध्यम से मणिपुरी समाज के वास्तविक समस्याओं एवं संकटों से अवगत कराया है । उन्होंने अपनी कविता में मणिपुरी के लोगों के संघर्ष को दिखाया है । किस तरह प्रकृति के साथ जीवन यापन करने वाले लोगों को बाहय रूप से क्षति पहुँचती है उसका वर्णन अपनी कविताओं में करते हैं । इरावत ने समाज को परतंत्रता , सामंतवादी व्यवस्था से मुक्त करने के लिए तमाम योजनाएँ और आंदोलन भी किए । वे ब्रिटेन और जापान के युद्ध का वर्णन भी अपनी कविता में करते हैं । क्योंकि युद्ध के दौरान युद्ध में आम जनता ही मौत के शिकार होते है । स्त्री के संघर्ष का चित्रण भी बहुत मार्मिक रूप में किया गया है । इस प्रकार मणिपुर के जननेता इरावत ने अपना पूरा जीवन सामाजिक योगदान में लगा दिया । वे सिर्फ मणिपुर में ही नहीं बल्कि भारत वर्ष में एक मिसाल के रूप में पूजनीय

हैं । इस तरह हिजम इरावत मणिपुरी साहित्य में अपने सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों के योगदान के कारण विशेष स्थान रखते हैं ।

संदर्भ ग्रंथ

1. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 75
2. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 2
3. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 69
4. मणिपुरी कविता मेरी दृष्टि में - डॉ ० देवराज , पृष्ठ 68
5. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 25
6. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 31
7. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 23
8. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 79
9. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 54
10. माँ की आराधना - अनुवादक सिद्धनाथ प्रसाद , पृष्ठ 67

ग्लोबल गाँव की प्रतिनिधि स्त्रियाँ

डॉ. एलाङबम विजय लक्ष्मी
उरिपोक, निङथौखोङजम लैकाइ
इम्फाल-795001, मणिपुर
मोबाइल न.-09856138333
email-vningthoukhongjam@gmail.com

आज हम चाहे अनचाहे ऐसे युग में जी रहे हैं, जब सारा विश्व बाजार में तबदील हो चुका है। पूँजीवाद की परिणतिजिस रूप में हुई, उसे वृद्धपूँजीवाद कहा गया, जिसमें भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई। भूमण्डलीकरण अंग्रेजी शब्द 'ग्लोबलाइजेशन' का पर्याय है।वैसे तो 19वीं शताब्दी को भूमण्डलीकरण का काल कहा गयाहै। वर्तमान मेंइसे अनेक संभावनाओं के साथ ग्रहण किया जा रहा है।"भूमण्डलीकरण का तात्पर्य कई अर्थों और प्रभावशाली एक परिघटना के रूप में समझा जाने लगा है। इसमें कई चीजों का समावेश रहता है। वित्तीय पूँजी का भूमण्डलीकरण, आर्थिक उदारीकरण,रोजगारों की कमी, विश्व बैंक,अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोश, विश्व व्यापार संगठन, तीसरी दुनिया पर हमला आदि।"[1] सैधान्तिक अवधारणा की दृष्टि से ग्लोबलाइजेशन शब्द का प्रयोग अमरीका निवासी चार्ल्स ताजे रसेल ने किया, माना जा सकता है, जिन्होंने 1897 में एक प्रसंग में कोर्पोरेट जाइंट शब्द का प्रयोग किया था। रसेल द्वारा प्रयुक्त यह शब्दावली जल्दी ही चर्चा के केन्द्र में आ गया औरकहा जा सकता है कि इसी ने भूमण्डलीकरण की अवधारणा को जन्म दिया।

इस अवधारणा को स्पष्ट करते हुए "ग्लोबलाइजेशन शब्द का पहला प्रयोग थ्योडोर लेविट के द्वारा 1983 में प्रकाशित हारवर्ट बिसनेस रिव्यू में प्रथम बार किया गया और बीस साल से भी कम समय में यह शब्द बौद्धिक जगत में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने लगा।"[2] चाहे भूमण्डलीकरण शब्दावली का प्रयोग बहुत पुराना न हो, पर इसने मानव जीवन के हर पक्ष को प्रभावित किया है। इसे उत्तराधुनिकता से प्रेरित एक परिघटना भी कहा जा सकता है। द कॉन्साइंस ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ करेंट इग्लिश में ग्वोबलाइजेशन शब्द का अर्थ लिखा है- 'मेक ग्लोबल',[3] अर्थात वैश्विक होने की प्रक्रिया को ही भूमण्डलीकरण कहा जा सकता है। इस शब्द से संकीर्णता से ऊपर उठकर

सम्पूर्ण विश्व के एक होने का अर्थ ध्वनित होता है। भूमण्लीकरण शब्द "'ग्लोबलाइजेशन' शब्द के आधार के रूप में अंग्रेजी से आया है, जो एक आर्थिक और सामाजिक प्रणाली से संबंधित एक अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क के उभरने को संदर्भित करता है।"[4] विज्ञान और तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व एक गाँव बन चुका है, ऐसे में स्वाभाविक है एक देश के समाज-सांस्कृतिक, व्यापार वाणिज्य का प्रभाव दूसरे देश की स्थितियों पर पड़े। "थॉमस लारसन के अनुसार वैश्वीकरण दुनिया के सिकुड़ने, दूरियों को कम करने और चीजों की निकटता की प्रक्रिया है। यह दुनिया के एक हिस्से पर किसी भी व्यक्ति के बढ़ते हुए संबंधों की उपादेयता के लिए दुनिया की दूसरी तरफ पाए जाने वाले व्यक्ति के लिए अनुमति देता है।"[5] भूमण्डलीकरण शब्द को स्पष्ट करने के लिए जो भी विचार या मत प्रस्तुत किए गए हैं, उनसे विश्व भर के देशों में आपसी संबंधों में विस्तार के साथ संस्कृति, अर्थ-व्यवस्था, व्यापार वाणिज्य में प्रगति के लिए एक-दूसरे के विकास में सहयोग देने की बात की जाती है, परन्तु ये अपेक्षाएँ कहाँ तक पूरी होंगी, यह एक बड़ा सवाल है, क्योंकि "संसार को एक करने की इसकी दृष्टि पूरी तरह एक आयामी है। यह सिर्फ व्यापार के लिए दुनिया को एक करना चाहती है, बाकी सारी बातें आनुषंगिक है ।"[6] भूमण्डलीकरण से सम्पूर्ण विश्व के हित और सबके सुख का जो अर्थ ध्वनित होता है, उसके विपरीत यह मल्टी नेशनल कम्पनियों तथा पूँजीवादी प्रतिष्ठानों के हितों की रक्षा करते ज्यादा प्रतीत होता है।

वैश्विकरण के परिणाम के रूप में अविकसित तथा विकासशील देश विकसित देशों के लिए कच्चे माल का भण्डार और खुली मण्डी के रूप में उपलब्ध हो जाते हैं। "जिस प्रकार के ग्लोबीय प्रभावविकसित देशों की खुली मण्डी में दाखिल होने से पड़ रहे हैं, ये और ज्यादा विस्तार पाएँगे, इन्हें आम आदमी भी रोक नहीं पाएगा पर सावधान उसे रहना होगा, क्योंकि हमारे नेता अपने सियासी लाभ के लिए उच्च वर्ग से साँठ-गाँठ करेंगे और वे देश को गिरवी ही नहीं, बेचने तक भी आ सकते हैं। अतः आम आदमी को यह बात समझ में आनी चाहिए कि उसकी सारी कमाई 'खुली मण्डी' के विकसित देश ठग लेंगे।ऐसी संभावना है कि भारत की आम जनता को जीने के लिए बुनियादी आवश्यकताएँ भी पूरी न हो और वह 'मरता क्या न करता' के अनुसार ऐसे ग्लोबीय प्रभावों का ऐसा विरोध करें कि इतिहास की दिशा ही बदल जाए और कोइ ऐसा अप्रत्याशित परिवर्तन आए कि देश अपने बलबूते अपनी प्रभुता स्थापित कर लें। यदि

ऐसा कुछ नहीं होता तो जनता को गरीबी का नरक भोगना पड़ेगा। उसके सामने एक ही रास्ता होगा कि जनता विकसित देशों की तथा उच्च वर्ग की लूट खसोट से अपने खून-पसीने की कमाई को अपने लिए संभाल सके, चाहे उसके लिए उसे कितना ही संघर्ष क्यों न करना पड़े। इस संघर्ष के लिए उसके पास संकल्प और चेतना का होना आवश्यक है। इस प्रकार की जागृत चेतना के बिना संघर्ष बेमानी हो जाता है।"[7] बाजारवाद ने छोटे से लेकर बड़े राष्ट्रों तक की आर्थिक नीतियों को बदल डाला। विश्व की आर्थिक शक्तियों ने कमजोर देशों खासकर तीसरी दुनिया के देशों को अपने बाजारों के दरवाजे उनके उत्पादकों और व्यापारियों के लिए खोलने को मजबूर कर दिया। बहुराष्ट्रीय कंपनी और उद्योगों तथा व्यापार को सरकारी हाथों से निकालकर निजी हाथों में दिए जाने की घटना ने पूरे विश्व को एक नई आर्थिक प्रक्रिया का हिस्सा बना दिया, जिसने समाज को भी प्रभावित किया और साहित्य को भी। यह कहना गलत नहीं होगा कि"पिछले एक दशक में वैश्वीकरण नामक घटना के बारे में बढ़ती चिंता देखी गई है। यह अकादमिक दुनिया में चिंता का स्रोत बन गया है।"[8]प्रत्येक विचारशील व्यक्ति के लिए भूमण्डलीकरण चिन्तन का विषय है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, साहित्य को भी इसने प्रभावित किया है। अतः साहित्य के क्षेत्र में भी इस विषय को आधार बनाकरअनेक रचनाएँ रची गईं, जिनमें मानव जीवन और समाज पर भूमण्लीकरण की प्रक्रिया तथा इसके संभावित परणामों की समीक्षा की गई है और इसका व्यक्ति जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया ।

रणेन्द्र द्वारा रचित 'ग्लोबल गाँव के देवता' एक ऐसा ही उपन्यास है, जिसमें भूमण्डलीकरण और उसके प्रभाव से उत्पन्न स्थिति और विकास के अन्तर्विरोध तथा उससे प्रभावित लोगों के जीवन-यथार्थ को व्यक्त किया गया है।इस उपन्यास में एक कथावाचक है, जो अपना अनुभव बताते हुए सीधे पाठकों से वार्तालाप करता है। उपन्यासकार ने कीकट प्रदेश के बरवे जिले में रहने वाली जनजातियों को अपने उपन्यास का उपजीव्य बनाया है।इन जनजातियों को असुर नाम से जानाजाता है। जंगलों के साथ जनजातियों का एक अटूट संबंध होता है। इन असुरों का जीवनयापन भी जंगलों के सहारे ही होता है। ग्लोबल गाँव के देवतागणों की नजर ऐसी जगहों पर रहती है,जहाँ प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हों और इसलिए ग्लोबल गाँव के ये देवता इस इलाके में पहुँच चुके हैं।जीवन के आधार जंगलों को आर्थिक विकास के नाम पर काटा

जाता है। देशी-विदेशी कंपनियाँ प्राकृतिक संपदाओं का बेहिसाब दोहन करती हैं।विकास के नाम पर उन्हीं के क्षेत्र को खोखला किया जाता है, फिर भी उनमें इतनी समझ नहीं कि कुछ करें। इस स्थिति का वर्णन उपन्यास में बहुत मार्मिक ढंग से किया गया है। जब कथा वाचक भौरापाट नामक क्षेत्र को देखकर कहता है, "मीलोंतक पसरे पहाड़ के ऊपर यह चौरस इलाकामन को और उचाट कर रहा था। छिटपुट जंगल बाकी खाली दूर-दूर तक फैले उजाड़-बंजर के खेत। बीच-बीच में वॉक्साइट की खाली खदानें। जहाँ से बॉक्साइट निकाले जा चुके थे, वे गड्ढे भी मुँह बाये पड़े थे।मानो धरती माँ के चेहरे पर चेचक के बड़े-बड़े धब्बे हों। कोई ढंग से बोलने बतियाने वाला नहीं। शाम होते ही सन्नाटा उतर आता।"[9]अपनी ही भूमि पर दूसरों के द्वारा अधिकार जमा लेने पर भी ये लोग कुछ नहीं कर पाते और खेतों-खलिहानों को बंजर होते ताकते रह जाते हैं। कुछ जनजातीय युवाओं द्वारा विद्रोह किए जाने पर या तो उन्हें सताया जाता है या फिर नक्सली करार देते हुए उनके विरोध को दबाने की कोशिश की जाती है। कुछ अवसरवादी चन्द पैसों के लालच में अपने ही लोगों के शोषक बन जाते हैं। ऐसे समाज में स्वाभाविक है सबसे अधिक मुसीबतों का सामना स्त्री को ही करना पड़ेगा। इस उपन्यास के तीन स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री पर पड़ने वाले भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के प्रभावों को दिखाया गया है।

उपन्यास का कथावाचक कोयलबीघा इलाके के सखुआपाट के एक स्कूल में मास्टर बनकर आता है। यहाँ आने के बाद वह असुर लोगों से मिलता है। तब उसे पता चलता है कि सदियों से किस तरह पूरा समुदाय अपने अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई लड़ रहा है। वैदिक युग में आर्यों के साथ इस वर्ग का संघर्ष चलता रहा। इस संघर्ष में उन्हें बार-बार पराजित होना पड़ा। इतना ही नहीं उन्हें मायावी और राक्षस का दर्जा दिया गया और लगातार जंगलों और पहाड़ों की ओर धकेल दिया जाता रहा। गणतान्त्रिक शासन व्यवस्था अर्थात जनता द्वारा,जनता के लिए और जनता के शासन में सर्वाधिकार जनता का ही होना चाहिए, पर विडम्बन है कि इसी व्यवस्था में जनता का शोषण भी सबसे अधिक होता है। अपने अधिकारों के प्रति सचेत न होने से आम आदमी लगातार शोषण की चक्की में पिसने को अभिशप्त होता है। अतः"जनतन्त्र का सबसे बड़ा आधार आम आदमी की जागृति है, वह हर ऐतिहासिक अनुभव से बढ़ेगी और इससे मानवीय मूल्य नए-नए रूपों में विकसित होते रहेंगे।"[10] इन मूल्यों को

समझने और समाजानुकूल बनाए रखने के लिए जन चेतना की आवश्यकता है। ऐसा न होने पर व्यक्ति और समाज का विकास की ओर अग्रसर होना मुश्किल हो जाएगा।

समाज के विकास में सबसे बड़ा बाधक अशिक्षा, अज्ञानता और दरिद्रता को माना जा सकता है। पहाड़ों, जंगलों और गाँवों में रहने वालेअधिकांश के जीवन का एक सच दरिद्रता है।तमाम लोगों की अनिवार्य आवश्कताएँ तक पूरी नहीं हो पातीं।आर्थिक स्रोतों पर जिन लोगों का अधिकार रहता है, उस पर काबिज़ रहने के लिए वे साम-दाम-दण्ड-भेद अपनाने से भी बाज़ नहीं आते। ऐसे में जो गरीब है, वह गरीब ही बना रह जाता है।किसी भी समाज में दरिद्रता याआर्थिक असमानता का कारण बताते हुए"प्रसिद्धअर्थसास्त्री अमर्त्य सेन ने यह उल्लेख किया है कि अनाज की कमी से अकाल नहीं पड़ते बल्कि गोदामों में भरा हुआ अनाज का वितरण न होने से सामाजिक व्यवस्था बिगड़ जाती है, जिसका परिणाम यह होता है कि बहुत सारे श्रमिक, दलित, किसान काल के गाल में समा जाते हैं इसलिए समयानुसार सभी को सुविधाएँ उपलब्ध कराने की व्यवस्था होनी चाहिए।"[11]यह तो हुई आदर्श की स्थिति, जो यथार्थ से बहुत दूर लगती है।वास्तविकता यह है कि अधिकारी और नेता गण के बीच ऐसी साँठ-गाँठ रहती है कि उनसरकारी माल पर वे अपना एकाधिकार समझने लगते हैं और जो वास्तव में जरूरतमंद हैं, उन तक कुछ पहुँचता नहीं है।कीकट प्रदेश के निवासी भी अधिकांश दरिद्र हैं।दरिद्रता के चलते तमाम परेशानियों से घिरे रहते हैं। जीवित रहना ही उनके जीवन का सबसे बड़ा सवाल है। ऐसा होते हुए भी बताया जाता है कि इस जनजाति की एक समाज-व्यवस्था हुआ करती थी, जिसमें महिलाओं को विशेष स्थान दिया जाता था। श्रम विभाजन के अनुसार समाज में दायित्वों का निर्वाह होता था, परन्तु भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप आर्थिक व्यवस्था में जो परिवर्तन आया,उसनेशहर ही नहीं ग्रामीण परिवेश और समाज- सांस्कृतिक व्यवस्था को भी बदल दिया।

समाज के वर्थमान परिदृश्य को देखकर ऐसा लगता है जैसे "भूमण्डलीकरण या वैश्विकरण का सिद्धांत उन लोगों को लाभान्वित कर रहा है, जो पहले से ही सुविधा सम्पन्न हैं। शेष समाज संघर्ष, कुठा और रोष के रूप में इसकी कीमत चुका रहा है। इससे एक राष्ट्र विशेष का पारिवारिक, जातीय एवं सामाजिक बोध भी प्रभावित हो रहा

है।"[12] किसी भी विपरीत स्थिति में सर्वाधिक प्रभावित होने वाला वर्ग है- स्त्री और बच्चे। असुर समाज में भी पुरुषप्रधान अन्य समाजों की तरह स्त्रियाँ ही सबसे अधिक शोषण की शिकार होती हैं। कथावाचक गाँव वालों से सुनता है कि एक समय था जब "महिलाएँ इस समाज में सियानी कहलाती थीं, जनानी नहीं।जनानी शब्द कहीं न कहीं केवल जनन, जन्म देने की प्रक्रिया तक उन्हें संकुचित करता, जबकि सियानीशब्द उनकीविशेष समझदारी- सयानेपन को इंगित करता मालूम होता।"[13] मणिपुरी में एक कहावत है, 'फल तोड़ने से ज्यादा उसे सहेज- संभालकर रखना ज्यादा महत्वपूर्ण होता है'। भारतीय समाज में सदियों से यह काम स्त्रियाँ ही करती आ रही हैं। समय के साथ विज्ञान के तमाम आविष्कारों तथा तकनीकि विकास ने अनेक रहस्यों को खोला है तो समस्यापरक नई स्थितियों का भी सामना करवाया है।

भौतिक विकास के विभिन्न संसाधनों के साथ समाजव्यवस्था में परिवर्तन स्वाभाविक है।उपन्यास में दिखाया गया है कि कोयलबीघा इलाके को बाक्साइड के लिए खोदा जा रहा है। अवैध खनन जारी है। देशी- विदेशी कंपनियों के कार्यकर्ता और अधिकारी सभी बाहर से आए हैं। उनके घरों में काम करने वाली स्त्रियाँ असुर वर्ग की स्त्रियाँ हैं। ये दलालों और ठेकेदारों की वासनाओं की शिकार होने के लिए अभिशप्त हैं। और दुःख की बात यह है कि इस समुदाय के पुरुष ही चंद रुपयों के लालच में ठेकेदारों के हाथों के खिलोने बनकर उनकी साध पूरी करते हैं।"खदान में मेठ, मुंशी, क्लर्क, अफसरों के डेरों में खटने वाली असुर युवतियों के रंग-ढंग देखते ही देखते बदल जाते। स्नो- पावडर, रंग, आलता, नकली जेवर से सजने लगतीं। सखुआपाट के अंसारी ठेकेदार की रखनी रामरति अकेले नहीं थी। वह छुतवा रोग की तरह पूरे पाट में फैल रही थी।"[14] उपन्यासकार ने यहाँ जिस स्त्री वर्ग को प्रस्तुत किया है वह असुर वर्ग की है, परन्तु प्रचलित रूढ़ियों के कारण भारत के सामाजिक मन में जो धारणा बन गई है उसके अन्तर्गत सारी स्त्रियों को असुर वर्ग में रखा जा सकता है। क्योंकि स्त्री केवल स्त्री है। चाहे वह महानगर में रहने वाली हो, चाहे गाँव में या फिर किसी कस्बे में। तमाम विकास और उन्नति के बावजूद भारतीय समाज में आज भी स्त्रियों की नियतिपूर्व स्थिति से ज्यादा भिन्न नहीं है। आलोच्य उपन्यास इस ओर सोचने पर मजबूर करता है।क्योंकि पढ़-लिख लेने, नौकरी कर लेने या आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने से ही स्त्री शोषण से मुक्त हो जाती हो, ऐसा नहीं है। उपन्यास की सलोनी को

देखकर ऐसा ही लगता है। वह शिंडल्को कंपनी की मुख्य शाखा में कार्यरत थी, परन्तु जब कोयलबीघा इलाके में विरोध शुरू हुआ और विद्रोहियों ने कंपनी का काम रोक दिया, तो उसे नियन्त्रित करने के लिए सलोनी का स्थानान्तरण सखुआपाट में करवा दिया। सलोनी को अपना परिवार चलाने के लिए नौकरी चाहिए थी और नौकरी में बनी रहने के लिए बॉस का कहना मानना ही था। इसलिए वह मेनेजर के हाथों का खिलौना बनकर रह जाती है।

एक कंपनी का मैनेजर किशन कन्हैया पाण्डे नाम के अनुरूप रसिक मिजाज़ वाला है, जो कंपनी के नाम से जहाँ भी जाता है अपने मन कीसाध पूरी करने का मौकातलाश ही लेता है। एक प्रसंग में लिखा है -" सोवियत रूस के विघटन के बाद दिल्ली के सस्ते होटलों में अतिश्वेताओं की भरमार थी, जिनके मोबाइल नम्बर इनकी डायरी की शोभा बढ़ाया करते। दिल्ली से दो घण्टे की फ्लाइट और राजधानी से चार घण्टे की यात्रा। ग्लोबल गाँव की कृपा से सब कितना सुलभ।"[15]

इसी उपन्यास में स्त्री का एक भिन्न चित्र प्रस्तुत करने वाली पात्र है-बुधनी। कोयलबीघा इलाका जब बंजर हो गया, तो वहाँ के अनेक लोग रोजगार की तलाश में वहाँ से बाहर चले जाने को विवश हो गए। ऐसे में बुधनी अपने पति को लेकर असम की ओर चली गई और शिवसागर या डिब्रुगढ़ के किसी चाय बगान के पास चाय की दुकान चलाने लगी। भले ही एक स्त्री का चाय की दुकान चलाना हमें नया न लगे, परन्तु झारखण्ड जैसी जगह के एक गाँव की अनपढ़ स्त्री आर्थिक स्वावलंबन की ओर बढ़ती है तो इसे स्त्री सशक्तिकरण का एक साकारात्मक पहलू माना जाना चाहिए।

आज स्त्री अपने अधिकारों, दायित्वों और समस्याओं के प्रति सजग हो रही है। आत्म-चेतना के कारण उसे जिम्मेदारियों का अहसास होने लगा है। इसी कारण वह एक प्रकार की मानसिक पीड़ा का भी अनुभव करती है। इसलिए वह अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं से आँखें मून्द कर मुँह नहीं फेर पाती, बल्कि प्रतिक्रिया करने पर उतर आती है। ऐसी ही युग की चेतना सम्पन्न असुर स्त्री है ललिता। पढ़ी-लिखी और समझदार, जो अपने समाज में फैले अंधविश्वास से दुःखी है।वह बाबा शिवदास द्वारा चलाए गए कण्ठी अभियान का विरोध करती है। कहती है, "असुर पुरुष क्यों दूसरों के झाँसे में आ जाते हैं, क्यों इतनी जल्दी बेवकूफ बन जाते हैं।"[16] यही ललिता कथावाचक

मास्टर से दोस्ती की पहल भी करती हुई कहती है, "आपसे दोस्ती जमेगी, चलिए! हम लोग सहिया जोड़ लें' यह ललिता की घोषणा थी। सहिया जोड़ने, यानी दोस्ती की विधिवत घोषणा की अच्छी खासी प्रक्रिया थी। लालचन दा सुनकर हँसने लगे। लड़का-लड़का और लड़की-लड़की का सहिया जोड़ाए तो देखते-सुनते आए। अब ललिता नया विधि-विधान, परम्परा शुरू कर रही है।"[17] स्त्री होने भर से वह अपने को पुरुषों से हीन नहीं मानती, बल्कि स्त्री को पुरुष के समानान्तर अस्तित्व की स्वामिनी मानती है। इसी ललिता को अन्याय का विरोध करने के कारण अपनी जान बचाने के लिए दर-ब-दर भागना पड़ता है। ललिता वास्तव में सजग होती जनजाति स्त्री की प्रतिनिधि है, जिसे संघर्ष की एक लम्बी यात्रा तय करनी है।

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यासमें चित्रित उन सभी स्त्री पात्रों के माध्यम से हम देख सकते हैं, कि स्त्री के हिस्से केवल निराशा, बेबसी और हार आती है। विकास के तमाम नारों के बावजूद स्त्री शोषण आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। लेकिन इससे स्त्री थककर, हारकर और सहमकर पीछे नहीं हटती। अपनी अस्मिता और अपने अस्तित्व को दृढ़ करने के लिए बढ़ाए गए उसके कदम अब न थमेंगे, न लौटेंगे और न भावी खतरों से घबराकर आगे बढ़ना छोड़ेंगे।

संघर्ष जैसे स्त्री जीवन का पर्याय बन गया है। आज हमारे सामने अनेक जीवंत प्रमाण मौजूद हैं, जो स्त्री संघर्ष की ज्वाला के तपीश को अपने अन्दर समेटे शोषण और अत्याचार के खिलाफ दृढ़ता के साथ लड़ ही नहीं रही, बल्कि संघर्ष की प्रेरणा बनकर स्त्री समाज को दिशा भी प्रदान कर रही हैं। "धरती भी स्त्री, प्रकृति भी स्त्री, सरना माई भी स्त्री और उसके लिए लड़ाई लड़ती सत्यभामा, इरोम शर्मिला, सी.के. जानू, सुरेखा दलवी और यहाँ पाट में बुधनी दी और सहिया ललिता भी स्त्री। शायद स्त्री ही स्त्री की व्यथा समझती है। सीता की तरह धरती की बेटियाँ–धरती में समाने को तैयार।"[18]

ग्लोबल गाँव के देवता में दिखाई गई ये स्त्रियाँ वर्तमान स्त्री के भविष्य का नक्शा तैयार कर रही हैं। इस नक्शे में कटु यथार्थ भी है, निराशा भी। निराशा के विरुद्ध संघर्ष भी। अँधेरा भी, अँधेरे के खिलाफ लड़ाई भी और चन्द सवाल भी। दरसल 'ग्लोबल गाँव के देवता' में सुदूर जनजातीय क्षेत्रों में घटता हुआ जो कुछ दिखाया जा रहा है, वह

सब विकास की भूमण्डलीकरण प्रेरित धारणा के चलते घट रहा है और हम देखते हैं कि इसमें सबसे परेशान जो वर्ग है, वह स्त्रियों का है। तो क्या भूमण्डलीकरण भी विकास के नाम पर अन्ततः स्त्री के विरोध में खड़ा होगा?इस सवाल का उत्तर भूमण्डलीकरण की वर्तमान प्रक्रिया की परिणति से मिलेगा। अर्थात इस सवाल के उत्तर में अभी देरी है, लेकिन इतना जरूर है कि स्त्री को चाहे वह किसी भी वर्ग की हो, परम्परागत ठेकेदारों के साथ ही भूमण्डलीकरण के देवताओं से भी सावधान रहना होगा।

सन्दर्भ ग्रंथसूची -

1. उदारीकरण, भूमण्डलीकरण एवं दलित सं- अरुण कुमाररावत, पब्लिकेशन्स जयपुर, संस्करण 2009, ISBN : 81-316-0271-0,पृ-28
2. Globalization: Language Culture and Media, Editors- B.N. Patnaik- S. ImtiazHasnain, Chapter-2 page no. 17, Indian Institute of Advanced Study, Shimla ISBN :81-7986-061-2
3. The Conscience Oxford Dictionary 9th Edition I Thomson Della ISBN : 0-19-861320-2
4. The term globalization comes from English, as base of the word “globalization” which refers to the emerging of an international network, belonging to an economical and social system. Oxford English Dictionary Online. September 2009. http://dictionary.oed.com/
5. “Globalization" is the process of the shrinking of the world, the shortening of distances, and the closeness of things. It allows the increased interaction of any person on one part of the world to someone found on the other side of the world, in order to benefit"

   The Race to the Top: The Real Story of Globalization -Larsson, Thomas.. Washington, D.C.: Cato Institute, 2001 p. 9. ISBN 978-1930865150

6. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली- डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2012,ISBN :978-81-257-2207-5, पृ-358
7. हिंदी साहित्य इक्कीसवीं सदी चुनौतियाँ, सं-डॉ. कीर्ती केसर, नवजागरण प्रकाशन, दिल्ली-2002,पृ-31
8. The last decade or so has witnessed a growing concern about the phenomenon called globalization. It has become a source of anxiety in the academic world. Globalization language, culture & Media, Editor B.N. Paynaik, S ImtiazHasnain, page-1, Indian Institute of Advanced Study, Shimla.ISBN : 81-7986-061-2
9. ग्लोबल गाँव के देवता- रणेन्द्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 2010, पृ-9,ISBN : 978-81-263-1905-3
10. हिंदी साहित्य इक्कीसवीं सदी चुनौतियाँ, सं-डॉ. कीर्ती केसर, नवजागरण प्रकाशन, दिल्ली-2002,पृ-32
11. उदारीकरण,भूमण्डलीकरण एवं दलित-सं- अरुण कुमार रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर-2009, पृ-157, ISBN : 81-316-0271-0
12. उदारीकरण, भूमण्डलीकरण एवं दलित सं- अरुण कुमार रावत, पब्लिकेशन्स जयपुर, संस्करण 2009, ISBN : 81-316-0271-0, पृ-59
13. ग्लोबल गाँव के देवता- रणेन्द्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 2010, पृ-25,ISBN : 978-81-263-1905-3
14. वही, पृ-39
15. वही, पृ-53
16. वही, पृ-57
17. वही, पृ-59
18. वही, पृ-92

इमोइनु की कथा

थोकचोम रेनुका देवी
शोधार्थी हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यलय

लाइनीङ्थौ अशीबा ने देवता और मनुष्य को पृथक कर अपना सिंहासन मङाङ् वंश के निङ्थौ अपान्बा को सौंपने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि उन्होंने अपनी जादुई अंगूठी अपान्बा निङ्थौ को सौंप दी है, जिसकी उसे पूजा करके सुरक्षित रखनी है। अगर अंगूठी को कोई भी हानि होती है तो मनुष्य जाति पर प्रकोप पड़ेगा। दोनों लाइनीङ्थौ और लाइरेम्बी अपने निर्णय पर विश्वास रखते हैं। तभी कुछ मनुष्य वहाँ दोनों देवताओं से मिलने आ पहुँचते हैं। उनके आने का कारण बताते हुआ कहते है कि उनके अङोम् वंश के राजा(निङ्थौ) की नियुक्ति की जाए। इस बात से खुश होकर लाइनीङ्थौ अपना निर्णय उन्हें सुनते हुए घोषणा करते है कि वह हर एक वंश के लिए एक लाइनीङ्थौ की नियुक्ति करेगा। सभी मनुष्य खुश हो जाते है। मनुष्य उनसे आग्रह करते है कि अङोम् निङ्थौ इबुधौ खाख्पा पूलैलोम्बा के पुत्र अरिबा को नियुक्त किया जाए। साथ ही देवता अरिबा को अर्धांगिनी के रूप में लाइनीङ्थौ की पुत्री खोंङ्दोम्बी का हाथ दिया जाए। यह बात लाइनीङ्थौ ख़ुशी ख़ुशी मान जाते है।

अपान्बा निङ्थौ बड़े परेशान, सुस्त और अस्वस्थ दिखते है। ईपू लाईजाहन्बा समाचार लाते है कि पूरे संसार में उथल-पुथल मची है केवल मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी भी दुख एवं मृत्यु से पीड़ित है। अपान्बा निङ्थौ समझ जाते है कि लाइनीङ्थौ द्वारा दी गई अंगूठी खो गई है। वह याद करते हुए बताते है, कुछ दिनों से वह सुस्त और अस्वस्थ थे तो वे लिवा नदी में स्नान करने गए थे। तब उन्होंने अपने वस्त्र के साथ अंगूठी निकालकर नजदीक के पत्थर के ऊपर रखी थी। लेकिन जब वह स्नान कर आए तो केवल वस्त्र ही पाया, अंगूठी गायब थी। इस स्थिति का उपाय निकालने हेतु ईपू माइचौ पुरेन से मिलने गए थे। तब पता चलता है कि लाइनीङ्थौ ने अपान्बा निङ्थौ के व्यवहार से क्रोधित होकर संसार में उथल-पुथल हुआ है। इसका निवारण बताते हुए वे

कहते हैं कि फिर से पूरी श्रद्धा के साथ उनकी पूजा करे तथा अपने मन के अहंकार को मिटाए। अपान्बा निङ्थौ घोषित करते है कि जो कोई भी उनकी अंगूठी उन्हें वापिस करेगा उससे मनचाहा इनाम दिया जाएगा। अगर कोई युवक अंगूठी ढुढ़ँकर लाएगा उसे आधे राज्य के साथ राजा बनाया जाएगा और अगर कोई युवती ढुढ़ँकर लाती है तो उसे लैमा (राजकुमारी) का पद दिया जाएगा।

दूसरी ओर एक माता चिंतित होकर अपने पुत्र की राह देख रही थी तब अपान्बा निङ्थौ की घोषणा सुनाई पड़ती है। अपने बेटे को आते देख माता राहत की सांस लेती है। बालक माता को एक मरा साँप दिखाते हुए कहता है कि माता आपने खाली हाथ वापस न आने का आदेश दिया था इसलिए मै यह लेकर आया हूँ। खेलते-खेलते वक्त के गुजरने का पता नहीं चला और अँधेरा होने के कारण मैं कुछ नहीं ले पाया। माता बालक की बात सुनकर घबरा जाती है । वह कहती है "पुत्र, तुम्हारे ताऊ जी अङोम् निङ्थौ की मृत्यु के बाद से हमारे लिए कोई सहारा नहीं रहा इसलिए अगर कोई तुम्हारे ताऊ जी के बारे में कुछ कहे तो उल्टा जवाब देकर झगड़ा मत करना, उनकी बातो को सहन कर लौट आना। अब जाओ इस साँप को कही दूर फेंक आओ मै तुम्हारे लिए भोजन बनाती हूँ"। बालक माता की बात मानते हुए साँप को फेंकने की जगह ढुढ़ँता है, अँधेरे में कोई जगह ना मिलने पर घर के छत पर फेंक आता है।

आधी रात में चमकते हुए प्रकाश से माता की नींद खुल जाती है। देखने पर पता चलता है कि वह प्रकाश घर के छत से आ रही थी। माता अपने पुत्र को जगा कर प्रकाश के तरफ चल पड़ती है। बालक को साँप फेंकने की बात याद आती है और माता से कहता है कि यह वही साँप होगा। माता को साँप से प्रकाश निकलने पर शंका होती है। बालक सीढ़ी पर चढ़कर देखता है कि साँप गायब है उसकी जगह एक अंगूठी चमक रही थी। उसे लाकर माता को दिखाता है। माता को अपान्बा निङ्थौ की घोषणा याद आती है और वह समझ जाती है कि अंगूठी अपान्बा निङ्थौ का वही जादुई अंगूठी है। माता अंगूठी को उसके मालिक को दे देने के सुझाव पर बालक प्रश्न करता है कि जादुई अंगूठी को क्यों वापस करे? अंगूठी उनके भाग्य में लिखी है इसलिए उनके पास खुद आई है। लेकिन माता के समझाने पर बालक अंगूठी वापस करने को मान जाता है।

इधर कुछ समय बाद लाइनीङ्थौ अपान्बा निङ्थौ की भक्ति से खुश होकर अपनी अर्धांगिनी इमोइनु से अपान्बा निङ्थौ की सुख सम्पति वापस कर देने का आग्रह करते है, जिस पर इमोइनु मान जाती है। अपान्बा निङ्थौ और ईपू लाईजाहन्बा के कारण मनुष्य एवं पशु पक्षी की स्थिति में सुख शांति लौट आती है। दोनों प्रसन्न होते है और जादुई अंगूठी की चर्चा होती ही है तभी द्वार पर मैले फटे कपड़े पहने माँ-बेटे दिखते है। अन्दर आते ही माता अंगूठी अपान्बा निङ्थौ को दिखाती है जिस पर अपान्बा निङ्थौ की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहता। वह प्रसन्न हो कर जो चाहे इनाम माँग लेने को कहते है। वह बालक को आधा राज्य और माता को मनचाहा इनाम देने को राजी था। लेकिन माता कुछ भी लेने को तैयार नहीं थी। अपान्बा निङ्थौ के बार बार आग्रह करने पर माता कुछ देर सोचकर निवेदन करती है कि मणिपुरी महीने वाकचिंङ् के बारहवे दिन में राज्य के हर कोने तथा जगहों पर कोइ आग्नि प्रज्वलित नहीं करें। इस निवेदन को अपान्बा निङ्थौ स्वीकारते है तथा पूरे राज्य में इसकी घोषणा करवाई जाती है।

वाकचिंङ् के बारहवे दिन में पूरे राज्य में कोई अग्नि प्रज्वलित नहीं करता है। जब ईमा इमोइनु भ्रमण के लिए निकलती है तो उन्हें कहीं भी आग नहीं दिखता। सर्दी का समय होने के कारण ठण्ड अधिक थी तभी उनकी नज़र एक छोटी की कुटिया पर जाती है जहाँ आग जल रही थी तथा कुटिया के द्वार के इर्द-गिर्द द्वीप जल रहे थे। ईमा इमोइनु उस कुटिया में अपना वेश बदल कर आती है। वह घर उन माँ बेटे का होता है। माता बेटे को सुलाकर ईमा इमोइनु के इंतजार में बैठी हुई थी। माता को पता था कि इसी दिन ईमा इमोइनु धरती पर आएगी और हर घर में दर्शन देगी। जो घर निर्मल होगा उन्ही के यहाँ सुख संपत्ति का आशीर्वाद देंगी। माता को यह भी मालूम था कि ईमा इमोइनु प्रज्वलित घर में ही प्रवेश करेगी। ईमा इमोइनु वेश बदल कर अंदर आकर आग सेंकने का निवेदन करती है तो माता उन्हें अन्दर बुलाकर बैठने की जगह देती है। बात करते करते माता ईमा इमोइनु से कहती है “मुझे बाहर कुछ काम निपटाने जाना है तब तक क्या आप मेरे सोते पुत्र का ख्याल रखेंगी ? मै जल्दी वापस आऊँगी।”

ईमा इमोइनु जल्दी वापस आने की बात सुनकर मान जाती है। माता बाहर खड़ी हो कर एक बार घर को देख कर अपने पुत्र को अलविदा कहकर आँखों से आँसू बहाते हुए चल पड़ती है। माता अपने पुत्र को ईमा इमोइनु के हवाले छोड़ उसकी सुख संपन्नता की कामना कर चल देती है। इधर बालक की नींद खुलने पर अपनी माँ को न पाकर वह रो पड़ता है। ईमा इमोइनु बालक को माँ के जल्दी आने का दिलासा देते हुए सहलाती है। लेकिन घंटो बाद भी माता वापस नही आती। ईमा इमोइनु माता को दिए हुए वायदे को तोड़ न सकने के कारण उस बालक का ख्याल रखने का निश्चय करती है। धन धान्य की देवी इमोइनू बालक के साथ रहने लगती है।

नागालैंड की लोक कथा पुलिए बाद्जे

अत्सुला येम्चुङगर

बहुत पहले कोहिमा के दक्षिण दिशा की एक पहाड़ी पर पुलिए नाम का एक व्यक्ति रहता था । वह बचपन से ही बहुत परिश्रमी तथा ईमानदार था । उस पहाड़ी गाँव की आर्थिक स्थिति तब पूरी तरह कृषि पर आधारित थी । गाँव के लोग सामूहिक रूप से एक दूसरे के कृषि कार्यों में सहयोग देते । पुलिए भी पहाड़ी ढलान के एक छोटे से हिस्से में बनाए गए सीढ़ीदार खेत पर अपनी खेती करता था । काफी परिश्रम के बाद पुलिए ने झाड़ियों को काटकर जमीन को सीढ़ीदार बनाकर इस पहाड़ी ढलान के हिस्से को खेती के लायक बनाया था और पहाड़ी झरने से उस खेत की सिंचाई के लिए पानी की व्यवस्था की। पुलिए ने पहली बार जब खेती शुरू की थी तब खेत की जुताई अपने हाथों से की तथा उसमें धान के बीज डाले । थोड़े दिनों बाद ही खेत में धान के नन्हे - नन्हे पौधे उग आये । पुलिए उन पौधों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ । कुछ दिनों में धान के पौधे लहलहाने लगे । समय पर वह अपने खेतों की निराई करता जिससे अवांछित पौधे उसके फसलों को क्षति न पहुँचा सकें ।

पुलिए का कठिन परिश्रम आखिर रंग लाया । फसल पककर तैयार हो गई । फसल काटने का समय आ गया । पुलिए अपनी उपलब्धि पर प्रसन्न था । वह जब भी अपने खेत के समक्ष होता तो अपनी खेती को देखकर उसे अनेक सुखद स्वप्न दिखाई देते । खेती को वह अपने अधिकार की संपत्ति समझता था । खेत में आते ही वह परिवार और समाज की बातें भूलकर स्वप्न में डूब जाता । इस तरह अपने आस - पास की दुनिया को भूलकर अपने खेतों में खोये रहने की उसे आदत पड़ गई । वह अपने दोस्तों से कहता - " यह खेती मेरी आत्मा है । " किशोर एवं युवावस्था आते - आते पुलिए में खेती के लिए अदम्य आकर्षण हो गया था । इसीलिये दुःख , विषाद एवं किसी भी कारण मन अशांत होने पर वह अपने खेत में जाकर शान्ति पाता ।

मानव जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ घटती हैं जिनकी कल्पना भी मनुष्य नहीं कर पाता । ये घटनाएँ कुछ तो प्राकृतिक होती हैं , कुछ मानव निर्मित । पुलिए के जीवन में भी ऐसी ही एक दुर्घटना घटी जिसकी कल्पना उसने नहीं की थी । एक दिन जब

वह अपने धान के खेत में गया तो उसने देखा कि किसी जंगलीजीव ने उसके फसलों को बहुत क्षति पहुँचायी है । काफी प्रयत्न करने के बाद यह पता लगाने में वह सफल हो गया कि उसकी फसलों को एक विषधर साँप नुकसान पहुँचा रहा है । यह जानकर वह विषाद से भर गया । दुखी मन लेकर वह गाँव में अपने माता - पिता के पास आया । वह मन - ही - मन फसल को क्षति पहुँचाने वाले साँप के विषय में सोचने लगा कि किस प्रकार उसका अंत हो जिससे उसकी फसल को नुकसान न हो । अंततः उसने एक उपाय सोचा और साँप को मारने की योजना बनाई । अगले दिन वह खेत पर गया और योजना के अनुसार खेत के बाहर एक बड़ा सा गड्ढा खोदा । शाम ढलने को आई तब वह अपना दाव तथा भाला लेकर उस गड्ढे में छिपकर बैठ गया तथा साँप के आने की प्रतीक्षा करने लगा । पूर्णिमा की रात थी । चन्द्रमा अपने शीतल प्रकाश से धरती को प्रकाशित कर रहा था । स्वच्छ चाँदनी में सभी पेड़ , पौधे और आस - पास के खेतों में खड़ी फसलें साफ दृष्टिगोचर हो रहीं थीं । आकाश तारों से भरा था । चाँदनी रात में दृश्य बहुत ही सुहावना था । रह - रह कर कभी - कभी पक्षियों तथा अन्य जंतुओं की आवाजें भी सुनाई देती थी । धीरे - धीरे आधी रात बीत गई । पुलिए उस गड्ढे में बैठकर साँप के आने की प्रतीक्षा करता रहा । कुछ देर बाद पुलिए ने अपने खेत में सरसराने की आवाज सुनी । पुलिए धीरे - धीरे दबे पाँव गड्ढे से बाहर आया । उसने देखा कि साँप प्रतिदिन की भाँति उसके खेत में धान खा रहा है । पुलिए इस दृश्य को देखकर क्रोधित हो गया । उसने अपना भाला फेंका और एक ही वार में साँप को मार डाला । तभी पुलिए ने अद्भुत दृश्य देखा । साँप की आत्मा शरीर से अलग हो चुकी थी। पुलिए जब तक कुछ समझ पाता , साँप की आत्मा प्रतिशोध लेने के लिए पुलिए की तरफ बढ़ी और क्षण भर में पुलिए जमीन पर ढेर हो गया । पुलिए का दुःखद अंत हो गया |

उधर गाँव में पुलिए के माता - पिता शाम को पुलिए के नहीं लौटने पर चिंता में पड़ गए । ऐसा कभी नहीं हुआ था कि खेतों में काम करके पुलिए शाम को घर न लौटा हो । पुलिए की मृत्यु के संबंध में गाँव में भी किसी को कोई जानकारी नहीं थी । पुलिए की कोई खबर न पाकर उसके माता - पिता बहुत बेचैन हो उठे । किसी तरह रात बीती । गाँव में तरह - तरह की आशंकाएँ व्यक्त की जाने लगीं । गाँव के लोग पुलिए के

घर इकट्ठा होने लगे तथा इस घटना के विषय में विचार - विमर्श करने लगे । काफी विचार - विनिमय के बाद सबने यही सोचा कि शायद पुलिए अपने खेतों की रखवाली करने के लिए ही वहाँ रह गया हो । लेकिन दिन चढ़ने पर भी जब पुलिए घर वापस नहीं आया तो गाँव के लोग उसकी तलाश में पहाड़ के नीचे उसके खेतों की ओर चल पड़े । वहाँ पहुँचाने पर उन्हें एक साँप की लाश मिली लेकिन पुलिए का कोई पता नहीं लग सका । गाँव वाले तथा उसके माता - पिता ने चिल्ला - चिल्ला कर पुलिए को बुलाना शुरू किया । पुलिए को जोर - जोर से पुकारने पर अंततः उन लोगों को पुलिए की आवाज सुनाई दी । गाँव वाले उस दिशा की ओर बढ़े जिस तरफ से पुलिए की आवाज आयी थी। लेकिन सब कुछ व्यर्थ साबित हुआ , पुलिए वहाँ नहीं था । गाँव वाले जैसे - जैसे पुलिए का नाम पुकारते हुए आगे बढ़ते , वैसे - वैसे पुलिए की आवाज और दूरी पर सुनाई देती । इस प्रकार दूर से आती हुई आवाज के साथ पुलिए को खोजते - खोजते वे सभी पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए , पर पुलिए वहाँ भी नहीं मिला ।

अंत में गांव वाले और पुलिए के माता - पिता सभी निराश हो गए और पुलिए के मिलने की आशा छोड़ दी । सबने मिलकर इधर - उधर शिखर पर पत्थरों को एकत्र कर उसी स्थान पर पुलिए के बैठने के लिए एक चबूतरा बना दिया । उस दिन से आज तक इस पहाड़ को पुलिए बातजे के नाम से जाना जाता हैं । ऐसा विश्वास किया जाता है कि पुलिए के परिश्रमी शरीर के अवशेष उस पहाड़ की मिट्टी में मिल जाने के कारण पुलिए बाद्जे की उर्वरा शक्ति बढ़ गई जिस कारण वहाँ नाना प्रकार के पेड़ पौधों और सुगन्धित फूलों के वृक्ष पाए जाते हैं । ये पुष्प गुच्छों के आकार में होते हैं । इस जगह की सुन्दरता और सुगन्धित वातावरण को देखने के लिए आज भी लोग उस पहाड़ पर जाते हैं और पुलिए को याद करते हैं ।

मणिपुरी लोक गीत

--- **कराम गीता देवी**

बारिश के लिए प्रार्थना करते हुए अमाइबा- अमाइबी (पुजारी- पुजारिन) द्वारा गाया जाने वाला गीत जिसका उल्लेख चिङलोन लाइहुई नामक पुया में मिलता है।

नोङ ओ चूरो
हनुबी हनूबा ताओथरो
लाङजिङ मतोन थुमहत्लो
पातसोय नुराबी ताउथरो
ऊनम पाखङ खुनजरो ।
कौबा कौनू नोङ ओ
लोइजिङ लोया नोङ ओ
ईरेङ इथम नोङ ओ
थाङजिङ कोयरेन नोङ ओ
वाङब्रेन खा-ना चाओबा नोङ ओ
शम्बुम महाराबा नोङ ओ
हावकप चिङशाङ नोङ ओ
खुनफम ङाङ्चेङ नोङ ओ
लैरी नोङली हौरो
लैखोङ नोङखोङ नेममो
कोरौ खोङ्दुम खोङ्लकओ
मालेम लैबू लुम्बी लुमखत्लक ओ
लाइज यिथाबी नङ थाबिरक ओ
लाई यिखाइबा नङ खाइबिरक ओ

(इस गीत में बादल को पानी बरसाने के लिए आह्वान किया जा रहा है। जिसमें बूढ़े और बूढ़ी को बहा ले जाने,लाङजिङ पर्वत के शिखर डूबो देने के लिए कहा गया है।

आगे है पातसोय की युवती बह जाओ ऊनम का युवा उठा लो । विभिन्न दिशाओं में स्थित पर्वतों, देवी-देवताओं, कौबा कौनू ,लोइजिङ लोया, वाङब्रेन खाना चाओबा सभी से पानी की माँग हो रही है।)

पेना (लोक वाद्य) गायकों द्वारा गाया जाने वाला प्रार्थना गीत

हैयी हया हयुम

चिङ्ङू इबुङो हौरो, हौरो खोइयुम हौरो हौरो

योइमयाय अङानबा चिङखै फिदुप हुल्लक ले

खोङदिङलैना काङ्लकले, अङानबा खिङ-खिङ खेनकारकपदा

अङान तोङलोन मापन हाङलकपबू

चिङूबा कना ताद्रिडै, खोयुम कना खङद्रिडैदा

गुरु गी काइरै मयेनचा, अङाङबा काशा पाओताकयेन

अमूबा लोइमोम फौकौयेन.......।

(हैयी हया हयुम उच्चारण से आरंभ करते हुए पेना वादक देवता को जगाता है। प्रकाशवान सूर्य की यात्रा शुरू हो गई है। उसके कदम तेज गति से बढ़ रहे है उसी तेजी से प्रकाश की किरणें भी बिखर रही हैं। मुर्गे बांग दे रहे हैं। सृष्टि की सारी गतिविधियाँ शुरू हो गई हैं।)

खुन्द्राकपम ब्रजचान्द के नाटक- चिट्ठी वाला चिड़ा का शेष भाग

अनुवाद- थोकचोम मोनिका देवी

(चौथा अंक)

चिड़ा : प्रेम का संदेश लेकर आया हूँ |

प्रेम की आग में जलती किसी की

आसूँ भरी कथा लाया हूँ

पैसे की खबर लाया हूँ |

कानों में सजे फूलों की कहानी भी लाया हूँ |

शादी की खबर भी |

दे रहा सबको खबर |

चारों ओर उड़कर |

(चिड़ा चारों ओर उड़ रहा है, खेल रहा है| एक शिकारी बाहर आता है| जिसके हाथ में तीर कमान है | ज़ोर-ज़ोर से हँसता है| चिड़ा की ओर इशारा करता है | चिड़ा डर के मारे काँप रहा है |)

शिकारी : हा हा........हा हा| (चिड़ा काँप रहा है | रोने लगता है |) मत भाग ...ओई मत भाग | यह तीर देख तेरे दिल के आर-पार करूँगा |

चिड़ा : मुझे मत मारो | मैं बहुत जरूरी काम के लिए निकला हूँ | मैं चिट्ठी वाला चिड़ा हूँ | आँसूओं की कहानी लाया हूँ , किसी के मन की हजारों शिकायतें पहुँचाने आया हूँ| लाखों भूखे पेट की शिकायतें सुनाने आया हूँ |

शिकारी : मत सुनाओ | कोई काम की नहीं है | उल्टा तुम्हें पत्थर खाने पड़ेंगे| उसके कान नहीं ही, आँखें नहीं हैं | उसको न सुनाई देगा न कुछ दिखाई | उससे अच्छा है अपनी दाँई टांग मेरे भूखे बेटे के लिए देते जाओ |

चिड़ा : नहीं नहीं | मुझे मत मारो | मैं बहुत जरूरी खबर लेकर आया हूँ |

शिकारी : चुप रह | यहाँ किसी की भी खबर जरुरी नहीं है | सब फालतू हैं | काम अगर नहीं भी हुआ तो किसी को कोई फरक नहीं पड़ने वाला | मखौल करना क्या जरूरी होता है ? मैं तुम्हें मारने वाला हूँ ....मैं तुम्हें मारूँगा | (तीर से निशाना साधता है | तभी चाचाजी बाहर आते हैं |)

चाचाजी : रुको बहादुर, रुको योद्धा | मन को शांत करो, उसे मत मारो | टूटे दिलों की शिकायतें हैं, जो यह ले जा रहा है | उसको वहाँ तक पहुँचने दो | मत मारो उसे, मत मारो |

शिकारी : नहीं सुनना चाचाजी | शिकायत शिकायत | क्या होगा शिकायतों से ? मेरा बेटा भूखा है | मुझे इसे मारना है |

चाचाजी : रुको बहादुर, रुको योद्धा | मत चलाओ अपना नुकीला तीर |

शिकारी : हा हा ....|

(हँसता है, तीर चलाता है | चिड़ा को लग जाता है |)

चाचाजी : अरे शैतान | जानवर | क्या तुममें थोड़ी सी भी दया नाम की चीज नहीं है ?

शिकारी : मैंने जो किया है, यही दया है | जिन लोगों ने शिकायत की है, उनकी जान बचाई है | उन सभी भूखे पेट से पूछो - अभी कुछ और दिन घास खाकर गुजारा करना ठीक है या डंडा खाना ठीक है| डंडा खाने से अच्छा घास खाना नहीं है क्या ? मैंने उन लोगों की जान बचाई है |

(चाचाजी चिड़ा के पास जाते हैं | प्यार से उसपर हाथ फेरते हैं |)

चिड़ा : (कराहते हुए)

हे दयालु, मुझे नहीं लगता कि में जिन्दा रह पाउँगा | मरने से पहले आपसे एक बात कहना चाहता हूँ |

चाचाजी : बोलो, बोलो जो कहना चाहते हो, बोलो |

चिड़ा : आप यह चिट्ठी पहुँचा देना | यह नम्बुल नदी के पास वाले आँसुओं की शिकायत है - गए दिनों में कानों पर सजने वाले फूल की कहानी है | और यह उस कमजोर बूढ़े के पसीने की शिकायत है - अपने प्रिय बेटे के लिए प्रेम है | यह सभी मोहल्ले वालों की तरफ से राजा को शिकायत है | राजा ने उनके साथ धोखा किया है। न खाने को चावल दिए है और बताते हैं कि न लिखने के लिए कागज दिए है | हे दयालु आप यह सब पहुँचा देना, मैं जा रहा हूँ |

(चिड़ा सारी चिट्ठियाँ देकर मर जाता है |)

चाचाजी : चलो मेरे साथ चिट्ठी देने चलते हैं |

शिकारी : मुझे नहीं जाना | क्या काम है इन चिट्ठियों का ?

चाचाजी : यह चिट्ठी बताएगी कानों पर सजे फूल की कहानी, आँसुओं की कहानी | उसको बताएगी मोहल्ले वालों की शिकायतें |

शिकारी : बताएगी ! आप बातएँगे, उसे बताएँगे ? जो जानकर भी अनजान बना है उसको इससे सब पता चल जाए | ऐसा कभी होगा ही नहीं |

चाचाजी : तुम्हें नहीं जाना तो मत जाओ | मैं जाऊँगा देने |

(चाचाजी चिट्ठियाँ लेकर चलने लगते हैं |)

शिकारी : रुको |

(रोकता है | पकड़कर वापस ले आता है |)

अरे पागल बुड्ढे इतनी क्या जल्दी है ! बेवकूफ हो उसके ऊपर सब्र नाम की कोई चीज ही नहीं है| क्या होगा आपका ? अच्छा पहले यह तो बताओ इन चिट्ठियों से होगा क्या ?

चाचाजी : चिट्ठियाँ उसको मिलेंगी | उन दिनों की तरह वो नम्बुल नदी के किनारे जाएगा | उसके इंतजार में खड़ी उसके बिखरे बालों को वह सहलाएगा | अपनी बाहों में उसको भरेगा| अगली चिट्ठी राजा के पास जाएगी | मोहल्ले वालों की शिकायतों से वह डर के मारे कांपने लगेगा | फिर वो गावँ में पहुँचेगा | सस्ते दामों में कागज बेचेगा | गली का ख़राब बल्ब को बदलेगा | फिर वह ये भी करेगा वो भी करेगा | उसके बाद वह.......|

शिकारी : छोड़ो छोड़ो | मेरे कान पक रहे हैं |

चाचाजी : अच्छा तुम बताओ तुम क्या कहते हो ?

शिकारी : चिट्ठियों को फाड़ दो| कोई फ़ायदा नहीं है | अच्छा चलो चिट्ठी मिल भी गई, तो क्या होने वाला है - मैं बताता हूँ ध्यान से देखो |

(एक चिट्ठी उठाकर पढ़ता है)

टू श्री प्रेमकुमार खुमनचा, असिस्टेंट इंजिनियर पी. डब्ल्यु.डी. कॉलोनी, जिरिबाम - चिड़ा जीरी पहुँच गया है | नम्बुल के किनारे के लिए प्यार की चिट्ठी पी. डब्ल्यु. दी कॉलोनी क्वाटर न. 7 पहुँच गई है |

फिर........डोंग...डोंग..डोंग....| आपके लिए पेश है नाटक - "प्रेम की आग" | जगह : जिरिबाम | समय : लाङबन महीने का एक दिन, दोपहर के ठीक १२ बजे | नाटक का लेखक, निर्देशक, गीत, मेक-अप वेक-अप - सब मैं| देखने वाला - चाचाजी "प्रेम की आग"|

(एक युवक चिट्ठी पढ़ रहा है | एक औरत आती है | खिड़की दरवाजे बंद करती है | युवक के पास आती है |)

औरत : (गला साफ़ करती है)

तुम तो कह रहे थे, तुम्हारा किसी के साथ सम्बन्ध नहीं है |

युवक : हाँ नहीं है, क्यों ?

औरत : नहीं है...अच्छा नहीं है ? फिर यह सब क्या है ? कहाँ से आई यह चिट्ठी ? कौन है इङेलई ?

युवक : कौन है ? कौन है इङेलई ?

औरत : सच सच बताइए | नम्बुल नदी किनारे की इङेलई कौन है ? कानों पर लगे फूल की कहानी, कौन सी कहानी है ? तुम्हारा उसके साथ क्या सम्बन्ध है ?

युवक : जो तुम सोच रही, हो मै भी वही सोच रहा हूँ | मुझे भी समझ नहीं आ रहा | कौन इङेलई, मैं भी नहीं जनता | इङेलई नाम का कोई फूल इस पृथ्वी पर खिलता ही नहीं, उगता ही नहीं, लगता ही नहीं |

(इङेलई धीरे से बाहर आती है | दरवाजे से चुपचाप देखती है | रोती है |)

तुम्हारे अलावा किसी लड़की को कभी देखा नहीं है, न कभी पहचान हुई है | लईरिक......मन की शिकायत....मन होता क्या है ? क्या चीज है ? किससे बनता है ? लोहे का या प्लास्टिक का ? और कानों के फूल क्या होता है ? हमम..........मुझे समझ नहीं आता...नहीं आता | कुछ नहीं पता.....नहीं पता |

(चिट्ठी फाड़ता है)

मैं यही जानता हूँ कि पिताजी कछार गए हैं और तुम घर वापस नहीं जा रही, यहीं रात बिताने वाली हो |

(दोनों अन्दर चले जाते हैं |)

इङेलई : प्रेम की आग लगी हुई है मन में | मैं जहर खाऊँगी | सुनो मोहल्ले वालों मैं जहर खा रही हूँ | (इङेलई जहर खा लेती है | मर जाती है | सफ़ेद कपड़े से

उसके मृत शारीर को ढका जाता है | दो लोग उसके मृत शारीर को बाहर ले जाते हैं, गाना गाते हुए |)

गीत

इङेलई............... इङेलई

नम्बुल नदी के किनारे रहने वाली इङेलई

शादी के दिन

श्राद्ध हुआ इङेलई का |

शिकारी : कैसा है नाटक चाचाजी ?

चाचाजी : बहुत खूब बेटा | नई पीढ़ी का थिएटर है | फिर भी रेअलिस्टिक नहीं था | लेखक के विचार शुरू में थोड़े अस्त व्यस्त थे लेकिन अंत में शांति प्राप्त हुई | इङेलई की अभिनेता ने बड़ा सुन्दर अभिनय किया है | फिर भी कहीं कहीं मेलोड्रामा जैसा लग रहा था | प्रेमकुमार का रोल करने वाले हमारे पी.के. लूवाङचा ने बहुत मन लगाकर अपना काम किया है, भविष्य में बहुत आशा रखने वाले कलाकार हैं |

शिकारी : चाचाजी यह सत्य कथा पर आधारित है | नाटक में बदलने के लिए कुछ कुछ बदला है मैंने | क्या देखने लायक नहीं है ?

चाचाजी : मैंने कब कहा देखने लायक नहीं है ?

शिकारी : वहीँ तो चाचाजी, चिट्ठी मिलते ही जो हुआ था वही है | उस युवक को पता ही नहीं कि वो कब नम्बुल नदी के किनारे पिकनिक गया था | उसे यह तक नहीं पता कि नम्बुल नदी नाम की कोई नदी भी है | उन समय की कानों के फूल की कहानी चिट्ठी सुना आई | चिट्ठी फाड़ दी गई, फिर जो इतने दिनों से इंतजार कर रही थी मर गई | अगर चिट्ठी नहीं दी गई होती तो शायद वो जिन्दा होती | मन जल भी गया होता फिर भी उसकी बाहें तो मजबूत हैं, मजबूत थी इसलिए शायद अब तक नम्बुल नदी में मछली पकड़ रही होती | लम्बे समय तक जिन्दा रहती | इस मोहल्ले के कम से कम दो किलो मछली तो उसके जिम्मे होती | क्या चिट्ठी नहीं पहुँचाना ज्यादा ठीक नहीं है ?

चाचाजी : अच्छा अपना अगला शो दिखाओ | और सुनो तुम नाटकारों की आदत कुछ भी मत लिख देना |

शिकारी : अगला शो अगली चिट्ठी.........

(एक चिट्ठी लेकर पढ़ता है |)

टू कुल्ल गोरैया | बेवफ़ा फैशन कोर्नर, प्रेमनगर - मोरेह | माँ के इलाज के लिए दो हजार रुपए भेजने को कहा है | चिट्ठी मोरेह के कुल्ल गोरैया को प्राप्त होती है | आगे देखिए क्या होता है |

चाचाजी : कितनी रील की है, ज्यादा लम्बा मत दिखाना | आजकल की फिल्में बड़ी उबाऊ

होती है|

शिकारी : सत्रह रील, सबसे छोटी वाली है | रिजल्ट थोड़ी साफ नहीं है | जिस कैमरा से हमारी

माँ का झूठन फिल्म शूट हुआ था, वही कैमरा है | देखिए - ड्रेंग...ड्रेंग

(दिख रहा है - कुल्ल गोरैया शराब की एक बोतल और एक चिट्ठी पकड़े अनिमेष खड़ा है | शिकारी बैकग्राउंड से चिल्लाता है |)

एस.के. फिल्म प्रसेंट्स - "पिता का आज्ञाकारी कुल्ल गोरैया" | एक दिन आधी रात के दो बजे, १६ तारीख को कुल्ल गोरैया १६ हजार लिए मोरेह पहुँचता है | तीन दिनों तक पिता से झगड़ा कर समझा कर मिले थे १६ हजार | सोचा था कोई कारोबार करेगा, जिंदगी सवारेगा | अब तो दूसरों के और १६ हजार ब्याज हैं | पिता के १६ हजार तो जिंदगी सवारने में ही लग गए | कौन सी जिंदगी - समय पर एक नियम के अधीन चलने वाली जिंदगी | नियमित रूप से उठने और डूबने वाली जिंदगी | अब शराब को ही ले लो, रोज़ नियमित रूप से सुबह आधी बोटल | दोपहर के बाद दूसरी आधी मिलती है | और रात को नियमित रूप से तीन पाव की एक बोटल पीता है | एक दिन मोरेह में चिट्ठी वाला चिड़ा आया | पिता की चिट्ठी कुल्ल को दे दी | फिर.......

कुल्ल : (चिट्ठी पढ़कर)

चैलेंज चैलेंज, मैं कुल्लचन्द्र मङाङ हूँ | क्या कोई पंगा ले सकता है मुझसे | किसका पिता - मेरे कोई पिता नहीं है | अगर माँ के साथ तुम्हारी मुलाकात

नहीं होती, तो क्या मैं भी राजमहल में जन्मा नहीं होता ? मैंने तुमसे १६ हजार लिए क्या इसलिए पंगा ले रहे हो | अबे बुड्ढे, बता तुझे कितने किलो १०० रुपए चाहिए | दे सकता हूँ बता रहा हूँ | मैं कुल्ल गोरैया | बहुत कर सकता हूँ मैं, सुन लो | मैं किसी से नहीं डरता, मेरा कोई घर नहीं है | पिता नहीं है, माँ नहीं है | चलेंजे चैलेंज कौन है बाहर आओ |

(कुल्ल ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगता है |)

चाचाजी : बेटा, बेटा बंद करो | स्पीकर फट जाएगा | बंद करो, बोला न बंद करो |

शिकारी : अच्छा बंद करता हूँ, बंद करता हूँ |

(कुल्ल मायूस सा अन्दर चला जाता है |) कैसा रहा चाचाजी ?

चाचाजी : तुम्हारा यह करेक्टर कुछ अति लगता है | उसके शब्द कुछ ज्यादा ही कठोर है | वो उसके पिता हैं |

शिकारी : चाचाजी आप नहीं जानते | मोरेह का जो कुल्ल गोरैया है | वो यही है| देखा अपने पिता की चिट्ठी मिलते ही उसने क्या क्या कहा ? दिखाऊँ क्या और ?

चाचाजी : बहुत हुआ.....बहुत हुआ, बस | अब आगे क्या होने वाला है मुझे सब पता चल गया |

शिकारी : आगे तो सब एक्शन है | फुल एक्शन देखकर पिता बेहोश हो जाएंगे और फिर कभी नहीं उठेंगे | यहीं है चाचाजी, चिट्ठी की वजह से जो कुछ भी घटित हुआ था | अब बताओ चिट्ठी पहुँचाये ? बूढ़े को मारना चाहते हो क्या ?

चाचाजी : मैंने ऐसा तो नहीं कहा कि पहुँचाना जरूरी है | अब अगले का क्या हुआ ? (शिकारी अगली चिट्ठी पढ़ता है |)

शिकारी : अब यह चिट्ठी मोहल्ले वालों की तरफ से राजा को की गई शिकायत है |

चाचाजी : वो वाली चिट्ठी तो पहुँचानी जरूरी है | मोहल्ले की बात है, बहुत जरूरी, राज्य का मामला है |

शिकारी : कल के भविष्य का हाथ तोड़ना चाहते हैं क्या ? घास खाने दीजिए क्या होता है, डंडा खाने से तो वही अच्छा है |

चाचाजी : जो कहना चाहिए था, वही तो कहा | डंडे को मात देने वाले बहुत हैं |

शिकारी : कहने लायक कोई बात नहीं है | डंडे को मात देने वाला कोई नहीं है, राजा को हराने वाला कोई नहीं है | क्या कहा है ?

(चिट्ठी पढ़ता है - हँसता है |)

रास्ता बनाओ, खाना दो यही न | अच्छा चलो राजा को चिट्ठी मिल भी गई | पता है फिर क्या होगा ?

चाचाजी : बताओ.......|

शिकारी : आप नहीं देख पाओगे | एक बाल्टी खून बहेगा | आँख नहीं खोल पाएँगे आप | अच्छा तो देखिए | मोहल्ले की शिकायत राजा तक पहुँच जाती है | फिर ड्रेंग......ड्रेंग....... पेश है नाटक - "क्रांतिकारी और बंसी बजाने वाला", अभिनय करने वालों में -

राजा के रूप में.........नौकर | क्रांतिकारी के रूप में......झगड़ालू |

पेश है - "क्रांतिकारी और बंसी बजाने वाला"

(राजा और उसके कुछ दास बाहर आते हैं | राजा चिट्ठी पढ़ता है |)

राजा : मोहल्ले वाले बहुत शोर मचा रहे हैं | शोर से हवा ख़राब होती है | शांति भंग होती है | बहुत लोग शिकायत में बहुत चिल्ला रहे हैं | सच में तो जो कुछ भी हो रहा है इसको मानने की कोई वजह नहीं है और नहीं मानने की भी कोई वजह नहीं है | फिर भी किसी को भी शिकायत में चिल्लाने की इजाजत नहीं है | जिसने चिट्ठी लिखी है उसे बाहर लाओ |

(कुछ दास बाहर चले जाते हैं - इबोहल को हाथ बाँधकर लाया जाता है |)

अबे....कहाँ के रहने वाले हो ?

इबोहल : जहाँ केव, पानी नहीं, राल कंगाली है। रास्ता नहीं, बिजली, नहीं मैं वहीँ से हूँ |

राजा : अच्छा तो तू तो वहीं से है, जहाँ हमेशा थाबल होता है | जहाँ हमेशा लाई हराओबा होता है, बहुत सारे एसोसिएशन हैं, बहुत सारे क्लब वाला मोहल्ला है न| चिट्ठी तूने लिखी है?

इबोहल : यह हजारों मोहल्लों की कहानी है |

राजा : मैंने पूछा चिट्ठी किसने लिखी ?

इबोहल : मोहल्ले में पढ़ा-लिखा, सुन्दर लिखने वाला अगर किसी को ढूढें तो वो मैं हूँ |

राजा : तेरे इन सुन्दर हाथों को अगर काट दिया जाए तो क्या होगा ?

इबोहल : मत काटो मुझे अपने हाथों से बहुत से काम करने हैं | एक दो लोगों का गला घोंटना है|

राजा : तुझे क्या काम इन हाथों से ? तेरे पास बोलने के लिए, झगड़े के लिए मुह है न | तेरे लिए हाथों का कोई काम नहीं | तेरे लिए सिर्फ बक-बक करने वाली तेरी जुबान और कभी न भरने वाला तेरा पेट, काफी है | अच्छा मैंने सुना तू चिल्ला रहा था कि तुझे शिकायत है, बता क्यों ?

इबोहल : शिकायत है, तभी चिल्ला रहा हूँ कि शिकायत है | मैं तो अब भी बोल रहा हूँ कि शिकायत है, शिकायत है, शिकायत है |

राजा : अबे ! बोल कोई शिकायत नहीं है |

इबोहल : नहीं बोलूँगा |

राजा : बोल शिकायत नहीं |

इबोहल : शिकायत है |

राजा : बोल शिकायत नहीं है |

इबोहल : शिकायत है |

राजा : बड़ा बुद्धू है रे तू | बोल शिकायत नहीं है, नहीं तो तू जरुर मरेगा | बोल कोई शिकायत नहीं है |

इबोहल : नहीं बोलूँगा | शिकायत है, शिकायत है |

राजा : (अपने दास से)

मार डालो इसे |

(राजा के दास इबोहल को मारते हैं | मारने के साथ साथ उसे कोई शिकायत नहीं है कहने को कहते है | इबोहल थक गया है, कराहने लगता है, रोने लगता है | राजा पास जाकर प्यार से बात करता है |)

राजा : (बहुत प्यार से पुचकारते हुए)

कोई शिकायत नहीं है, बोल दे तो मैं तुझे ठेका दूँगा, ठेका दूँगा |

(यह सुनकर इबोहल के कान खड़े हो जातें हैं | ऊपर देखता है | राजा प्यार से गीत गाने लगता है |)

बोल शिकायत नहीं है, ठेका दूँगा |

आओ, तुझे ठेका दूँगा आओ |

एक बार तो बोल शिकायत नहीं है |

बोल शिकायत नहीं हैं, ठेका दूँगा |

(दास बंसी बजाते हैं |)

इबोहल : वाह ! इतना प्यारा गीत तो कभी जीवन में नहीं सुना | कानों ने इतनी मीठी आवाज, इतना सोम्य, इतना सुन्दर, इतनी सुरीली आवाज कभी नहीं सुनी | कभी यमुना नदी के किनारे जिसने बंसी बजाई थी - कभी जिसने महाभारत में शंख नाद किया था, तुम अब भी जिन्दा हो ? इतना सुरीला गीत आज पहली बार सुन रहा हूँ |

शिकारी : उस नौजवान ने कभी अपनी जिंदगी में इतना सुरीला गीत, इतना सोम्य, इतने प्यारे शब्द कभी नहीं सुने थे | चूँकि कभी इतनी सुरीली आवाज नहीं सुनी थी इसलिए उसके कानों में खुजलाहट होने लगी | ऐसा लग रहा था जैसे एक मुलायम सा कीड़ा कानों में घुसा जा रहा हो | यमुना नदी के किनारे बंसी की धुन सुनकर बैड़ियों में बंधी स्त्रियाँ, जैसे बेहोश हो गई थीं, उसी तरह वह नौजवान भी बेहोश हो गया |

(गीत गाता है)

इबोहल : प्यारा गीत, सुरीला गीत, तुमने तो मेरे कानों में खुजली कर दी, खुजली कर दी | मन बैचैन हो गया, मैं पसीने से भर गया | मुझसे अब और नहीं होता - और नहीं होता |

(इबोहल हाथों से अपने दोनों कानों को बंद करके चिल्लाने लगता है |)

शिकारी : इस तरह बेहोशी में गिर कर उस मोहल्ले का नौजवान कभी नहीं उठा |

(राजा और उसके दास उसका मृत शारीर धीरे धीरे अन्दर की ओर खींच लेते हैं | लाइट ऑफ)

(चाचाजी चुप चाप बैठे हैं - दुखी हैं)

शिकारी : चाचाजी, चाचाजी |

(जवाब नहीं देते, शारीर को हिलाता है)

चाचाजी

(चौंकते हैं)

चाचाजी : हुम......

शिकारी : क्या हुआ ?

चाचाजी : नौजवान मर गया न |

शिकारी : उसको तो मरना ही था चाचाजी | बंसी की तेज आवाज से उसके कान फट गए थें |

चाचाजी : वो लड़की और वो बूढ़ा बाप भी |

शिकारी : जी चाचाजी, सब मर गए | तो बताइए पहुँचाए क्या ये चिट्ठियाँ ?

चाचाजी : (भड़ककर) मैंने कब बोला पहुँचाना जरुरी है ?

शिकारी : नौजवान घास खाकर कुछ और दिन जिन्दा रह सकता है | वो बूढ़ा बाप भी, वो लड़की भी | चिट्ठियों को फाड़ देते हैं, किसी काम की नहीं है|

चाचाजी : चिट्ठियों का एक प्राप्तकर्ता तो होना चाहिए न |

शिकारी : बहुत बक - बक करता है बुड्ढा | चिट्ठियों का कोई प्राप्तकर्ता नहीं है | यहाँ जो लिखे गए हैं सब गलत एड्रेस हैं | उस बूढ़े का कोई बेटा है ही नहीं | उस लड़की का कोई प्रेमी है ही नहीं | मोहल्ले का भी कोई राजा नहीं | चिट्ठी में जो एड्रेस लिखा गया है, सब गलत है |

चाचाजी : रुको तुम भी, चिट्ठियों का कोई प्राप्तकर्ता तो होना ही चाहिए | चिट्ठियों को पढ़ने वाला कोई तो होना चाहिए | वो सबसे बाद में आने वाली गाड़ी में आएगा | ये चिट्ठियाँ देर से आने वाली गाड़ी में आने वाले लड़के की हैं | चिट्ठियाँ उसको देते है |

शिकारी : लेकिन हम तो वापस जा रहे हैं | और उसको तो सबसे बाद वाली गाड़ी में आना है |

चाचाजी : अच्छा तो चिट्ठी यहाँ रखते हैं | एक गड्ढा खोदो |

(चिट्ठी उसमे गाड़ देते हैं | उसके ऊपर एक साइन बोर्ड लगाया जाता है - उसमे लिखा है - "देर में आने वाली गाड़ी में आने वाले लड़के, ये चिट्ठियाँ तुम्हारी हैं" | दोनों चले जाते हैं |)

(अन्दर से आवाज आती है)

देर में आने वाली गाड़ी से आने वाले लड़के, ये चिट्ठियाँ तुम्हारी हैं |

तुम्हारा चिट्ठी वाला चिड़ा |

कविता

डॉ. अयिनम इरिङ
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
गवर्मेंट मॉडल कॉलेज गेकू
अरुणाचल प्रदेश

निर्गुण प्रेम

एक बार मैंने पूछा था ये निर्गुण क्या है ?

तुमने कहा था निर्गुण प्रेम है ।

जैसे गन्ने में

शक्कर का घुले रहना,

गुलाब की पंखुड़ियों में

खुशबू का महकना,

जैसे किसी मछली का

समन्दर को न देख पाना।

तुम कहते गये और मैं सुनती रही एक शागिर्द की तरह ।

उस क्षण जो उबटन तूने मेरे चेहरे पर मल दिया था,

आज भी दमकता है,

निर्गुण प्रेम की तरह ।

नदी

सदियों पहले की बात है

गांव के किनारे किनारे एक निर्मल नदी बहा करती थी ।

नदी गांव भर को शीतलता देती,

नदी किनारे बैठकर लोग घण्टों आराम करते ।

एक दिन लोग प्रतीक्षा करते रहे, पर नहीं आई नदी ।

कोई कहता

नदी के नीचे बिछी जमीन पर किसी ने छेद कर दिया है ।

कोई कहता

किसी ने जंगल के विशाल पेड़ों को

एक एक कर काट गिरा दिया है

और पानी धरती के किसी तहख़ाने में कैद पड़ा है ।

आज भीषण गर्मी में तपती भू लोगों के तलवें जला रही है ,

और नदी की लाश के ऊपर मछलियों की भी लाशें बिछने लगी हैं ।

उफ़्फ़ म्हारी येतु !जुल्फें !

रीतामणि वैश्य
9435116133

जवानी जब सर चढ़ती है तब बच्चों का दिमाग काम नहीं करता और जब अनुभव का भूत सर पर चढ़ता है तब बुजुर्गों का दिमाग नाकाम होता है । जवानी में प्रेमी के पंख लगते हैं और उन नए लगे पंखों को जड़ से उखाड़ने वाले बुजुर्गों की भी कमी नहीं होती।

'हैप्पी बर्थडे तू यूहैप्पी बर्थडे तू यू अंजलि ....' कहते हुये एक पंद्रहसोलह साल - की लड़की घर के अंदर पहुँची और कमरे को सजा रही दूसरी एक हमउम्र लड़की के गले लग गयी।

'थैंक यू माइ डियर एंजेलिना' कहकर अंजलि भी उससे लिपट गयी ।

'यू आर मोस्ट वेलकम अंजलि ।'

अंजलि ने जन्मदिन की शुभेच्छा ग्रहण करते हुये उसे सोफ़े पर बैठाया।

'केक पहुँच गया क्या?' दबी आवाज में एंजेलिना ने पूछा।

'अभी नहीं। चुप रहो। सरप्राइज़ देना है सबको।' अंजलि ने भी धीरे से कहा।

साल पूरा कर सोलहवें में कदम रख रही है। दसवीं क्लास अंजलि अपना पंद्रहवाँ में पढ़ रही यह लड़की अत्यंत सुंदर है। लंबा छरहरा शरीर। सलोना रंग, बड़ीबड़ी काली - आँखें, कानों तक फैली भौहें आदि से वह यौवन के इस सोलहवें साल में अनूठी बन पड़ी है। उसके सौन्दर्य का मूल केंद्र है उसके घने,लंबे,काले और सीधे बाल,जो देखते ही बनते हैं। उसे भी अपनी सुंदरता के इस राज का पता है। इसीलिए वह अपने बालों का खास खयाल रखती है। वह नियमित रूप से बाल धोती है, उन्हें गूँथती है,खोलती है,सजाती है,सँवारती है और उन्हें सुंदर बनाए रखने के लिए जरूरी हर एक काम करती है। सुबह नहातरह की अदाओं में -धोकर उसने बालों को नए स्टाइल में बाँधा और तरह-फोटो खींचकर फेसबुक और व्हाट्सएप के स्टेटस में लगा दी । मिनटों में ही लाइक और कमेंट से उसके पोस्ट भर गए ।

अपने जन्मदिन का जश्न मनाने के लिए अंजलि बैठकखाना सजा रही है। जन्मदिन मनाने के लिए उसकी नानी भी आ गयी थी। इसबार वह बोर्ड की परीक्षा देने

वाली है। दसवीं की लड़की को कितना पढ़ना पड़ता है उसकी नानी को पता है। ऐसे ही क्या उन्होंने अपने बेटे को कॉलेज का प्रोफेसर बनाया है? बहू एक स्कूल में टीचर है। पति के जल्दी गुजर जाने के बाद उन्हें अपने बच्चों को बड़ा करने में तकलीफ हुयी। अकेली औरत के लिए बच्चों को गढ़ना मज़ाक नहीं होता है। बेटे को तो उन्होंने खूब पढ़ाया, पर बेटी शिखा को वे ज्यादा नहीं पढ़ा पायी। जब वह बीए पढ़ रही थी, तभी उसके लिए एक रिश्ता आया, अच्छा रिश्ता। लड़का पी डब्ल्यू डी में काम करता है। सरकारी नौकरी है। उसे कुछ नहीं चाहिए था, सिवाय लड़की के । शादी तय करने के दिन लड़का खुद आया था। उसने कहा था-'माँ जी, शादी के दिन आपका आँगन और शिखा के सिवा मुझे कुछ नहीं चाहिए।'

लड़का अच्छा था। जैसी बात वैसा काम। शुभ दिन देखकर शिखा और गौतम की शादी कराई गयी। शादी के बाद शिखा ने गौतम से कहा -

'मेरे पढ़ने की ख़्वाहिश अधूरी रह गयी। '

'क्या कहना है साफसाफ कहो न।-' नयी दुल्हन की तरफ प्यार से देखकर गौतम ने कहा।

'मुझे पढ़ना है।'

'तुम्हें पता है एक क्लार्क कितना कमा सकता है । फिर भी तुम पढ़ना चाहती हो तो मैं मना नहीं करूंगा। पर...

'पर क्या?'

'मेरे पैसे बर्बाद तो नहीं होने दोगी न?'

'बिलकुल नहीं । मैं इतना आपसे कह सकती हूँ कि जितना आप मुझ पर खर्च करेंगे मैं उससे कुछ अधिक कमाकर दूँगी। '

'मैं तुम्हें कमाने के लिए नहीं कह रहा हूँ। बस मेरे पैसों का सद व्यवहार हों, बस इतना ही।'

'ठीक है।'

लिखाकर बीए पास कराया था। जल्दी उसे नौकरी भी -गौतम ने ही शिखा को पढ़ा मिल गयी।

नानी ने सोचा कि नातिन को परीक्षा की शुभेच्छा देना भी हो जायेगा और जन्मदिन का आशीर्वाद भी वे देती आएंगी। वह इस साल जी लगाकर पढ़ें और फिर

रिज़ल्ट के समय वे फिर आएंगी। अंजलि ने अपनी दोस्त से नानी का परिचय करवाया -

'शी इस माइ ग्रांड मदर। मेरी इकलौती नानी हैं।' हँसते हुये उसने कहा।

'हाई नानू।' दाये हाथ की उँगलियों को हिलाते हुये एंजिलाना मुस्कुराई ।

नानी की असहजता बढ़ गयी। उन्होंने कृत्रिम मुस्कराहट से उसकी ओर देखा और अंदर चली गईं। जाते जाते उन्होंने अंजलि को बुला लिया।-

'यह कैसी लड़की है?'

'अच्छी है, मेरी फ्रेंड है ।'

'तेरी फ्रेंड ऐसी है? मुझे हाई नानू कहा। न नमस्कार, न प्रणाम। चरणस्पर्श तो दूर की बात !'

'नानी, जमाना बदल गया है। अब ऐसा ही चलता है।'

कुछ आधे घंटे बाद दरवाजे की घंटी बजी। अंजलि ने दरवाजा खोला। रेपोज का एक बड़ा पार्सल आया। एक बड़ासा केक और एक गुलदस्ता। अंजलि ने पार्सल को - लेकर डाइनिंग टेबल पर रखा। फिर धीरे से उसने पैकेट खोला । तीनपरतों का एक केक, ऊपर आइसिंग किया हुआ था 'To my LOVE'। केक को देखकर एंजेलिना बोली -

'OMG...कितना बड़ा केक!'

'तू जल रही है?' अंजलि ने कहा।

'क्यों नहीं?'

- इतने में शिखा अंदर से आई और केक को देखकर लगभग चिल्ला पड़ी

'हाय राम यह केक कहाँ से आया !? मैं तो केक बना चुकी थी।'

'केक कहाँ से आया छोड़ो। यह बताओ कि केक कैसा है? देखो न कितना सुंदर , कितना बड़ाहै न !?' अंजलि माँ से बोली।

'इतना सुंदर और इतना बड़ा क्या मतलब है इसका !? मतलब कितने पैसे उड़ाए? अजी,क्या जरूरत थी....'

'नहीं, माँ। केक पापा नहीं लाये।' अंजलि बोली।

'तो तू लायी है? कहाँ मिले इतने पैसे?'

'मैं भी नहीं लायी।'

‘तो कहाँ से आया?’

‘मेरे दोस्त ने भेजा है।’

‘यह दोस्त कौन है? और यह क्या लिखा है? To my Love क्या मतलब है इसका?’

‘वह मुझे प्यार करता है।’

शिखा के सर पर मानो आसमान टूट पड़ा। अंजलि की इस घोषणा ने घर में तहलका मचा दिया।

‘यह मैं क्या सुन रहा हूँ अंजलि? यह तुम्हारे लिखनेपढ़ने का समय है। अपना - कैरियर बनाओ।’ गौतम की इस बात पर अंजलि चुप रही। इस बार माँ बोली-

‘मुझे पता था कि यह लड़की जरूर कुछ गुल खिलाएगी। अरे, तुझे हमने क्या नहीं दिया, तेरे लिए क्या नहीं किया? तूने हमारी नाक कटवा दी। हमारी इज्जत को तू सरे आम नीलाम करने पर तुली है.....’

इसी बीच दरवाजे की घंटी बजी। अंजलि के मामा मामी आए हैं। आते ही मामी ने उसे गले से लगाकर जन्मदिन की शुभेच्छा दी। मामा ने तोहफे का एक पैकेट उसके हाथों में थमा दिया। सबको गंभीर देखकर मामा ने कहा -

‘क्या हुआ भाई?जन्मदिन के दिन सब इतने गुमसुम क्यों?’

मामा केइस सवाल के उत्तर में कोई कुछ कहता उससे पहले ही फिर से दरवाजे की घंटी बजी। अंजलि दरवाजा खोलने गयी। दरवाजे के खोलते ही एक सत्रह-अठारह साल का लड़का अंदर दाखिल हुआ। उसके हाथों में एक डिब्बा था। लड़के का था। उसके बाल लंबे थे। उसने एक काली टी कद लंबा और शरीर पतलाशर्ट और टर्न जींस पहनी थी। जींस जगहजगह इतनी फटी हुयी थी कि उसके पैरों के काफी हिस्से - वहाँ टैटू किया हुआ था। हाथों में कंगन और कानों में -दिखाई दे रहे थे। बदन के यहाँ टॉप पहने था। वह कुछ चबा रहा था, जिसकी तीखी बू ने पूरे कमरे को अपने कब्जे में कर लिया था। उसे देखकर अंजलि असमंजस में पड़ गयी। बोली -

‘तुम यहाँ?’

‘हाँ बेबी। तुम परेशान होगी और मैं न आऊँ यह कैसे हो सकता है?क्या हुआ?’ सामने खड़े लड़के ने कहा।

‘अरे तुम हो कौन? इस तरह अंदर कैसे आ गए?’ मामा ने पूछा।

'तुमने बताया नहीं।' अंजलि की तरफ देखकर लड़के ने कहा। 'अच्छा मैं ही बता देता हूँ। मैं टोनी हूँ, अंजलि का बॉयफ्रेंड।?'

'टोनी, तुमने जो केक भेजा है, उसी को लेकर हंगामा हो रहा है।' इस बार अंजलि बोली।

'अंजलि , यह बोल क्या रहा है?' इस बार माँ ने पूछा ।

'हाँ, यह सच है। मैं भी टोनी से प्यार करती हूँ।' अंजलि बोली।

अंजलि के इस अप्रत्याशित जवाब से सब हक्केबक्के रह गए। कोई कुछ कहता -उससे पहले टोनी ने कहा

'आंटी, प्लीज अंजलि को कुछ मत कहिएगा। हम दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं।'

हाथों में थ टोनी ने अपने डिब्बे को अंजलि केमाते हुये कहा-'उफ़फ़ तुम्हारी ये ! ये जुल्फें मुझे बहुत पसंद हैं। यह हेयर केयर बॉक्स है। इसमें शैम्पू कंडीशनर !जुल्फें, सीरम सब हैं। सॉरी, मैं इतनी हड़बड़ी में था कि गिफ्ट पेक कर न सका ।'

टोनी ने सबके सामने अंजलि के बालों को सूंघा और फिर उन्हें चूम लिया और 'बाय' कहता हुआ वह फिल्मी अंदाज में तेजी से कमरे से बाहर निकल गया। टोनी के पीछेपीछे एंजेलिना भी चल पड़ी। टोनी तो चला गया-, जातेजाते मानो शिखा के मन में - लगी आग में घी डाल गया। उसने अंजलिके बालों को जकड़ लिया और उसके गाल पर एक जोरदार थप्पड़ जड़ दिया। वह अंजलि को घसीटकर अंदर के कमरे में ले गयी। वह रोने लगी -' माँ, मत मारो, दर्द हो रहा है। माँ, बाल छोड़ दो। ये टूट जाएँगे। मेरा सर फटा जा रहा है।'

यह सब इतनी जल्दी हुआ कि बाकी लोगों को क्या करेंक्या न करें सोचने का मौका ही न मिला। मामामामी-, नानी, पापा सब शिखा के चंगुल से अंजलि को बचाने में लग गए और कुछ समय बाद यह संभव हो पाया। अंजलि ज़ोरजोर से रो रही थी। - शिखा की मुट्ठियों में अंजलि के कुछ बाल रह गए। उसने अपने उखड़े हुये बाल देखे तो चिल्लाते हुये माँ से पूछा -' अरे, तुमने ऐसा क्यों किया? क्यों मेरे बालों को नोच डाला?'

ज़ोर से -ज़ोर से रो रही थी और शिखा ज़ोर-माहौल बिगड़ चुका था। अंजलि ज़ोर गालियाँ दे रही थी। कुछ समय तक बाकी सब मंत्रपूत मूर्तियों की तरह मौन दर्शक बन

सुन रहे थे। अंजलि की मामी ने अंज-देखलि को अपने कमरे में ले जाकर प्यार से पूछा-‘ अंजलि, क्या है यह?’

‘आज कल सबके बॉयफ्रेंड और गर्लफ्रेंड होते हैं।’

‘अच्छा।’

-कुछ समय की चुप्पी के बाद मामी फिर से बोली

‘ठीक है तुम्हें टोनी से प्यार है। पर टोनी कौन है, क्या करता है?’

‘उसके बारे में मैं ज्यादा नहीं जानती।’

‘जिंदगी तुम्हारी है, आज के बाद कल तुम बालिग हो जाओगी। जो मन में आए तुम कर सकोगी। पर इस पर ध्यान रखना कि तुम किनके साथ दोस्ती कर रही हो। दोस्त जीवन की अनमोल संपदा होते हैं। अच्छे दोस्तों के साथ रहने से अच्छा होता है,खराब दोस्त बर्बाद कर छोड़ता है।’

‘मेरे दोस्त ही तो हैं कि जिनके आगे मैं सब कुछ बोल सकती हूँ, अपने को खोल सकती हूँ। पापा का समय ही नहीं मेरे लिए। काम काम और काम । अगर कभी समय मिल भी गयाअपनी मर्जी से तो कुछ कर ही नहीं सकते। हर एक बात पर माँ , बच !की रजामंदी लेनी पड़ती है। और माँपन से अब तक मेरे लिए फुर्सत नहीं निकाल सकी। केवल खाना खिलाने के लिए माँ और जरूरत की चीजें देने के लिए पापा होते हैं क्या?’

‘यह कब से चल रहा है?’ मामी अंजलि की बातों पर कुछ न बोलते हुये मूल मुद्दे पर आई।

‘परसो ही मैंने टोनी से येस कहा है।’

‘क्या है उसमें कि वह तुम्हें अच्छा लगा?’

‘वह मेरी हर एक बात सुनता है, मानता है।’

‘परसो तुमने येस कहा और आज तुमने उसे घर बुला लिया?’

‘मैंने उसे नहीं बुलाया। बस एक मेसेज किया था कि उसके भेजे हुये केक को लेकर घर में हंगामा मच गया है। मुझे यह नहीं पता था कि वह घर आ जाएगा और ....’

‘उसने तो ठीक नहीं किया। माँ का गुस्सा आना जायज है न !’ मामी ने अंजलि के मन में माँ के प्रति उठ रहे विद्वेष की भावना को कम करने की कोशिश की।

'माँ को गुस्सा करने के सिवा कुछ आता भी है क्या? माँ ने हमेशा से कहा कि क्या नहीं करना चाहिए । पर उसकी न करने की लंबी लिस्ट में यह कभी शामिल नहीं हुआ कि लड़के से ऐसे मिलना गलत है। उसने कभी नहीं सिखाया कि क्या करना है। कभी कुछ बताती या पूछती हूँ तो बोलती है ' चुप रह बेशरम'।'

'ठीक है,माँ को तुम्हारी हर बात पर नाराज नहीं होना चाहिए । पर आज जो कुछ भी हुआ क्या वह सही है?'

'नहीं।' धीमी आवाज में अंजलि बोली।

'तो?'

'वही तो मामी। गलती हो गयी।'

'कोई बात नहीं। गलती तो इंसान से होती ही रहती है। बस समय रहते गलती समझ जाने से सुधारने का अवसर मिलता है। जिंदगी में हर दिन छोटीबड़ी घटनाएँ - होती रहती हैं। उनसे हमेंसीख लेनी चाहिए। जो अच्छा हैं, उनको लेना है, जो खराब हैं, उन्हें छोड़ना है। क्या तुम टोनी से मिलना, बात करना छोड़ सकोगी?'

'हाँ, मामी। छोड़ दूँगी। आज ही से मैं उसे भूलने की कोशिश करूंगी।...पर मामी मेरे बाल किस बेरहमी से माँ ने उखाड़ दिये देखिये न। हाय मेरे बाल....' अंजलि सिसकने लगी।

-ल टूट चुके थे। वह बोलीमामी ने अंजलि के सर को देखा । कुछ बा

'सर इधरउधर सूज गया है-,लाल हो गया है। रुको थोड़ासा आइस लगा देती हूँ।-' वह आइस लेने खड़ी हुयी। इतने में अंजलि बोली -

'आइस लगाने से क्या होता है मामी?'

'आइस लगाने से जलन कम होता है,दर्द मिट जाता है।'

'रहने दीजिये । आइस तो बाहरी इलाज ही करेगा न !'

अंजलि मामी के गले से लगकर रोने लगी। मामी ने उसे सहारा दिया। उसने अंजलि का माथा चूमते हुये बिस्तर पर लिटा दिया। उसने अंजलि का सर सहलाते -हुये कहा

'तुम अच्छी बच्ची हो। मैं जानती हूँ तुम बड़ों की बात जरूर मानोगी। मैं भैया और भाभी से बात करूंगी। अभी तुम थोड़ा आराम करो। जितना रोने का मन करे रो

लेना। रोने से मन हल्का होता है। शाम होने को आई। अब हम चलेंगे। अच्छी तरह से खाना और पढ़ना। अपना खयाल रखना।'

बैठकखाने में सब गंभीर मुद्रा में बैठे थे। वे बातें कम और चिंतन अधिक कर रहे थे। बैठक में प्रवेश करते हुये मामी बोली -'दीदी और जीजा जी, अंजलि अभी नादान है। उम्र में वह बड़ी हो रही है, पर उसका मन छोटे बच्चे की तरह ही है । वह आप सबके प्यार के लिए तरस रही है। इस फूल सी बच्ची को सावधानी से संभालिए। उसके साथ कठोर होने से उसके किशोर मन में विद्रोह घर कर जाएगा । उसे कुछ मत कहिए। उसे थोड़ा समय दीजिये । सब ठीक हो जाएगा।'

जन्मदिन का केक फेंक दिया जा चुका था। खाना खाने का किसी का मन नहीं रहा। फिर भी मामी ने सबके लिए खाना परोसा,पर खाया किसी ने नहीं। जातेजाते - मुड़कर लेटी हुयी थी। तभी उसका नानी अंजलि के कमरे में गयी। वह दीवार की तरफ सिसकना कम नहीं हुआ। वह अपने सिर को सहला रही थी। उसे नानी के कमरे में दाखिल होने की खबर नहीं थी। नानी धीरे से जाकर उसकी पीठ की ओर बिस्तर पर बैठ गयी। अंजलि ने मुड़कर देखा कि भीगी आँखों से नानी उसे देख रही है। वह नानी की छाती में समा गयी और छोटी बच्ची की तरह फुटफुटकर रोने लगी। नानी उसे - पुचकारती रही,पर बोली कुछ नहीं। आँखों के सामने तेजी से घटी अनाकांक्षित घटनाओं को उन्होंने निगल लिया था, उन्हें वे पगुरा रही थीं। बेटे के बुलाने पर वह एक गंभीर मन के साथ अंजलि को वैसे छोड़ घर के लिए निकल पड़ी।

शिखा को मानो इसी का इंतजार था। उनके जाते ही वह अंजलि के कमरे में ,गयी। वह बोली'तैयार हो जा ।चल मेरे साथ। '

'कहाँ?'

'जहाँ मैं ले जाऊँ।'

अजली कुछ समझ नहीं पायी। शिखा उसका हाथ पकड़ कर एक प्रकार से उसे खींचने लगी। कुछ अनहोनी की शंका से वह बोली-

'मुझे कहाँ ले जा रही हो? मुझे अभी कहीं नहीं जाना।'

शिखा अंजलि को बरामदा तक ले आई। बाहर गाड़ी खड़ी थी। ड्राइवर ने गाड़ी स्टार्ट कर दी। शिखा ने घसीटते हुये गाड़ी की पीछे वाली सीट पर उसे धकेल दिया और खुद भी उसके पास बैठ गयी। ड्राइवर ने कहा -

'मैडम, पिन नंबर दीजिये।'

'5769'

गाड़ी चल पड़ी। ड्राईवर सामने के आईने में पीछे वाली सीट की घटना देख रहा था। पर रिवर्स मिरर में दृश्य उल्टे दिखाई पड़ते हैं। घटना के चाक्षुस दर्शन की आकांक्षा से वह बारबार पीछे की ओर मुड़ रहा था। कुछ दूर चलने के बाद गाड़ी चौराहे के -ब्यूटी पार्लर के सा मार्केट केमने खड़ी हो गई।

'मैडम,रुपये हुये। 155 '

शिखा ने तुरंत पैसे निकालकर उसे दिये और उसे उसी मुद्रा में पकड़कर पार्लर तक खींच लायी। शरम के मारे अंजलि ने अपने दुपट्टा से सर और मुँह ढँक लिए। वह -बोलती रही 'क्या कर रही हो प्लीज माँ ? सब लोग देख रहे हैं.......'

पार्लर पहुँचकर शिखा ने एक हाथ से दरवाजा खोला और दूसरे हाथ के पंजे से अंजलि को मुक्त करते हुये कहा -

'इसे गंजा कर दीजिये।'

-अंजलि चौक पड़ी। ब्यूटीशियन ने भी हैरानी जताते हुये कहा

'यह आप क्या कह रही है?

'हाँ, मैं ठीक कह रही हूँ। इसे गंजा कर दीजिये।'

'पर यह तो रो रही है। '

'इसे पूछने की जरूरत नहीं है।'

'मैं कस्टमर की मर्जी के खिलाफ काम नहीं करती।'

'यह बहुत बदमाश हो गयी है।'

'तो?

' इसके बाल सब मुसीबतों की जड़ हैं। इन्हें साफ कर देने से न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।'

'देखिये, आपको भी ऐसा नहीं करना चाहिए।'

'यह हमारा घरेलू मामला है। आप दखलंदाजी न करें।'

'माफ कीजिएगा। मामला अगर घर का है तो घर में ही क्यों नहीं निपटाती? क्यों अपनी बेटी को सरे आम बाजार में बेइज्जत कर रही हैं? क्यों आप मुझ पर दवाब डाल रही हैं? आप खुद इसके बाल क्यों साफ नहीं कर देती? मैं यहाँ लड़कियों का

श्रृंगार करती हूँ। उन्हें सजाती हूँ, सँवारती हूँ,सुंदर बनाती हूँ । पार्लर में किसी को कुरूप नहीं बनाया जाता। ' ब्यूटीशियन की बातों में मानो अंजलि को डूबते को तिनके का सहारा मिला। उसने सर उठाकर उसकी तरफ देखा। एक पैंतीसलीस साल की चा-महिला। उम्र उसकी माँ के बराबर की ही होगी। चेहरा शांत, स्थिर और गंभीर। वह उसके पैरों से लिपट गयी और 'आंटी आंटी' कहकर रोने लगी। ब्यूटीशियन ने अपने हाथ अंजलि के माथे पर रख दिये।

'मैं आपसे अपॉइंटमेंट लेकर आई हूँ। शुरू हो जाइए।'शिखा ने फिर कहा।

'आपने मुझे बाल कटवाने के लिए अपॉइंटमेंट लिया था, गाँजा करने लिए नहीं। अपनी बेटी के साथ आप क्यों ऐसा कर रही है?'

शिखा के अहं को चोट पहुँची। वह क्रोध की जिस तेजी से अंजलि का सर मुंडवाने के लिए लायी थी, उसमें बाधा पहुँची। कुछ क्षणों के लिए ही सही अंजलि को किसी का आसरा मिला, अंजलि के सामने उसकी उपेक्षा हुयी, यह उससे सहा नहीं गया। उसने कहा -

'अरे, अब टीचर को नाइन से पाठ पढ़ना होगा !'

'आप टीचर हैं?'

'क्या मतलब?'

'कुछ नहीं।'

'मैंने इसे जन्म दिया है,मैं इसकी माँ हूँ। मैं जो चाहे इसके साथ कर सकती हूँ।'

'सच है कि बच्ची को आपने जन्म दिया है। इसे खिलाया है, पिलाया है। इसीलिए आप इसकी जिंदगी की मालकिन है, आप इस पर अपनी मनमानी कर सकती है। पर आपको यह गलतफहमी है कि आप इस बच्ची की माँ है। दरअसल में आप किसी की माँ नहीं हो सकती। माँ ममता का सागर होती है। बच्चे को दुखी देखकर कलेजा फट जाता है उसका। आपके सामने तो सूखे चट्टान भी शरमा जाये। यह मेरा पार्लर है, यहाँ मैं जो चाहती हूँ, वही होगा।'

'मैं जो चाहूंगी, वही होगा।' ब्यूटीशियन की ओर देखकर चुनौती के स्वर में शिखा बोली। वह फिर से अंजलि के हाथ पकड़कर उसे घसीटने लगी। अंजलि ने ब्यूटीशियन के पैर पकड़ लिये और 'आंटी बचाइए,बचाइए आंटी' कहकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।-

पार्लर के सामने कई लोग इकट्ठे हो गए थे। उनमें सामने के सैलून का नाई भी था लोगों को बाहर से कुछ दिखाई तो नहीं दे रहा था, पर अंदर के एकएक शब्द उन्हें - और अंजलि के बाह सुनाई दे रहे थे। शिखार निकलते ही नाई ने कहा -

'मैडम, मेरे सैलून में आइये। मैं अभी आपका काम कर देता हूँ।'

शिखा ने देखा कि बाहर एक भीड़ जम गयी है। उस माहौल से पराजित होकर उसे लौटना गँवारा नहीं हुआ। उसने सामने के सैलून की तरफ अपने कदम बढ़ाए। -ज बढ़ने लगीअंजलि के रोने की आवा

'प्लीज माँ ऐसा मत करो। मुझे गंजा मत करो। मैं आपकी हर एक बात मानूँगी। माँ...माँ...' कहकर उसने अपने पैर जमा लिए। शिखा की पूरी ताकत भी उसे अब हिला नहीं पा रही थी।

'यह लड़की ऐसे नहीं मानेगी।' स्वगत उक्ति के बाद शिखा ने नाई की तरफ देखते हुये मदद मांगी -'क्या कर रहा है? इसे ले चल अपने सैलून। '

नाई ने अंजलि को ज़ोर से पकड़ लिया और लगभग गोद में उठाकर सैलून के अंदर ले गया। उसने उसे कुर्सी पर बैठाने की कोशिश की,पर अंजलि को बैठा न सका तो उसे जमीन पर बैठा दिया। नाई ने कहा -'छोटू, उस्तुरा ला और शुरू हो जा।' एक बारहत-ेरह साल का लड़का उस्तुरा लेकर अंजलि के सामने खड़ा हो गया। अंजलि सर हिलाने लगी तो नाई ने सर को ज़ोर से पकड़ लिया। नाई की जकड़ में वह इस तरफ फँस गयी कि उसके लिए हिलना डुलना मुश्किल हो गया। उसका सर स्थिर हो चुका था। छोटू ने पहली बार अंजलि के सर पर उस्तुरा चलाया तो उसके कुछ बाल उसकी आँखों के सामने फैल गए। तब अंजलि ने अपना शरीर शिथिल कर दिया। पंछी पिंजरे में पूरी तरफ कैद हो चुका था। अब पंख फड़फड़ाने से क्या फायदा वह शांत हो गयी। !

कुछ बीस मिनिट के बाद अंजलि के सुंदर बाल उससे अलग हो चुके थे। चैन स लेते हुये शकी साँिखा ने नाई से कहा -'कितना दूँ बोल।'

'पचास रुपये दीजिये।'

शिखा ने सौ रुपये का एक नोट उसकी ओर बढ़ाया और वह वहाँ से चलने लगी। अब अंजलि को पकड़ने या जकड़ने की जरूरत नहीं थी। वह शांत हो चुकी थी। वह शिखा के पीछेबेटी की इस हालत को पीछे चलने लगी। बाहर गौतम भी खड़ा था।- देखकर उसे बहुत बुरा लगा। चौराहे के सारे लोग अंजलि को इस नए रूप में पाकर

ताक रहे थे। पापा ने दुपट्टा से उसका सर ढँक दिया । अंजलि को न अपनी इज्जत का ध्यान रहा, न शरीर का और न ही कपड़ों का । दुपट्टे को आसरा न मिलने से वह खिसक कर जमीन पर गिर गयी। उसे समेटकर पापा पीछे पीछे आये।-

ये सब कर घर पहुँचते समय शाम के करीब आठ बज चुके थे। अंजलि से मोबाइल छीना जा चुका था। उसका स्कूल जाना बंद कर दिया गया था। पापा ने कहा-

'आज अंजलि का जन्मदिन था और यह सब हो गया। दिन भर वह भूखी रही। उसे कुछ खिला तो दो।'

'आपके लाड़ के कारण ही वह बर्बाद हो चुकी है। अब से आप मेरे और उसके बीच मत आइयेगा। बच्चे को कैसे रास्ते पर लाया जाता है मैं जानती हूँ।'

'वह तो आज तुमने सबको दिखा ही दिया है।'

'हाँ, यही उसके लिए ठीक है। कुछ दिन खानापीना बंद कर दूँगी तो उसकी -एगी।हेंकड़ी निकल जा'

'भली हो या बुरी अपनी बच्ची है। बदमाश हो गयी तो फेंक तो नहीं पाएंगे न हम?'

गौतम की बात का शिखा पर कोई असर नहीं हुआ। वह अंदर चली गयी।

अमावस की गहरी रात थी । सब सो चुके थे। अंजलि को नींद नहीं आई थी। के सामने टहल रहा था। बाहर किसी की सीटी बजाने की आवाज आई। कोई उसके घर अंजलि के कान खड़े हो गए। घर का कुत्ता भौंकने लगा। अंजलि के थके तन्तु मानो बिजली गति से सक्रिय हो गए। वह लगभग कूदकर बिस्तर से उठी। खिड़की से बाहर झाँका। नहीं कुछ दिखाई नहीं दिया। उसने धीरे से दरवाजा खोला और बाहर निकल गयी । कुत्ते का भौंकना बंद हो चुका था। घने अंधेरे में वह सहम गयी। वह अपने कमरे की तरफ मुड़ी । हल्की रोशनी में उसकी नजर दरवाजे के ठीक सामने दीवार पर टंगी माँबड़े सींग निकल -पापा की फोटो पर पड़ी। अचानक शिखा के सिर पर दो बड़े-गुहार लगाकर आए। उसके दाँत लंबे होकर अंजलि की तरफ आने लगे।उसने मदद की पापा की तरफ देखा। लाचार गौतम अपनी जगह पर तटस्थ भाव से मुस्कुराता रहा। अंजलि अंदर से थरथर काँपने लगी। वह तुरंत पलटी और अंधेरे में समा गयी।

मैत्रेयी पुष्पा से खुराइजम बेबीरोशिनी की बातचीत

खुराइजम बेबीरोशिनी
शोध छात्रा, हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय
काँचीपुर इम्फाल

मैत्रेयी पुष्पा हिंदी की ऐसी सुविख्यात लेखिका हैं, जो किसी परिचय की मोहताज़ नहीं हैं। उनकी विभिन्न औपन्यासिक रचनाओँ ने हिंदी जगत को आन्दोलित ही नहीं किया बल्कि उनके पात्र लम्बे समय तक चर्चा के केन्द्र में भी रहे हैं। मैं उनके उपन्यासों को पढ़ती रही हूँ। मुझे भी उनके उपन्यासों के पात्रों ने काफी प्रभावित किया है, इसलिए शोध विषय के रूप में मैंने उनके उपन्यासों को चुना। मैं बहुत समय से उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहती थी। मेरी यह इच्छा दिनांक 15 जून 2023 ई. को पूरी हुई। नई दिल्ली स्थित उनके आवास पर उनसे बातचीत का अवसर मिला। बातचीत के क्रम में ही उनके जीवन चरित्र व साहित्य की रचना प्रक्रिया के बारे में विविध प्रश्नोत्तर हुए, जिनका विवरण इस प्रकार है -

शोधार्थी : आपको सहित्य लेखन के प्रति रुझान कैसे हुआ?

लेखिका : हर आदमी की अपनी एक रूचि होती है। किसी की खेल में, किसी लड़की की सिलाई

- बुनाई में, संगीत में, गीत में, नृत्य में, होती है ना।ऐसे ही मेरी थोड़ी रुचि लिखने - पढ़ने की तरफ थी। ये नहीं कि मैं बड़ी हो गई थी, तब मैं तीसरी क्लास में

थी। उस समय मैं लिखती तो नहीं थी लेकिन मुझे जो कविताएँ होती है ना, बच्चों की, बहुत अच्छी लगती थीं । थोड़ी और बड़ी होने पर सुभद्राकुमारी चौहान की बाल-कविताएँ रट ली थी। वो कविताएँ मुझे समझ में नहीं आतीं थीं, फिर भी उनको ज्यादा पढ़ती थी। खैर ऐसा करते-करते जब मैं ग्यारहवीं - बारहवीं कक्षा में आ गई, तो मैंने चिट्ठी लिखना प्रारंभ किया, चिट्ठी लिखने की कोशिश तो मैंने नौवीं-दसवीं कक्षा में भी की थी, जैसे; बच्चे कर लेते हैं। मेरा कोई सगा भाई नहीं था, जो गाँव के लड़के थे ना, उनको भाई बनाकर राखी बाँधती थी। तो मैं उनको एक कविता लिख कर देती थी। अपनी नहीं दूसरे की, सुभद्रा कुमारी चौहान की, "भैया कृष्ण भेजती हूँ मैं राखी"। वो अब कहते है, जब तू राखी बाँधती थी, तू कविता लिखके देती थी, जो हमारी सम्पत्ति थी। मैं कहती थी कविता, क्यों लिखती हूँ? तो वे कहते -हमें अब लगता है, हाँ कुछ था। खैर जब स्नातक कोर्स में पढ़ने लगी तो मैंने विज्ञान नहीं लिया। मैंने कला शास्त्र लिया, जिसमें मैंने इतिहास और फिलॉसोफी की पढ़ाई की, फिर भी मेरी रुचि हिंदी और संस्कृत में रही। उसमें भी खासतौर पर हिंदी विषय पर मेरी विशेष रुचि थी, संस्कृत में तो थी, मगर मैं उसका प्रयोग नहीं कर सकती थी। एक बात और बताऊँ मैं तुम्हें, तुम हँसोगी- मुझे चिट्ठी लिखने का इतना शौक था, कि मैं जब आठवीं क्लास में पढ़ती थी, तब मैं बारह साल की हो गई होंगी। उन दिनों हमारे गाँव की चकबंदी करने के लिए एक नायब तहसीलदार आए। तो वो मुझे बड़े अच्छे लगने लगे। तब मैं बच्ची थी, सातवीं- आठवीं क्लास में पढ़ रही थी। जब वो आता था, तो साईकिल चलाकर आता था। वो नेवीब्लू का पैण्ट और सफेद कमीज पहनते थे। जैसे अब मैं याद करती हूँ तो उसकी बड़ी अच्छी पर्सनालटी थी। वो मुझे बड़े अच्छे लगे और कुछ भी बात नहीं थी। मैं पैदल पाँच किलोमीटर जाती थी, तो रास्ते में वो मुझसे पूछते थे -"मुन्नी पढ़ने जा रही हो" ।

शोधार्थी : ये तो आपकी आत्मकथा में है ।

लेखिका : हाँ ..है ना। एक-चाहे तो आकर्षण कह लो। चाहे कोई मेरे भाई-बहन नहीं थे, वो कह

लो। मैं बिल्कुल अकेली थी, तो किसी का इतना ध्यान देना मुझे बहुत अच्छा लगा, तो मैंने भी उनको एक चिट्ठी लिख दी, तो मेरी माँ को पता चल गया, मैं पकड़ी गई थी। उसमें बड़ा बवाल मचा गाँव में। मेरी माँ ने मुझसे कहा कि क्या लिखा था चिट्ठी में? लिख अभी । मैंने फिर डर के मारे चिट्ठी फिर से लिख दी। जो मैं अब कह

रही हूँ तुमसे, यह सब मैंने किताब में भी लिखा है। ये सारे लिखने के ही लक्षण थे। वरना कोई नायब तहसीलदार आए या कोई आए उससे छोटी बच्ची का क्या मतलब ? जो अच्छा-सा व्यवहार वो करता था केवल इसीलिए, लेकिन चिट्ठी ही लिखना था मुझे। जो लिखित है ना, उसमें सब उतारा जा सकता है। जैसे कि मैं कुछ कह आती तो कौन जानता था कि मैंने क्या कहा? या उन्होंने क्या कहा? उन्होंने तो कुछ कहा ही नहीं, इतना ही कहा कि "मुन्नी तुम स्कूल जा रही हो|" खैर यहाँ से शुरू होता है लिखना। इसमें बवाल मच गया।

शोधार्थी : आपने एक बार अपनी आत्मकथा में जिक्र किया था कि आपको गाँव से अपनी खेतीबारी का पैसा नहीं दिया गया था? तो आपने उस व्यक्ति को भी चिट्ठी लिखी थी।

लेखिका : हाँ, वो भी था । मेरी माताजी ने मुझसे कहा। मैं अपनी माँ को माताजी ही कहती थी। ऐसे नहीं है कि यहाँ कह रही हूँ या किताब में लिख रही हूँ । खैर, माताजी ने मुझसे कहा लाली, लाली माने - जो गाँव में छोटी लड़कियों को बोला जाता है । वैसे बुण्डेलखण्ड में 'बिन्नू' भी बोला जाता है । "लाली वो तो दे ही नहीं रहा हमारे खेती का लगान" । पूरा साल उसने उससे कमाया है लेकिन अब वो लगान देता नहीं, तो मैंने उसको एक चिट्ठी लिखी - कि आज हमारे पिता होते तो आप ऐसा करते? ऐसे आपके सामने हम माँगते? मैंने लिखा कि आप हमारे पैसे को बड़े दबंगई और बेमानी ढंग से नहीं दे रहे हो तो फिर उसको मेरी कुछ बातें लग गईं ।बाद में जब पैसे लेकर माताजी के पास आया तो मेरी माताजी ने मुझसे पूछा कि -"लाली तूने ऐसा क्या लिख दिया? वो तो खुद ही आया पैसे लेकर |" जो लगान के पैसे नहीं दे रहा था, मेरे कहने और चिट्ठी लिखने से पैसा दे गया। तब मैंने सोचा कि मुझे आता है चिट्ठी लिखना । तो मैं यह कहना चाहती हूँ कि जो लेखक बनता है आगे चलकर, वो जो लिखता है उसमें दूसरों के लेखन से फर्क होता है । कोई व्यक्ति पूरा पैराग्राफ लिख दे और उसके लिखे पूरे पन्ने पढ़ लो तो भी कुछ असर नहीं आएगा और जिसमें लेखन करने की क्षमता है, उसके लेखन में ही असर आ जाता है । जैसे हमारे घर में लगान के पैसे आ गए थे । पर मुझे तो नहीं पता था कि मैं आगे चलकर लेखिका बनूँगी ।

शोधार्थी : आपने अपनी आत्मकथा में कहा है कि आप शादी करना चाहती थी तो आपकी माँ आपके लिए वर ढूँढ़ने लगीं । उस समय आपके मन में क्या विचार आ रहे थे? आप क्यों शादी करना चाहती थी ?

लेखिका : लड़कियाँ तो वैसे छुपाती भी हैं, चाहे उनका शादी करने का मन हो, वे कहेंगी कि - नहीं - नहीं शादी तो हमारे माँ - बाप ने कर दी थी । खैर, मेरी माताजी तो मेरी शादी के लिए मना ही कर रही थीं । वह कहती थीं - शादी नहीं करनी है, कभी नहीं करनी है शादी । पढ़ो, नौकरी करो, अपने पैरों पर खड़ी हो जाओ बस, मेरी माताजी यही कहती रहती थीं। तब मैं अपनी माँ की बातों को समझ नहीं पाती थी । मैं सोचती थी कि - अपनी पैरों पर अकेली खड़ी होकर क्या करूँगी मैं ? क्योंकि मेरे कोई भाई-बहन भी नहीं थे। घर में कोई नहीं था, मैं अकेली थी तो फिर मैं अकेली खड़ी हो जाऊँ, इसका क्या मतलब है? मैंने एक दिन अपनी माताजी को कह दिया कि - "माताजी मुझे तेरी बात बिल्कुल समझ में नहीं आई|" और फिर वे हमसे नाराज भी हुईं । मैंने एक दिन कहा कि -"माताजी मेरी शादी कर दो|" तो माताजी बोली - ये क्या कह रही है? मैंने कहा हाँ । फिर माताजी बोलीं - पागल है क्या ? किससे कर दूँ शादी? बता लड़का । मैं तो लड़कों के साथ ही पढ़ती थी, इसीलिए माताजी ने पूछा कि उनमें से तुम्हारी पसंद का हो तो बता दे ? मैंने कहा उनमें से ऐसा कोई नहीं है, जिससे मैं शादी कर लूँ । फिर माताजी कहने लगी कि -"वो जो चिट्ठी लिखता था तुझे वो पसंद है |" मैंने कहा - माताजी, चिट्ठी लिखने के लिए तो ठीक है लेकिन शादी करने के लिए ठीक नहीं है । क्योंकि सुनो - शादी एक जिम्मेदारी होती है ना । मैं उतनी छोटी उमर में ये बातें समझ गई थी ।

शोधार्थी : लेकिन क्यों करना चाहती थी उस समय आप शादी ? वही मैं जानना चाहती हूँ ।

लेखिका : सही प्रश्न किया तुमने । इसलिए कि मुझे पढ़ने के लिए लड़कियों का स्कूल तो मिला नहीं, हाँ दो साल तो मिला था बाकि नहीं मिला । जहाँ पढ़ती थी वहाँ इतनी छेड़छाड़ होती थी कि मैं तुम्हें क्या बताऊँ ? और लड़के छेड़ - छाड़ करे तो चलो चलता है कि लड़के कुछ कर रहे हैं, पर टीचर्स, प्रिंसिपल जब ये करें तो असहाय मेरी कोई सुनने वाला नहीं, पिता तो थे नहीं, कोई भाई भी नहीं था, कोई ताऊ, चाचा भी नहीं। अकेली माँ ही थीं, जो मेरी पास नहीं रहती थीं। मेरी माताजी नौकरी के चलते और

कहीं थीं, तो फिर लगा और मैंने बहुत सोचा भी । उस बखत मैं पढ़ रही थी - बी.ए फाइनल में । उस समय बहुत सोचा कि क्या किया जाए । कुछ माँए होती हैं जो अपने कैरियर पर ज्यादा ध्यान देती हैं और संतान पर कम। मेरी माँ भी वैसी ही थीं। ये तो नहीं कहूँगा कि मेरी माँ मेरा ध्यान बिल्कुल नहीं रखती थी, ध्यान तो रखती थीं, लेकिन कम। 'कस्तूरी कुण्डल बसै' में है ना, जो तुमने पढ़ा भी होगा। मेरे तो पिता भी नहीं थे, भाई भी नहीं, बहन भी नहीं, जिससे में अपने मन की बात बता सकूँ। माँ तो थीं लेकिन साथ नहीं रहती थीं, तो बस दिमाग में यही आया कि मेरी एक फ्रेंड थी जो बी.ए में मेरे साथ पढ़ती थी, फिर एम.ए में आ गई। मैंने उससे कहा कि -"यार मैं बहुत परेशान हूँ ।" तो मेरी फ्रेंड ने कहा - देखते हुए अच्छा नहीं लगता मुझे, तू अकेली परेशान क्यों होती है ? और कहने लगी कि - तू शादी क्यों नहीं कर लेती ? फिर मैंने कहा- किससे कर लूँ? उस समय मेरा यही मानना था कि इन लड़कों में जो मेरे साथ पढ़ते हैं, इतना योग्य मुझे कोई दिखता नहीं है । मेरे से तो सभी पीछे हैं । मैंने अपनी माताजी से कहा शादी के बारे में, तो माताजी बोली कि-"मैंने इसलिए पढ़ाया था तुम्हें कि तू इस तरह बात करें|" जबकि मेरी माँ सोचती थीं कि मैं 'सरोजनी नाइडु' बनूँगी, फिर मेरी माँ ने किसी से या अपनी सहेली से इस मामले में जिक्र किया होगा। फिर उन्होंने शायद कहा होगा कि - आपकी बेटी ने गलत नहीं कहा है। इसी के बाद मेरी माँ मन मार के निकली वर ढूंढ़ने के लिए। माताजी ने मुझसे कहा कि- "तू बता दे ऐसा योग्य वर, जिससे मैं तुम्हारी शादी करा सकूँ। खैर, बेचारी मेरे लिए वर ढूँढ़ने निकली । आत्मकथा में पढ़ा भी होगा तुमने - जन्मपत्री के बदले मार्कशीट लेकर जाती थी, मेरी माँ । फिर बाद में ये जो महाराजा हैं, वे मिल गए । माताजी दहेज देने के रिवाज को बिल्कुल ही नहीं मानती थीं और वे साफ - साफ यही कह देती थी कि - "दहेज - वहेज नहीं है मेरे पास, नहीं दूँगी मैं|" खैर शादी - वादी हो गई, जो तुमने किस्सा पढ़ लिया होगा । उसके बाद तो फिर.........|

शोधार्थी : जैसा कि आपने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जब आपकी तीन बेटियाँ हुईं तो गाँव वालों ने आपके पति पर दबाव डाला होगा कि वे दूसरी शादी कर ले। तो आपके पति ने उन लोगों को एक्स-वाई क्रोमोझोम के बारे में कहा। उस समय आपको क्या महसूस हुआ था?

लेखिका : मुझे क्या महसूस हुआ, मुझे अपने पति की योग्यता पर थोड़ा विश्वास हुआ और ज्यादात्तर इस बात को लेकर हुआ कि वह दकियानूस नहीं हैं, पढ़े - लिखे है ।

शोधार्थी : नहीं मेम, आजकल के पढ़े - लिखे लोग भी ये एक्स-वाई क्रोमोझोम के बारे में जानकर भी मानना नहीं चाहते हैं ।

लेखिका : जब एक्स-वाई क्रोमोझोम को समझ ले, तो लड़का या लड़की के जन्म होने में औरत की तो कोई भूमिका ही नहीं होती है। लिंग निर्धारण में सारी भूमिका पुरुष की ही होती है लेकिन फिर भी पुरुष इसको मानना नहीं चाहते है । तो हमारे गाँव में उनसे कहने लगे कि - “अरे, तुम दूसरी शादी कर लो, इससे तो तुम्हारे लड़का हुआ ही नहीं |” इस पर मेरे पतिदेव ने कहा कि -“तुम्हारे गाँव के लोग कितने पागल है |”

शोधार्थी : हाँ, ऐसा ही लग रहा है।

लेखिका : हाँ, उन्होंने तो यही कहा । खैर, मेरी तीन लड़कियाँ हो गईं। लड़का नहीं हुआ तो क्या कर सकते है अब? तब तो लोगों ने बहुत लानत दी। मुझे भी बहुत रुलाया । मैं पढ़ी - लिखी थी, सब कुछ समझने के बाद भी मैं कुछ नहीं कर पा रही थी। हमारे यहाँ कोई लड़का नहीं था लेकिन फिर भी मेरी माँ ने मुझे लड़के की तरह पढ़ाया। ऐसा व्यवहार किया कि कभी लड़की होने का एहसास ही नहीं हुआ। ऐसा होता है ना...हमारे समाज में । जब मैंने शादी के लिए कहा तो भई यहाँ तो बड़ा चक्कर पड़ गया। लेकिन एक और बात बताऊँगी - मेरे ससुराल वालों में ससूर थे, सास तो नहीं थीं, होती तो शायद वह कहतीं । जेठानी ने भी नहीं कहा। आपस में कानाफूसी हुई हो तो पता नहीं, पर मुझसे तो नहीं कहा । मैं रोने लगती थी । मेरे पतिदेव ने मुझे हमेशा समझाया कि तुम भी तो लड़की हो अपनी माँ की, फिर भी तुम पढ़-लिखकर आई हो । फिर मैंने कहा - मैंने किया क्या है? बच्चे ही पैदा किया है । पढ़कर तो आई हूँ लेकिन कुछ किया ही नहीं। तब तक में मन से बहुत विचलित हो गई थी । अभी तक ऐसा इंटरव्यू नहीं दिया है, जो मैं तुम्हें अभी कह रही हूँ - मैंने बहुत मेहनत की थी पढ़ाई में पर मैं कुछ कर नहीं पायी थी । बस मैं घर - गृहस्थी कर रही थी । मेरे पति बहुत ही योग्य थे, मगर कराया मुझसे यही। बस ऐसे ही करके पच्चीस साल गुजर गए और उसी बीच में मेरी तीन बेटियाँ हुई । बड़ी बेटी की शादी हुई तब मैंने लिखने के बारे में कुछ नहीं सोचा। दिमाग में कुछ नहीं आया, बस बेटी की देखभाल करने में लगी रही । एक औरत के लिए जो गृहस्थी होती है ना...उसमें सब पढ़ाई - लिखाई भूल जाते है, उसी

तरह मैं भी भूल गई थी। जब शादी करके आई थी तो किताबें भी साथ लेकर आई थी ।

शोधार्थी : आपकी माँ ने शादी के समय ये कहा था कि शादी के बाद भी तुम वहाँ अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना ।

लेखिका : हाँ.. माँ ने कहा था कि तुम पढ़ना वहाँ। नहीं तो तुम वहाँ खाना ही बनाती रह जाओगी। माँ का कहा सच होने लगा था। मैं सबको खुश करती रही । उसके बाद तो ठीक है जो घरवालों को खुश रख रही थी । पति भी चाहेंगे कि तू कुछ करे और रोशिनी.... जब हम जैसे बक्सा खोलते है ना । हमारे पास उस समय अल्मारी वगैरा तो होती नहीं थी तो उसमें मैं साड़ी वाड़ी के नीचे दबाकर अपनी मार्कशीट रखती थी और जब मैं उनको देखती थी तो उदास हो जाती थी । मुझे कहीं जाना भी नहीं है इन साड़ियों को पहन कर । अब मुझे बड़ा दुख हुआ, मैंने इतनी मेहनत की थी, अकेले रहकर पढ़ना, जिसके पास न घर है न खाने का कोई इंतजाम है । माँ बहुत दूर थी और कोई देखभाल करने वाला नहीं था । किराए पर एक कमरा लेकर रहती थी । वहाँ से तरह-तरह के लोग निकलते थे, शाराबी भी निकलते थे बल्कि सामने तो एक शाराबी ही रहता था। दिन - रात पीता था । रात को शोर मच जाता था - मेरा कमरा भी उसी के पास था । ऐसे में...मैं रही थी । पर अब मैं यहाँ सोचने लगी थी, कि मैंने क्या किया ? मैंने इतनी मेहनत क्यों की थी ? ऐसा तो नहीं सोचा था कि, यही होगा इस बार लेकिन हो जाता है । लड़कियाँ जब शादी के भँवर-जाल में फँस जाती है तो वो बहुत जिद करे तभी कुछ होगा.... नहीं तो एक बार आप ने गृहस्थी शुरू कर दी तो आप उसमें फँस जाती हो । मुझसे गलती हुई.... मैं बहुत अच्छी बहू बन गई ।

शोधार्थी : आप घर के लिए तो बहुत अच्छी बहू बन गई ।

लेखिका : हाँ, मैं बहुत अच्छी बहू बन गई थी । मुझे देखकर सब लोग कहने लगे कि कितनी अच्छी है, पढ़ी - लिखी है, घुँघट भी कर लेती है । मैं सबकी देखभाल करने में लगी रहती थी लेकिन एक दिन चेतना जाग उठी । मैं मन ही मन यह सोचने लग गई थी कि - अरे मैंने अपनी जिंदगी बेकार कर दिया है? तब 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' के अंक आते थे ना - वो मैं पढ़ने लगी । उसे पढ़कर और उसमें जो कहानियाँ छपती थीं, उसे पढ़कर मुझे विचार आया कि... नहीं मुझे भी लिखना चाहिए । जब मैं कॉलेज में पढ़ रही थी तब आलेख लिख लेती थी फिर उसके बाद सब कुछ भूल गई और फिर

बाद में मैंने लिखने की कोशिश की । कहानी लिखी.... ऐसा नहीं की जो गुजरती है जिंदगी में... उसी को लिख दिया हो। कहानी लिखकर भेज दी, जैसी भी थी वो नहीं छप्पी, लौट आई । कोई बात नहीं फिर मैंने उसी कहानी को सुधारकर या दूसरी कहानी लिखकर उस सम्पादक के पास गई । मेरा परिचय हुआ और मैंने कहा कि अभी तक तो मैंने कुछ नहीं लिखा, मुझे पढ़ाई छोड़े पच्चीस साल हो गए है । अब मैंने ये लिखा है ।उसे ठीक लगा तो कहानी छप गई ।

शोधार्थी : उसके बाद आपका लेखन और प्रकाशन शुरू हुआ ?

लेखिका : जब एक बार छप जाता है, तो आपका नाम मेगजीन में आ जाता है । अगर आपकी कहानी एक बार छप जाती है तो फिर से एक नई कहानी लिखने का मन होता है और उसे कहीं पत्रिका में भेजने के लिए कोशिश करते है। उस समय 'धर्मयुग' पत्रिका थी, मैंने वहाँ भेजी ।

शोधार्थी : जैसे कि मेम अभी की जो स्थिति है आपके लेखन कार्य की... आप बहुत लिख चुकी हैं और उस समय जो आपने कहानी पहली बार लिखी थी, जो नहीं छपी थी । उस समय की स्थिति में आपने जो भी महसूस किया हो और अभी की जो स्थिति है, जो आप अभी महसूस कर रही है । उसमें बहुत अंतर तो होंगा ।

लेखिका : अंतर तो था । क्या अंतर था? यह मैं बताती हूँ । जब शुरू - शुरू में... मैं लिख रही थी तब मुझे खुद भी कहानी लिखना ठीक से नहीं आता था । उसके लिए बहुत पढ़ना पड़ता था और मैं कविताएँ पढ़ती थी और लिखती थी । कहानी कैसे हो सकती है ? तो फिर मुझसे एक सज्जन ने कहा । उन्होंने कहा कि कहानी पढ़िए तो आपको आएगा कहानी लिखना । मैंने उनकी बात मान ली तो फिर मैं कहानी लिखने लगी ।दूसरी महिला लेखिकाएँ जहाँ शहर की स्त्रियों के बारे में लिखती है और मैं लिखती थी गाँव की स्त्रियों के बारे में । मेरे गाँव की स्त्री क्या कर रही हैं ? इसको पहले ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पा रही थी तो फिर उनको लगा कि ये क्या लिख रही है ? फिर मेरी अगली कहानी 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में छप गई । उन्होंने छाप दी मैंने उनकी बड़ी कृपा मान ली लेकिन उन्होंने उस कहानी को ठीक से पढ़ा भी नहीं होगा । वह ऐसे ही छप गई... ठीक है, उसके पीछे यह भी था कि मेरे पतिदेव एम्स से संबंधित थे । उनका भी तो प्रभाव था ।

शोधार्थी : आप साफ - साफ बोल देती है । मन में कुछ नहीं रखती हैं ।

लेखिका : वो भी तो मदद करते होंगे ना... कि जो मुझसे पूछते थे कि मेरे पतिदेव क्या करते है ? मैं कहती-वे एम्स में काम करते है । वो खुश हो जाते थे, बहुत अच्छा एम्स में कार्यरत है । मैं भी समझ लेती थी, हाँ..ये ठीक है काम बन सकता है । तब तक मेरी बड़ी लड़की की शादी हो गई थी । तो मैं उनसे बताती थी- मेरी बड़ी बेटी की शादी हो चुकी है क्योंकि संपादकों की निगाह बड़ी खराब होती है । मैं जल्दी से बताती थी कि मेरी लड़की की शादी हो गई है मतलब मैं इतनी उमर की हो गई हूँ । लेकिन वो इसका विश्वास नहीं करते थे तो मुझसे पूछते थे कि लड़की क्या कर रही है ? मैं बताती थी कि वो भी डॉक्टर है । फिर वे पूछने लगते - उसके पति क्या करते है ? फिर मैं बताती कि वे भी डॉक्टर है। वे लोग बड़े प्रभावित हो जाते थे। कहते कि -अरे ! सब डॉक्टर है, घर में कोई बात हो तो आपसे सलाह ले सकते है । तो इस तरह कहानी भी छप गई मेरी । मैं सही बोलूँ तो ये भी मददगार साबित हुआ, जो मेरे घर में डॉक्टरी पेशा था । ठीक है, फिर छपने लगी । जो मैं लिखती थी, वह गाँव का लिखती थी । वो थोड़ा अलग था जो दूसरा माहौल भी आया मेरी कहानियों में । तो ये भी कुछ लोगों ने, एकाध ने ये भी देखा तो छापी फिर वो धारा चल निकली ।लोगों से तारिफ भी आने लगी लेकिन घर में तो कुटाई हो गई थी । घर में पति नहीं चाहते थे, कि मैं लिखूँ । बहुत नाराज रहते थे उन दिनों वे मुझसे ।

शोधार्थी : आपने एक बार इंटरव्यू के लिए form fill up किया था, सर ने आपको न बताकर उसे छुपा लिया था?

लेखिका : इंटरव्यू के लिए आया पत्र पतिदेव ने छुपा लिया था । मुझे मेरी सहेली मारियम ने जब बताया कि आपका इंटरव्यू लिस्ट में नाम था, आप नहीं आई। मैंने जब पतिदेव से पूछा तो उन्होंने बहाना बनाते हुए कहा कि “अरे यार वो मैंने कहीं रख दिया था और तुम्हें बताना भुल गया।” मैं बहुत रोई उस दिन कि मेरा पति मेरा शत्रु है कि मुझे नौकरी नहीं करने दी । पति लोग बहुत शत्रु होते है । तुम जबरदस्ती करो कि हमें यही करना है, तो मान जाएँगे। उन्हें लगता होगा, ठीक है जो नहीं मान रही है, तो हाँ करना पड़ेगा ना, वैसे तो घर में ही रही ।

शोधार्थी : ये बात मैं उनको सुनाऊँगी, अपने पतिदेव को ।

लेखिका : जब मैं घर में रहती हूँ तो उन्हें अच्छी लगती हूँ । बाहर रहो और वह भी पुरुष के साथ, लड़कों के साथ, तो चाहे तुम कुछ नहीं कर रहे हो, बड़ी अच्छी तरह तुम

अपने चरित्र को रख रही हो लेकिन वो शक तो करेंगे ही । वे सोचेंगे कि - पता नहीं कौन क्या कह रहा होगा? क्या छेड़छाड़ कर रहा होगा? वो ऐसे संरक्षक बन जाते है कि मानो माँ - बाप से ज्यादा पतिदेव को उसकी चिंता है । कहाँ गई? कब आई ? फिर पूछो मत एक तो लिखूँ और वहाँ संपादक लोग रुतबा देते है कि घर में आप अलग तरीके से रहती है । इतनी मुश्किलें झेली कि मैं क्या बताऊँ ? फिर भी मुझे लिखने का जुनून शुरू से ही था, चिटिठयाँ लिख देती थी शुरू से तो मैंने छोड़ा नहीं । घर का माहौल इस तरह था । यह उनकी गलती नहीं है, उन्होंने मुझे कुछ करते नहीं देखा था। कपड़े धो रही हूँ । बच्चे पाल रही हूँ, बच्चे पैदा कर रही हूँ । वो सब भूल गई जो मैंने उन्हें चिटिठयाँ लिखी थी । पर मैं पागल थी । मैं तो साहित्य से जुड़ी थी और वो तो चित्किसा से जुड़े हुए है। वो मेरी चिटिठयों में लिखा क्या समझेगे? और मैं उनके लिए उसको कविता लिख रही हूँ, उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा तो मैंने कहा, “हाँ, मेरी चिट्ठी नहीं पढ़ते थे तुम? तभी समझ लेना था, मैं कैसे हूँ?” पतिदेव ने कहा, “अरे यार, मेरी कौन सी समझ में आती थी। चलो ठीक है, बीवी की चिट्ठी आती है, तो चिट्ठी है बस कुछ नहीं है। उसमें समझने के लिए क्या है? प्यार- व्यार के बारे में लिखा होता तो समझ में आ जाता।” वो सारी चिटिठयाँ मेरे पास रखी हुई हैं, उनको लेके में एक किताब लिखूँगी ।

शोधार्थी : आपके उपन्यासों में 'बछिया' की जो एक परम्परा है, उसका बहुत बार जिक्र किया गया है । जैसे कि शादी होने के बाद, देवर के साथ फिर से शादी करवा दिया जाता है । इस तरह की कुछ परम्परा का बहुत जिक्र आपने किया है। इसके बारें में आपका क्या ख्याल है ?

लेखिका : हाँ..हाँ...देखो - इसमें दो तीन चीजें जो भी हुई होती है। जैसे जिस औरत का आदमी मर गया। वह विधवा हो गई। एक तो अगर उसमें जमीन जायदाद उसके पति के नाम थी तो उस औरत के नाम चली जायेंगी । डर लगता है नहीं औरत इसको लेकर अपने मायके चली जाएँगी। कहीं चली गई तो वो घर गया और जमीन गई औरत के घर। फिर ये औरत पति तो है नहीं, किसी और पुरुष से संबंध बना लेगी तो जमीन जायदाद उस पुरुष की हो जाएँगी। यही डर उसी परम्परा के बीच में रहता है। फिर कई तरह की बातें होती हैं । तीसरी यह कि हमारे परिवार में हर हाल में बदनाम होना था और परिवार की बदनामी कोई नहीं चाहता । उसे तो तलवार की नोक में आदमी

बचाता है कि हमारी तो ये सब बातें है । खास तौर पर सम्पत्ति की बात आती है चाहे घर - जमीन हो, चाहे मकान हो, चाहे जमीन हो जायदाद हो, पति मर जाए तो उस औरत का हक बनता है । पहले नहीं बनता था लेकिन अब बनने लगा है । इन्हीं कारणों से डर लगता है । जैसे 'चाक' उपन्यास रेशम से उसकी सास कहती है कि उसके देवर से बछिया कर ले ।

शोधार्थी : हाँ 'चाक' में भी रेशम को ऐसा ही कहा गया था ।

लेखिका : 'चाक' में तो ये सारी कोशिश है कि ये जो रेशम है, उसके पेट में जो विधवा होने के उपरांत बच्चा आया है उसे या तो खत्म किया जाए या फिर वे अपने जेठ के साथ बछिया कर ले । जिसको उसने नहीं माना । उसे बिठा देना कहते है जो दूसरी शादी कर लेते है । उसके साथ बिठा देंगे । तो कहाँ मतलब वो फेंके देती है कटोरे - वटोरे को कि मैं अपने बच्चे को नहीं गिराऊँगी । ये कहने की हिम्मत औरत में अभी गाँवों में नहीं है ।

शोधार्थी : अभी भी नहीं? बच्चे के लिए तो रेशम लड़ी थी । उसे दूसरा आदमी, जो ज्यादातर पति का भाई होता है, उसे पकड़ा देते हैं ? आपके ख्याल से ऐसी परम्परा खत्म होनी चाहिए कि जारी रखनी चाहिए ?

लेखिका : नहीं... खत्म होनी चाहिए । मैंने तो इसमें यही कहा है कि सास से भी रेशम यही कह रही है कि तू अपने मरे हुए लड़के के लिए रो रही है लेकिन मेरे बेटे को और जो मेरे पेट में है उसे खत्म करवा रही है? तो रेशम की सास फेंक देती है ना... कटोरा को तो यही से रेशम खत्म होती है । एक बात बताऊँ - औरत ही तो खत्म करेगी औरत को । कोई पुरुष या जो पुरुषों की जमात है वो तो नहीं करेगा । वह तो चाहेगा कि स्त्री हमारे घर में ही रहे । और हमारे ही भाई का बच्चा पैदा करे तब हम इसको बाँटेंगे.... नहीं तो हिस्सा नहीं देंगे । अकेली स्त्री को नहीं देना चाहते जब कि अब तो कानून भी आ गया है, ये जो मर गया है उसकी विधवा को ही मिले, लेकिन देना नहीं चाहते। सौ बहाने बनाते है ।इसलिए उस रेशम के साथ भी वो कर रहे थे लेकिन वो मानी ही नहीं फिर उसे मार दिया ना । तो कितनी बहूएँ ऐसे ही मरतीं हैं और कोई भी बहाना होता है उसका तो करने के लिए होता है । कोई बहाना करेगा कि नहीं पानी खीचने गई थी कुँए में डूब गई थी । नदी में कपड़े धोने गई थी बह गई - ये होते हैं बहाने । वहीं बह जाती है, जिसका पति मर गया है ? क्यों नहीं बह जाती हैं, जिनके

पति जिंदा है? ये प्रश्न तो उठता है, जिनके पति जिंदा है समाज की परम्परा में शामिल कर लिए गए हैं, लेकिन जिसका पति मर गया है, उसका एक मनुष्य की तरह रहने का अधिकार छीन लिया जाता है ।

शोधार्थी : जैसा कि मेम आप नहीं चाहतीं कि इस तरह हो । ऐसी कई औरतें होंगी बुण्डेखण्ड में भी जो नहीं चाहती कि ऐसी परंपरा चलती रहे।

लेखिका : हाँ.. हाँ...हाँ.. लेकिन समाज है, जात - विरादरी है, इतने दबाव होते है । रिश्तेदारियाँ भी , नाते रिश्तेदार है । एक किताब है मेरी शायद 'बेतवा बहती रही' होगी । उसमें तो वो बिल्कुल भी नहीं चाह रही थी लेकिन जबरदस्ती भाई ने सबसे दबाव डलवाया उर्वशी पर । उसकी सहेली के पिताजी के साथ (मीरा के) ये नहीं देखते है कि उसकी उम्र क्या है ? आदमी की उम्र क्या है ? इसकी दो बीबियाँ मर गई है । अब हम अपनी लड़की को क्यों ब्याह रही है ? बस लड़की का भेजा उतारना होता है । मतलब स्त्री की कोई वकत नहीं है । जमीन जायदाद उसके लिए पुरुष ही है, तभी तो बेटा पैदा करने का दबाव रहता है । लड़की होगी तो शादी करके चली जायेगी । एक तो ये चली जाने का रिवाज किसने बनाया है? कि लड़की शादी करके चली जायेगी । तुम्हारे यहाँ ऐसा कुछ नहीं है ना, ये रिवाज ही गलत है । तुम ये Note कर लो कि ये रिवाजें ही गलत बनाया गया है । मैं इस रिवाज के बिल्कुल भी पक्ष में नहीं हूँ । मैं इससे बहुत असहमत हूँ । जैसे कि मैं इस रिवाज से नाराज रहती हूँ, खिलाफ रहती हूँ। ये रिवाजें सभी गलत है। सारी रिवाजें आदमी के पक्ष को लेके बनाई गई है औरत के लिए तो कुछ भी ख्याल नहीं रखा गया है ।

शोधार्थी : मेम जैसा कि जो स्त्रियाँ शिक्षा से वंचित रह जाती हैं तो रीति रिवाज के मामले में हो या घर बसाने के मामले में हो या कुछ भी, वो कुछ नहीं समझती हैं इस बात को तो बछिया की तरह ये रिवाज जो आज भी जारी है । इन रिवाजों को आप मानती है या नहीं ।

लेखिका : हाँ... और शिक्षा से वंचित नहीं, शिक्षित स्त्रियाँ भी कही न कही, इनका पालन करती है । कहो कि जागरुकता की कमी है, चेतना से वंचित है । मान लो थोड़ा बहुत शिक्षित भी हो, जिसे हम लिखना पढ़ना कहते है पर चेतना नहीं है उनमें, चेतना नहीं है तो पुरानी या आधुनिक की बात नहीं है। लड़की अगर विधवा हो या छोड़ दी हो तो ऐसा ही होता है। एक बात बताऊँ 'परित्यक्ता' कहते है, जिसको छोड़ दिया जाता

है । आदमी को क्या कहते है ? उसका नाम प्रतीकत्व तो नहीं है ना । परित्यक्ता तो औरत का नाम है । समाज में विधवा तो है, विधुर कितना कहा जाता है, वो तो व्यवहार में है ही नहीं।

शोधार्थी : यही हमारे मणिपुर में भी है। हालांकि स्त्री-पुरुष में ऐसा भेद नहीं है पर 'लुखाबी' शब्द तो प्रचलन में है पर पखा का प्रयोग कभी नहीं किया जाता। बचपन से हमने कभी पखा शब्द का प्रयोग करते हुए नहीं सुना । बड़ी होकर मम्मी से पूछा, तो उन्होंने पखा बताया । मैंने कहा पखा शब्द का तो उतना इस्तमाल नहीं किया जाता है ।

लेखिका : उसी तरह हिंदी में विधुर शब्द का इस्तमाल कम होता है । हमारे यहाँ भाषा में जिस स्त्री के पति मर गए है, उस स्त्री को राँर कहते है । जिसकी पत्नी मर गई हो उसको रंडुवा क्यों नहीं कहते है? मेरा कहने का मतलब यह है कि रंडुवा शब्द को पुरूष के लिए इस्तमाल क्यों नहीं होता है? औरत के लिए बड़ी जल्दी प्रयोग कर देते है । सारी गालियाँ, तुम गालियाँ कोई भी सुन लो औरत को संबोधित करके प्रयोग होती है। जिनमें से अधिकांश औरत के गुप्तअंगों को निशाना बनाकर बोली जाती है । अगर पुरुष इनको बोलने में शामिल हो तो यह कितनी विभेदकारी परम्परा है ।

शोधार्थी : बुण्डेलखण्ड की नारी और शाहर की नारी .. आज तक आपने बहुत अनुभव किए होंगे । उन दोनों में अंतर बहुत होंगे । आपका क्या ख्याल है ?

लेखिका : हाँ... अंतर है । रिवाजों में रीति - रिवाजों में वहाँ ज्यादा लागू हो जाती है । यहाँ नहीं हो पाती । यहाँ बड़े फक्र से दूसरी शादी भी कर लेती है । वहाँ इतनी नहीं होती लेकिन एक बात बताऊँ - मैं गाँव की स्त्री को ज्यादा महत्व देती हूँ वजाय शहर की स्त्रियों की तुलना में । मान लिया शहर की स्त्री पढ़ी - लिखी है लेकिन चेतना भी है चलो, लेकिन साहस नहीं है शहर की स्त्री का साहस उतना नहीं है जितना गाँव की स्त्री का है । वे कह देगी कि पंचायत में कि नहीं इसने ऐसे किया था, वैसे किया था । शहर की तो दब - दब के रहती है । कुछ भी बोलती नहीं है । कोर्ट कचहरी में जाकर भले ही बोले । गाँव की औरत तो गाँव के लोगों के सामने बोल देती है कि हाँ इसने ऐसा किया मेरे साथ, मैं नहीं रहती इसके साथ तो पढ़ी - लिखी ये जरूर ज्यादा होती है पर बिल्कुल नहीं होती है । गाँव वाली स्त्री तो साहसी ही होती है क्यों कि वो श्रमशील है । जो आदमी मेहनत करता है उसमें साहस और हिम्मत आ जाती हैं । जो आराम

से रह रहे है, आराम में कहाँ साहस आ पाएगा, कहने की हिम्मत कहाँ से आएँगी? अभी हम ए.सी में बैठे है । अभी मैं गाँव में होती तो हाथ से पंखा चला रही होती । फर्क ये है कि जो चीजें हमें शहर में बड़े आराम से मिल जाती हैं, वो कमाते भी नहीं है इसलिए उन्हें कहना भी आ जाता है, बोलना भी आ जाता है। गाँव की औरत आदमी को सरे आम गाली बोल जाती है। लेकिन शहर में ये नहीं चलता। यहाँ तो सभ्यता ही मारे डालती है कि हमें कोई असभ्य कहेगा तो ये शराफत सभ्यता - ये सब जो चोले ओढ़े हुए है यहाँ की स्त्री ने वहाँ की तो नहीं। लेकिन गाँव की स्त्री घुँघट भी मार देगी तो चार गालियाँ दे ही देगी।

शोधार्थी : यहतो मानना पड़ेगा कि गाँव की स्त्रियों को ज्यादा हिम्मत की जरूरत है और उनमें होती भी है।

लेखिका : ये है। ये फर्क है। गाँव की स्त्रियाँ बहुत साफ बोल देती हैं और साहसिक भी होती है। मुझे शहर में रहते हुए बहुत साल हो गए और इस तरह शहर में यहाँ की स्त्रियों के बारे में जानने लगी कि यहाँ की औरतें बातें तो बहुत बना लेती हैं लेकिन खुलेआम कुछ नहीं कर पाती हैं। इसको दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यहाँ की औरतें महा डरपोक हैं। गाँव में मेरा जन्म हुआ है। मैं वहाँ रहकर बड़ी हुई हूँ इसीलिए मुझे गाँव की औरतों के बारे में जानकारी है कि वो कैसी हैं? वे किस तरह का व्यवहार करती हैं? अभी मैं तुम्हें एक बात कहती हूँ मैंने एक उपन्यास लिखा है जिसका नाम 'विजन' है, जो शहर के लोगों के जीवन पर आधारित है और मैंने उसमें विशेषकर डॉक्टरी पैशे से संबंधित जितनी भी समस्याएँ हैं उसको उठाया है। अभी मैं तुम्हें कृष्णा सोबती जी का उदाहरण देती हूँ उनके उपन्यास 'मित्रो मरजानी' है ना, जो तुमने भी पढ़ा होगा या न पढ़ा हो तो मैं बता देती हूँ। मित्रो मरजानी का पति नपुंसक है। अच्छा वो कितना हल्ला मचाती है ये हो गया, वो हो गया। मैं ये नहीं कहूँगी कि ज्यों है त्यों है। उपन्यास में वो कहती तो बहुत है करती कुछ नहीं है फिर वहीं के वहीं रह जाती है। वे अपने को मायके चली जाने के लिए कहती है - ये सब कहने के बाद वहीं लौट आती है। तो मेरा कहने का मतलब यह है कि उसकी नायिका यू टर्न क्यों लेती है? उसकी नायिका ने ठान लिया था कि वो चली जाएँगी और अब लौट कर नहीं आएगी, लेकिन बाद में वापस लौट आती है। इस घटना के बारे में मैंने लिखकर दिया और लोगों ने मुझ पर सवाल उठाया कि अरे आपने उसके लेखन के ऊपर कैसे सवाल उठाया? मैंने

उनसे सवाल उठाया कि आपकी नायिका खाली बोलती है और कुछ करती नहीं है। पर मैं ऐसा नहीं करती जो खाली भाषण देकर रह जाती है। तो ये है ग्रामीण और शहरी महिलाओं का फर्क। वे ये सिर्फ कहती है हम करती हैं।

शोधार्थी : कुछ कहने के बाद उसे करने का साहस भी चाहिए।

लेखिका : हाँ, करने का साहस तो चाहिए ना, कहने को तो हम कुछ भी कह सकते है। ग्रामीण क्षेत्र की स्त्रियों ने पंचायत में कुछ किया हो या कहीं भी कुछ किया हो तो करके दिखाती हैं। कहना तो बहुत आसान है, करके तो दिखाओ। जीभ हिलाने में क्या जाता है? शहर की जो लेखिकाएँ है, जीभ हिलाती है कलम से लिख देती है करना कुछ नहीं है ।

शोधार्थी : 'कहीं ईसुरी फाग' उपन्यास के बारे में बताइए, इसे लिखने का विचार आपको कैसे आया?

लेखिका : पहले मुझे इस उपन्यास को लिखने का विचार नहीं आया था पर बाद में बहुत दिनों के बाद लिखने का मन हुआ। यह इसीलिए हुआ क्योंकि हमारे यहाँ स्त्री से हमेशा दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता है और मैं अभी भी बता रही हूँ तुम्हें। 'कहीं इसुरी फाग' उपन्यास के जो ईसूरी थे वो बुण्डेलखण्ड के बहुत बड़े कवि थे। वे फागें लोगों की मनोरंजन के लिए सुनाया जाता है। ईसुरी तो अब नहीं रहे लेकिन उनके फागों को आज तक गाई जाती है। वो तो बस इसको कहानी के रूप में आजतक नहीं लिख गया है पर इसमें शोध तो काफी हो चुका है। जब मैंने शोध कार्यों को देखा पढ़ा तो मुझे लगा ईसुरी की तो बड़ा बखान हो रहा है कि उन्होंने यूँ किया, ये किया इत्यादि लेकिन इसूरी जिस स्त्री को आधार बनाकर लिख रही है, वो स्त्री रजऊ है। रजऊ के लिए वह कहते है "किती बेरा भर लाओ पानी रजऊ। कब तुमने पानी भर लाई" ।मेरा कहने का मतलब यह है कि रजऊ न आज दिखाई देती है न उसके बारे में कही कुछ कहा जाता है। ईसुरी तो रजऊ के आशिक हो गए थे, उसके प्रेम में दिवाना सा हो गए थे और इसी प्रेम को आधार बनाकर उन्होंने बहुत सारे फागों को गाया है । इसमें मेरा सवाल यही था कि रजऊ क्या कर रही है? क्या सोच रही है? किसी ने आजतक कुछ नहीं सोचा और आजतक किसी ने रजऊ के जीवन के बारे में कुछ नहीं सोचा कि रजऊ क्या कर रही है? क्या सोच रही है? किसी ने आजतक कुछ नहीं सोचा। रजऊ एक साधारण स्त्री है या मिट्टी की गुड़िया है। वह कौन है ? क्या करती है? जिंदगी में

उसका क्या वजूद है? इन्हीं प्रश्नों ने मुझे रजऊ के बारे में लिखने के लिए चेतना जगाई और फिर मैंने एक उपन्यास लिखने के लिए निर्णय लिया और रजऊ को एक स्त्री का दर्जा दिया, उसके मुँह में जुबान डाली और रजऊ को जीवित किया।

शोधार्थी : उसमें एक रिसर्च स्कोलर भी है मेम ।

लेखिका : हाँ... वह रिसर्च स्कोलर मैंने बनाया है और उसी के आधार पर उपन्यास की रचना की गई है। आजकल के शोध छात्राएँ अपने शोध कार्यों को करते समय वही कहती तथा लिखती है, जो पहले से लिखी आ रही है। उसमें उतना खोज नहीं करती है । मेरा कहने का मतलब यह है कि शोधार्थी जो भी खोज करती है, उसमें ईसुरी के बारे में उसके फागों से संबंधित जितने भी चीजें है, उसको सामने लाते है लेकिन उनके फागों में वर्णित रजऊ के बारे में आज तक किसी ने सोच - विचार कर शोध नहीं लिखा है। इसलिए मैंने 'कहीं ईसुरी फाग'उ पन्यास में ऋतु नामक एक पात्र को रखा है। जिसके माध्यम से मैंने यह प्रश्न करवाया है कि ये रजऊ कौन है? उसने क्या किया है ? इत्यादि। और ईसुरी की जो फागें थी, उन्हीं से सारा कुछ निकालकर मैंने रजऊ को जाना समझा और उसी के बारे में लिखना शुरू किया। हाँ, रजऊ ऐसी थी, खाली पानी ही नहीं भरती थी। "किती बेरा भर लाओ पानी कब लोग बैठे...."। ईसुरी है कि वे अपनी व्यथा सुना रहे है कि रजऊ कब से कुँए पर बैठी हो, तुम दिखी ही नहीं। मेरा कहने का मतलब यह है कि जो दिखी ही नहीं वो क्या कर रही है उसकी भी तो बात करो। मैंने इस उपन्यास को इसलिए लिखा है कि ईसुरी का वर्णन करते समय एक स्त्री की जो जगह मिलनी चाहिए वह वाकई ही मिलनी चाहिए। उस समय स्त्री का वर्णन केवल अश्लीलता के लिए प्रयोग किया जाता था। मैं यह कहना चाहती हूँ कि स्त्रियों को खाली अश्लीलता के लिए प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। उसके द्‌वारा समाज के प्रति कितना काम है। इस पर भी तो ध्यान केंद्रित होना चाहिए।

शेष अगले अंक में।